जुलाई 2024 ■ वर्ष : 69 ■ अंक : 10 ■ पृष्ठ : 60 ■ मूल्य : ₹ 60

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

# अणुव्रत

## अणुव्रत

सर्वधर्म सद्भाव का मंच

अणुविभा

नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता
को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान

ANUVRAT
CREATIVITY
CONTEST 2024

# अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट - 2024

मुख्य विषय

## व्यक्तित्व निर्माण से राष्ट्र निर्माण

प्रतियोगिताएं

| | | | |
|---|---|---|---|
| चित्रकला | गायन (एकल) | भाषण | राष्ट्रीय विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार |
| निबंध | गायन (समूह) | कविता | |

**स्तर-1** : कक्षा 5-8 ■ **स्तर-2** : कक्षा 9-12

सहभागिता

**18+** राज्य **200+** शहर/कस्बे **1+** लाख बच्चे

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

https://anuvibha.org/acc acc@anuvibha.org

+91-91166-34514 +91-91166-34517

आयोजक

**अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी**

■ ■ ■

श्रमण-संस्कृति में पद-यात्रा को भारी महत्व दिया गया है। इससे गरीबों की झोपड़ी में भी सरस्वती के पद-चिह्न अंकित होते हैं। आद्य शंकराचार्य ने कन्याकुमारी से हिमालय तक पद-विहार करके भारत के लोक-जीवन में ज्ञान का आलोक जगाया। आचार्य तुलसी ने अल्पकाल में ही सम्पूर्ण भारत की पदयात्रा कर अध्यात्म से प्रेरित लोक-कल्याणकारी भावनाओं का संकलन किया है और भारतीय जीवन में नैतिक शक्ति का संचार किया है।

**-आचार्य विद्यानन्द**

■ ■ ■

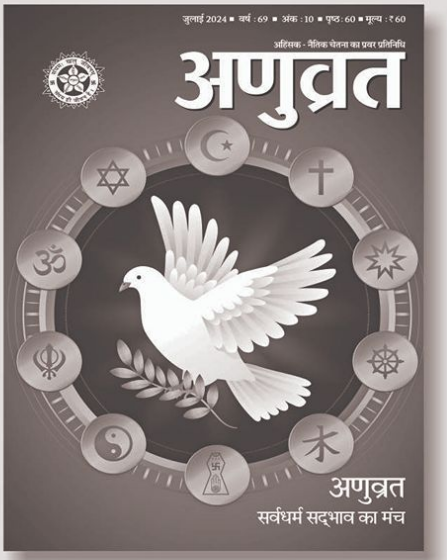



वर्ष 69 ● अंक 10 ● कुल पृष्ठ 60 ● जुलाई, 2024

**सम्पादक**
**संचय जैन**

**सह-सम्पादक**
**मोहन मंगलम**

■ ■ ■

टाइपसेटिंग व लेआउट
**मनीष सोनी**

क्रिएटिव्स
**आशुतोष रॉय**

चित्रांकन
**मनोज त्रिवेदी**



**अविनाश नाहर** अध्यक्ष
**भीखम सुराणा** महामंत्री
**राकेश बरड़िया** कोषाध्यक्ष
**सुरेन्द्र नाहटा** संयोजक, पत्रिका प्रसार



:: सदस्यता शुल्क विवरण::

| | | |
|---|---|---|
| एक अंक | - | ₹ 60 |
| एक वर्षीय | - | ₹ 750 |
| त्रैवर्षीय | - | ₹ 1800 |
| पंचवर्षीय | - | ₹ 3000 |
| दसवर्षीय | - | ₹ 6000 |
| योगक्षेमी (15 yrs.) | - | ₹ 15000 |

:: बैंक विवरण ::

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
केनरा बैंक
A/c No. **0158101120312**
IFSC : CNRB0000158

:: ऑनलाइन भुगतान के लिए ::

इस क्यूआर कोड को स्कैन करें

अणुविभा

**अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी**
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-110002
anuvrat.patrika@anuvibha.org
www.anuvibha.org
दूरभाष : 011-23233345, मोबाइल : 9116634512

# अनुक्रमणिका

## प्रेरणा पाथेय


- संस्कार : विकास और परिमार्जन — 06
  आचार्य तुलसी
- व्यवस्था-सुधार या वृत्ति-सुधार — 09
  आचार्य महाप्रज्ञ
- अपराध मुक्ति का मार्ग — 12
  आचार्य महाश्रमण


## आलेख


- अणुव्रत : सर्वधर्म सद्भाव का मंच — 16
  मुनि सुखलाल
- बाती से बाती जले — 18
  जैनेन्द्र कुमार
- शब्द कभी मरते नहीं हैं — 20
  वेदव्यास
- सर्व धर्म समभाव... — 22
  रमेशचंद शर्मा
- वैज्ञानिक प्रगति का... — 25
  गिरीश पंकज
- हमसे है जमाना — 27
  डॉ. कृष्णा कुमारी
- दु:ख तो अपना साथी है — 29
  राजेन्द्र सारस्वत
- रोमन सम्राट की कथा... — 30
  आइवर यूशिएल
- अणुव्रत है मानव धर्म — 33
  डॉ. रेखा जैन


## कहानी


- न्यू बर्थ — 34
  ताराचंद मकसाने


## लघुकथा


- चंदन का हार — 28
  डॉ. मंजु गुप्ता


## काव्य


- अणुव्रत अनुपम यंत्र — 21
  विष्णुकान्त झा
- संस्कारों का मैं त्योहार हूँ — 24
  डॉ. राजमती पोखरणा सुराणा



- सम्पादकीय — 05
- तुलसी उवाच — 08
- परिचर्चा — 38
- अनुशास्ता अभिवंदना समारोह — 43
- अणुव्रत की बात — 48
- विश्व पर्यावरण दिवस : एक रिपोर्ट — 49
- जीवन विज्ञान शिक्षण प्रशिक्षण — 53
- पाठक परख — 54
- अणुव्रत समाचार — 56


- अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन–मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।
- anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रेषित करें।
- ईमेल द्वारा संप्रेषित कम्पोज की गयी प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।
- फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। व्हाट्सएप पर फोटो न भेजें।
- अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी चिंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।
- इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

# शैक्षिक परिदृश्य : नये प्रयोग

*एक प्रश्न कब से*
*मन को झकझोर रहा था -*
*कैसे कोई*
*बड़ा हो कर भी*
*अपना बचपना*
*संजो कर रख सकता है?*

*एक समाधान कौंधा -*
*बचपन में दायां मस्तिष्क*
*कितना जागृत होता है*
*भावनाओं को बच्चा*
*बखूबी समझता है*
*शब्दों के अभाव में भी*
*दिल की बात*
*खूबसूरती से कहता है।*

*बायां मस्तिष्क जब*
*सिर उठाने लगता है,*
*अपने तर्कों से*
*पड़ोसी मस्तिष्क को*
*प्रभावित करने लगता है,*
*स्वतः स्फूर्त भावनाएं तब*
*तर्कों के बुने*
*मुखौटों के पीछे*
*ओझल होने लगती हैं,*
*बचपना और पवित्रता*
*कहीं लुप्त होने लगती है।*

*समाधान स्पष्ट है -*
*तार्किक मन का*
*विकास अवश्य करो*
*पर उसे भावनाओं पर*
*हावी न होने दो,*
*दोनों को पूरक बनाओ*
*किसी एक को*
*प्रभावी न होने दो।*
*जीवन समर में*
*बचपन की पवित्रता*
*तुम्हें राह दिखाएगी,*
*तर्क की ताकत*
*उस राह पर चलने की*
*तुम्हें हिम्मत देगी।*

जुलाई का महीना भारत में सामान्यतः शिक्षा के नये सत्र की शुरुआत का महीना होता है। ग्रीष्मावकाश के बाद शिक्षार्थी नयी ऊर्जा और उत्साह के साथ पुनः पढ़ाई-लिखाई के समर में उतर जाते हैं। इस पृष्ठभूमि में देश व दुनिया के शैक्षिक परिदृश्य पर एक नजर डालना समीचीन प्रतीत हो रहा है।

किसी भी बालक, किशोर या युवा के लिए शिक्षा जीवन-निर्माण का आधार होती है। एक जमाने से यह कहावत भी चली आ रही है - "पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे कूदोगे होगे खराब।" आज के युग में पढ़ाई-लिखाई और खेल-कूद दोनों के ही संदर्भ बहुत बदल गये हैं, फिर भी अधिकांश अभिभावक आज भी चाहते हैं कि उनके बच्चे बस पढ़ाई में लगे रहें, अच्छी रैंक लाएं और बड़ी डिग्री हासिल करें। जीवन-निर्माण के सबसे महत्वपूर्ण 15-20 वर्ष शैक्षिक श्रेष्ठता की दौड़ में इस आशा और विश्वास में गुजर जाते हैं कि एक सफल भविष्य की सुदृढ़ नींव डाल दी गयी है। क्या ऐसा हो पाता है?

भारत की सांस्कृतिक विरासत में शिक्षा का बहुत ही गहन अर्थ रहा है। शिक्षा व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का ठोस आधार रही है। हमारे गुरुकुल केवल किताबी ज्ञान और उसके आधार पर परीक्षा उत्तीर्ण करने के केंद्र नहीं हुआ करते थे, वरन स्वयं को जान कर और सामाजिक ताने-बाने को समझ कर शिक्षार्थी वहाँ जीवन की सच्चाई को आत्मसात करता था। संस्कार, नीति, व्यवहार, मूल्य - भावना व बुद्धि के तल पर इनका बेहतर और जीवनोपयोगी ज्ञान प्राप्त कर शिक्षार्थी वहाँ से निकलता था।

दुनिया में घटित औद्योगिक क्रांति ने शिक्षा के मायने ही बदल दिये। शनैः शनैः शिक्षा का दायरा एकांगी होता चला गया और बौद्धिक या तार्किक विकास ही इसका ध्येय बन गया। हालाँकि अनेक महापुरुषों ने समय-समय पर नयी पीढ़ी के सर्वांग-संतुलित विकास पर ध्यान केंद्रित किया और समाधान प्रस्तुत किये। महात्मा गांधी, गिजुभाई बधेका, जे. कृष्णमूर्ति, सर्वपल्ली राधाकृष्णन, स्वामी विवेकानंद, रवींद्रनाथ टैगोर, एपीजे अब्दुल कलाम सहित अनेक नाम इस सूची में शामिल हैं। आचार्य श्री महाप्रज्ञ द्वारा विकसित 'जीवन विज्ञान' उपक्रम इसी कड़ी में एक बेहतरीन कार्यक्रम है जिसमें भावनात्मक और आध्यात्मिक अधिगम को वैज्ञानिक आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

पश्चिमी देशों में भी इस दिशा में उत्कृष्ट काम हुआ है। अमेरिका के प्रसिद्ध मनोविज्ञानी डेनियल गोलमैन द्वारा 20वीं सदी के अंतिम दशक में प्रतिपादित इमोशनल इंटेलिजेंस के सिद्धांत पर वहाँ व्यापक शोधकार्य हुए जिनके आधार पर तैयार कई कार्यक्रम आज वहाँ के स्कूलों का अभिन्न अंग बन गये हैं। इसे भविष्य के लिए एक शुभ संकेत कहा जा सकता है। सोशल इमोशनल लर्निंग आज अनेक देशों की शैक्षिक योजना का अभिन्न अंग बन चुका है। इन कार्यक्रमों को गहराई से देखा जाये तो इनमें भारतीय परंपरा का सांस्कृतिक पुट स्पष्ट देखा जा सकता है।

यह दुःखद किन्तु यथार्थ है कि हमारी सांस्कृतिक विशिष्टताओं का पश्चिमी जगत ने बड़े सुनियोजित तरीके से बेहतर भावी पीढ़ी के निर्माण में सफलतापूर्वक उपयोग किया, वहीं हम स्वयं इससे अनभिज्ञ और बेपरवाह बने रहे। हमारी शिक्षा नीतियां दस्तावेजों में सिमट कर या फिर राजनीतिक दांवपेचों में उलझ कर रह गयीं। हमारे शिक्षा संस्थान व्यावसायिकता से ऊपर उठ कर सोच पाने में असमर्थ नजर आते हैं। कुछ बड़े और महँगे निजी विद्यालयों द्वारा पश्चिम के साथ तालमेल कर इस दिशा में किये गये प्रयास अपवाद ही कहे जा सकते हैं।

अणुविभा का मुख्यालय 'चिल्ड्रन'स पीस पैलेस' इस दिशा में निश्चय ही एक मील का पत्थर है। यहाँ विकसित किया गया बालोदय प्रकल्प सोशल, इमोशनल और एथिकल लर्निंग के सिद्धांतों पर खरा उतरता है। यहाँ सृजित बाल-मनोविज्ञान पर आधारित 25 से अधिक बालोदय दीर्घाएँ खेल-खेल में गूढ़ लगने वाले जीवन मूल्यों को सहजता के साथ बच्चों में संप्रेषित कर देती हैं। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने इसे देख कर कहा था कि हर विद्यार्थी और अभिभावक को यहाँ आना चाहिए। इस प्रकल्प से अपने 30 वर्षों के अंतरंग जुड़ाव के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि हर स्कूल यदि ऐसे प्रकल्पों से जुड़ जाये तो सामाजिक परिवेश बदलते देर नहीं लगेगी और एक शांतिप्रिय अहिंसक समाज का सपना सपना नहीं रह कर यथार्थ में परिणत हो सकेगा।

**सं. जै.**
sanchay_avb@yahoo.com

आचार्य तुलसी

# संस्कार : विकास और परिमार्जन

युवा पीढ़ी पर सबसे बड़ा दायित्व है अपने व्यक्तिगत चरित्र का उदात्तीकरण। उदात्त चरित्र के धनी युवक ही समाज में नयी क्रांति का सूत्रपात कर सकते हैं। वैसे उदात्त चरित्र के अनेक मानक हो सकते हैं, पर न्यूनतम मानकों में व्यसनमुक्त और व्यावसायिक नीतिमत्ता की अनिवार्यता को स्वीकृति देनी होगी।

संस्कारहीन हजार व्यक्तियों से अधिक महत्वपूर्ण होता है एक संस्कारी युवक। संस्कारहीन हजार व्यक्ति मिलकर जो काम नहीं कर सकते, उसे एक संस्कारी युवक सहजता से निष्पन्न कर लेता है। उसके व्यक्तित्व में कुछ ऐसे तत्त्व होते हैं, जो उसे अन्य लोगों की पंक्ति से अलग खड़ा कर देते हैं। उसका दृष्टिकोण सर्जनात्मक होता हैं। उसके चिन्तन में निर्माण के बीज होते हैं और उसके व्यवहार में होते हैं ऐसे सार्थक प्रयास जो कभी व्यर्थ नहीं होते।

हमारे दृश्य व्यक्तित्व के तीन घटक हैं - शरीर, वाणी और मन। शरीर स्थूल है। वाणी और मन इसी के अंग हैं। वाणी शरीर से सूक्ष्म है, मन उससे भी सूक्ष्म है। शरीर, वाणी और मन परस्पर एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। कभी मन का प्रभाव शरीर पर होता है, कभी शरीर मन को प्रभावित कर लेता है। इसलिए इन सबको स्वस्थ और संस्कारी बनाने की अपेक्षा है।

**संस्कार कहाँ से आते हैं?**

संस्कारों का उत्स क्या है? इस प्रश्न पर विचार किया जाये तो कई प्रकार की अवधारणाएं सामने आ सकती हैं। मूलतः संस्कार दो प्रकार के होते हैं - सहजात और अर्जित। सहजात संस्कार, जिन्हें बच्चा अपने साथ लेकर आता है, उनका सम्बन्ध जीन से है। मनुष्य के शरीर में एक लाख तीस हजार किस्म की जीन्स मानी गयी हैं। वैज्ञानिक विश्लेषण के अनुसार प्रत्येक जीन में ढाई अरब आधारकण जोड़े होते हैं। इनके द्वारा मानवीय व्यक्तित्व की खुली पहचान हो सकती है। इस दृष्टि से जीन-शृंखला को व्यक्ति का अन्तरंग परिचय पत्र भी कहा जा सकता है।

मनोविज्ञान की भाषा में जीन का सम्बन्ध आनुवंशिकता से है। व्यक्ति की आदतें, अपराधी मनोवृत्तियां और कुछ बीमारियां सीधी आनुवंशिकता से जुड़ी हुई होती हैं। इनका संक्रमण जीन्स के माध्यम से होता है। जीन का अर्थ है संस्कार सूत्र या जीवन सूत्र। इनके द्वारा संस्कारों के विकास और परिमार्जन में बहुत बड़ा योग मिल सकता है। किस बच्चे को कैसा बनाना है? इस कल्पना को आकार देने में जीन्स की प्रमुख भूमिका रहती है। जीन्स क्रोमोसोम गुणसूत्र में रहते हैं। इन्हें वहाँ से काटा जा सकता है और इनका प्रत्यारोपण भी किया जा सकता है। इस प्रक्रिया के द्वारा इच्छा के अनुरूप व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सकता है। इनकी सहज परिणति को सहजात संस्कार कहा जा सकता है।

अर्जित संस्कारों का सम्बन्ध वातावरण, प्रशिक्षण और पुरुषार्थ के साथ है। सहजात संस्कारों के परिमार्जन में भी इनका

संस्कार निर्माण के दो क्रम हैं - वैयक्तिक और सामूहिक। समूह में किये गये प्रयोग भी कार्यकारी होते हैं, पर मेरे अभिमत से व्यक्ति-व्यक्ति को प्रशिक्षित करना अधिक उपयोगी है। किसी भी व्यक्ति को संस्कार देने से पहले हम एक ऐसे सांचे की परिकल्पना करें, जिसमें ढालकर उसको यथेष्ट व्यक्तित्व दिया जा सके।

बहुत योगदान रहता है। बच्चा जन्म के साथ जो संस्कार लेकर आता है, उन्हें उचित सिंचन और संपोषण न मिले तो संस्कारहीनता जैसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इसलिए संस्कार-निर्माण की प्रक्रिया व्यक्तित्व-निर्माण की अन्य सब प्रक्रियाओं से अधिक महत्वपूर्ण है।

**संस्कार निर्माण का क्रम**

संस्कार निर्माण के दो क्रम हैं - वैयक्तिक और सामूहिक। समूह में किये गये प्रयोग भी कार्यकारी होते हैं, पर मेरे अभिमत से व्यक्ति-व्यक्ति को प्रशिक्षित करना अधिक उपयोगी है। किसी भी व्यक्ति को संस्कार देने से पहले हम एक ऐसे सांचे की परिकल्पना करें, जिसमें ढालकर उसको यथेष्ट व्यक्तित्व दिया जा सके। जब तक सांचा या आदर्श स्थिर नहीं है, इस क्षेत्र में सघन काम नहीं हो सकता।

प्रश्न हो सकता है कि एक-एक व्यक्ति को संस्कारी बनाने का काम कब तक पूरा हो सकेगा? चींटी की गति से कोई व्यक्ति धरती की परिक्रमा कर सकता है क्या? क्या पूरे समाज या राष्ट्र को बदलने की कोई प्रक्रिया नहीं है? वर्तमान परिवेश में जीवन बहुत तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। कम्प्यूटर और रोबोट के खटोले पर बैठकर उड़ान भरने वाला आदमी क्या बैलगाड़ी पर बैठना पसंद करेगा?

प्रश्न कुछ भी हो सकता है, पर मैं नहीं समझता कि गरुड़ की गति से भी कोई काम होगा। इकाई तो आखिर व्यक्ति है। समाज या राष्ट्र की मूल भित्ति तो व्यक्ति है। उसके सुधरे बिना समूह कैसे सुधर जाएगा? नींव की उपेक्षा कर ऊँचे प्रासाद की कल्पना धोखा तो नहीं है? व्यक्ति को भुलाकर समूह को परिमार्जित करने का सपना छलावा तो नहीं है? समूह सुधार की बलवती चर्चा के वातावरण में भी व्यक्ति सुधार की बात मेरे मन से कभी नहीं निकल पाएगी।

**प्रारम्भ कहाँ से?**

भूल वहाँ होती है, जब हम सीधी छलांग भरते हैं। गर्म-गर्म खीच से भरी थाली के किनारों को छोड़कर सीधा बीच में हाथ देते हैं। बच्चों की उपेक्षा करके एकदम से युवकों को संस्कारी बनाने का काम करते हैं। संस्कार-निर्माण के लिए पहला प्रयोग करना चाहिए बच्चों पर। बचपन में अच्छे संस्कार मिलें और उन्हें यथोचित सिंचन, संवर्धन मिलता रहे तो युवा पीढ़ी में विकृति नहीं हो सकती।

शरीर और मन को विकृति से बचाने में शरीरस्थ जैविक घड़ियों का भी बहुत योगदान हो सकता है। डॉ. दिनेश भट्ट के अनुसर बचपन से ही प्रकृति प्रदत्त वातावरण में रहने, नियमित व संयमित जीवन जीने से जैविक घड़ी में किसी प्रकार से विकृति नहीं आ सकती। जो बच्चे असामान्य जीवन जीते हैं, उनकी जैविक घड़ी विकृत हो जाती है। उसकी निष्पत्ति है - शरीर की अस्वस्थता, मन का असन्तुलन और भावधारा की कलुषता।

इस संसार में दूरगामी सूझबूझ के धनी जितने व्यक्ति हुए हैं, उन सबने बच्चों को संभाला है, संवारा है और बनाया है। क्योंकि संस्कार का बीज वपन बचपन की धरती पर जितनी सुगमता से होता है विचारों की परिपक्वता में नहीं होता।

**युवा पीढ़ी का निर्माण**

नयी धरती, नयी खाद, नये बीज और नये किसान। नयी पौध उगाने में कुछ समय लगेगा। अभी तो हमें जो उपलब्ध है, उसी का उपयोग करना है। समाज की एक सशक्त पीढ़ी 'युवा' को संस्कारी बनाने के लिए कुछ बुनियादी मुद्दों पर विचार करना है। सबसे पहले युवक पूरी ईमानदारी के साथ अपने विगत की आलोचना करें और वर्तमान का विश्लेषण करें। अपनी चेतना के बन्द दरवाजे खोलकर वे दूर-दूर बिखरे हुए अपने भविष्य को देखें। वे कुछ भी करें, उससे पहले एक क्षण रुककर सोचें -

- युवक को जैसा जीवन जीना है, उसमें उसकी आस्था है या नहीं?
- आस्था के अनुरूप आदर्श की कोई अखण्ड प्रतिमा उसके सामने है या नहीं?
- जिस आदर्श तक युवक को पहुँचना है, उसके अनुकूल सम्पर्क है या नहीं?

■ आस्था और आदर्श के अनुकूल आचरण है या नहीं?

■ वर्तमान युग की बुराइयों से बचने का लक्ष्य है या नहीं?

■ आदर्श तक पहुँचने के मार्ग में आने वाली मुसीबतों से मुकाबला करने की क्षमता है या नहीं?

■ अपनी क्षमताओं का समुचित उपयोग करने का मनोभाव है या नहीं?

जिस युवक के पास इन प्रश्नों का उत्तर सकारात्मक है, वह कठिन-से-कठिन समस्या की परिस्थिति में भी समाधान के अटूट सेतु का निर्माण कर आगे बढ़ सकता है। नकारात्मक भाषा में सोचने वाला युवक न केवल अपनी क्षमताओं को कुंठित करता है, समूची सृजन-चेतना को ही खो बैठता है। उसके संजोये हुए आदर्श पिघलकर बह जाते हैं और चिन्तन के तट पर अनचाही ही चुप्पी छा जाती है। ऐसा युवक अपनी पीढ़ी का सक्षम प्रतिनिधि नहीं बन सकता। इसलिए आज युवा चेतना को झकझोरने व सृजनात्मक दिशा में मोड़ने की जरूरत है।

**युवा पीढ़ी का दायित्व**

'गाँव कोतवाली सिखा देता है' यह किंवदन्ती दायित्व-प्रतिबद्धता की परिणति की सूचक है। युवक जब तक अपने पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और संघीय दायित्व को नहीं समझेंगे, तब तक उसके निर्वाह की बात ही पैदा नहीं होगी। दायित्व-बोध और निर्वाह के क्षणों में होने वाले पुलक-प्रकंपन व्यक्ति को भीतर तक सृजन में डुबो देते हैं। इस सत्य का साक्षात्कार जिस समय हो जाता है, व्यक्ति को समूह सापेक्ष होना ही पड़ता है।

युवा पीढ़ी पर सबसे बड़ा दायित्व है अपने व्यक्तिगत चरित्र का उदात्तीकरण। उदात्त चरित्र के धनी युवक ही समाज में नयी क्रांति का सूत्रपात कर सकते हैं। वैसे उदात्त चरित्र के अनेक मानक हो सकते हैं, पर न्यूनतम मानकों में व्यसनमुक्त और व्यावसायिक नीतिमत्ता की अनिवार्यता को स्वीकृति देनी होगी। जो युवक व्यसनों की गिरफ्त में रहता है, वह न कभी अपना भला कर सकता है और न समाज का ही। दुर्व्यसनी व्यक्ति शारीरिक, आर्थिक और नैतिक – सब दृष्टियों से अपना अहित करता है। इस बहुकोणीय अहित से मानसिक संतुलन बिगड़ता है और दायित्व का बोध समाप्त हो जाता है।

आर्थिक भ्रष्टाचार वर्तमान युग की जटिलतम समस्याओं में से एक है। अधिकांश लोगों को एक ही प्रवाह में बहते देख आदर्श जीवन जीने का इच्छुक व्यक्ति भी घुटने टेक देता है। यह दुर्बलता है। युवा पीढ़ी में युग के प्रवाह को मोड़ने की क्षमता होनी चाहिए। प्रवाह के साथ तो कोई तिनका भी बह सकता है। प्रतिस्रोत में बहने या स्रोत की गति बदलने का संकल्प स्वीकार कर चलने वाला युवक न तो अपनी आस्था को कमजोर होने देता है और न ही अपने आदर्श को ओझल होने देता है।

युवा पीढ़ी पर सबसे बड़ा दायित्व है - सामाजिक बुराइयों का परिष्कार। जिन बुराइयों की जड़ें बहुत गहरी चली गयी हैं, उन्हें उखाड़ने के लिए एकनिष्ठ पुरुषार्थ की जरूरत है। विकेन्द्रित निष्ठा कार्यक्षमता को घटाती है। बिखरे हुए कार्यों और बिखरी हुई शक्ति का समीकरण होने से कम समय और कम श्रम से भी बड़ा काम हो सकता है। ■

तुलसी उवाच

# परमात्मा और है क्या?

एक सूफी फकीर के पास किसी समय एक सम्राट पहुँचा। उसके मन में परमात्मा से मिलने की चाह थी। इससे पहले भी वह कई संतों और संन्यासियों के पास पहुँच चुका था, पर इच्छा पूरी नहीं हुई। सूफी फकीर ने सम्राट को दूसरे दिन आने के लिए कहा। निश्चित समय पर सम्राट उपस्थित था।

फकीर ने कहा- "परमात्मा से मिलना है तो पहले अपनी राजधानी में सात दिन तक भीख माँगो, फिर आना।" सम्राट स्तब्ध रह गया। जिस शहर का वह शासक है, जिस शहर में वह प्रतिदिन अपने हाथों से देता आया है, उसी शहर में जाकर घर-घर के आगे हाथ पसारना ! यह काम उससे हो नहीं सकेगा। उसने कहा- "किसी दूसरे शहर में जाकर भीख माँग लूँगा, यहाँ तो यह सब नहीं हो सकेगा।"

फकीर ने कहा- "तब परमात्मा के दर्शन नहीं हो सकेंगे।"

सम्राट विवश था। उसने सहमते-सहमते अपनी स्वीकृति दी। सात दिन तक भीख माँगते-माँगते उसका अहंकार गल गया। अहंकार टूटा और परमात्मा प्रकट हो गया। परमात्मा और है क्या? अहंकार और ममकार रूप वाले नागों से मुक्त आत्मा ही परमात्मा है। जो व्यक्ति इस नागपाश को तोड़ देता है, वह स्वयं परमात्मा बन जाता है। अन्यथा परमात्मा के पथ में बाधाएं खड़ी हो जाती हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ

# व्यवस्था-सुधार या वृत्ति-सुधार

आडम्बर और विलासपूर्ण जीवन रहे, तब अणुव्रतों की कल्पना सफल नहीं हो सकती। अणुव्रती अणुव्रतों का पालन भी करे और जीवन को आर्थिक भार से बोझिल भी बनाये रखे, ऐसा बनना सम्भव नहीं। विलासी जीवन में धन चमकता है। सादगीपूर्ण जीवन में व्रत चमकते हैं। धन और व्रत, दोनों एक साथ नहीं चमक सकते।

इच्छा और आवश्यकता की वृद्धि से विकास होता है - यह धारणा मिथ्या ही नहीं, घातक भी है। वैषम्य का जो विकास होता है, वह उसको निरंकुश छोड़ने का ही परिणाम है। सीमित इच्छाएं और सीमित आवश्यकताएं मनुष्य को मूढ़ नहीं बनातीं। असीमित इच्छाओं और असीमित आवश्यकताओं ने युग को वस्तु-बहुल बनाकर मनुष्य को रक्त का प्यासा बना डाला है और अब वह सारी सामग्री को अकेला ही निगल जाना चाहता है।

निरंकुश इच्छाएं ही शोषण करती हैं और युद्ध भी जो लड़े जाते हैं, इन्हीं की देन हैं। प्रतिहिंसा से पीड़ित मनुष्य शान्ति चाहता है पर अशान्ति का मूल, जो इच्छा का अनियन्त्रण है, उसे मिटाना नहीं चाहता - यही सबसे बड़ा आश्चर्य है। शान्ति का निर्विकल्प मार्ग है - भोग का अल्पीकरण। भोग के अल्पीकरण से परिग्रह का अल्पीकरण होगा और उससे हिंसा और असत्य का।

### यह कैसा व्यामोह?

आज की दुनिया में यह मान्य हो चुका है कि अहिंसा को विकसित किये बिना विश्व-शान्ति कभी नहीं हो सकती। इसीलिए बहुत सारे व्यक्ति अहिंसक बनना भी चाहते हैं, पर वे जीवन-क्रम को बदलते नहीं, अतः वे अहिंसक बन नहीं पाते। हिंसा की कमी परिग्रह की कमी पर निर्भर है और परिग्रह की कभी भोग की कमी पर। लोग चाहते हैं - भोग-विलास जो हैं, वे तो चलते ही रहें; परिग्रह भी कम न हो और हिंसा भी छूट जाये। कैसा है यह व्यामोह! भोग-विरति के बिना जो हिंसा-विरति चाहते हैं, वे बुराई की जड़ को सींचते हुए भी परिणामों से बचना चाहते हैं। जो हिंसा-विरति या अहिंसा का विकास चाहते हैं; उन्हें समझ लेना है कि हिंसा के कारणों को त्यागे बिना हिंसा को त्यागने का परिणाम केवल दंभ होगा, अहिंसा नहीं। जीवन को हल्का बनाओ, क्योंकि अर्थ के गुरुतम भार से दबा जीवन पवित्र नहीं बन सकता।

### अहिंसा का विकास : स्वनिर्भरता

जीवन-शुद्धि के लिए अहिंसा के द्वारा जिसे जीवन बदलना है, वह न दूसरों से अनावश्यक श्रम लेता है और न किसी का शोषण करता है। निश्चय में अहिंसा आती है, तब व्यवहार में स्वनिर्भरता अपने आप आ जाती है। व्यवहार में स्व-निर्भर रहने वाला ही अहिंसा का विकास कर सकता है। कोई श्रम करे या न करे, इससे अहिंसा का सम्बन्ध नहीं, किन्तु दूसरे से श्रम लेने के लिए परिग्रह व परिग्रह के लिए हिंसा, इस तरह हिंसा को बढ़ावा मिलता है। स्वयं श्रम करने वाले को अधिक परिग्रह की अपेक्षा

वस्तुएं थोड़ी हों, यह कोई अच्छाई नहीं, वे अधिक हों, यह बुराई नहीं, उन्हें कम करने की जो भावना है, वह अच्छाई है और उन्हें बढ़ाने की जो भावना है, वह बुराई है। पहले वस्तुओं को बढ़ाने की इच्छा पैदा होती है। इच्छा ही तो अन्त में संस्कार बन जाती है। संस्कार की पूर्ति के लिए फिर स्पर्धा चलती है।

नहीं होती। अधिक परिग्रह से निरपेक्ष व्यक्ति अधिक हिंसा में नहीं फँसता। इस प्रकार स्व-श्रम निर्भरता से हिंसा को अधिक उत्तेजना नहीं मिलती। निष्कर्ष यह निकला कि अपना आवश्यक कार्य अपने आप करने से समाज में अभोग, अपरिग्रह और अहिंसा का जैसा जीवित विकास हो सकता है, वैसा विकास दूसरों के श्रम पर निर्भर रहने वाले समाज में नहीं हो सकता।

### तब फूटता है अच्छाई का अंकुर

आधुनिक आर्थिक विचारधारा का मत है- "अधिक उत्पादन करो। आवश्यकताएं अधिक होती हैं और उत्पादन कम, इस कारण समस्याएं बढ़ती हैं। आवश्यकताएं बढ़ें, वैसे ही उत्पादन भी बढ़े तो समस्या पैदा न हो।" यह हिंसा को बुलावा है। वस्तुएं थोड़ी हों, यह कोई अच्छाई नहीं, वे अधिक हों, यह बुराई नहीं, उन्हें कम करने की जो भावना है, वह अच्छाई है और उन्हें बढ़ाने की जो भावना है, वह बुराई है। पहले वस्तुओं को बढ़ाने की इच्छा पैदा होती है। इच्छा ही तो अन्त में संस्कार बन जाती है। संस्कार की पूर्ति के लिए फिर स्पर्धा चलती है। उसमें औचित्य-अनौचित्य का कुछ विचार ही नहीं रहता और इस तरह बुराइयों का द्वार खुल जाता है। जब वस्तुओं को कम करने की वृत्ति बनती है, तब व्यक्ति को बुरे साधन अपनाने की आवश्यकता नहीं रहती। यहीं से अच्छाई का अंकुर प्रस्फुटित होता है।

इसे कौन नहीं जानता कि अधिक उत्पादन की स्पर्धा ने हिंसा को प्रत्यक्ष निमन्त्रण दिया है। व्यापारिक स्पर्धा, राज्य-विस्तार या अधिकार-प्रसार की स्पर्धा ने आज के युग को अणुबमों की स्पर्धा का युग बना दिया है। स्पर्धा का अन्त सीमा में होता है, विस्तार में नहीं। अतृप्ति का अन्त त्याग में होता है, आसेवन में नहीं। यदि उत्पादन-वृद्धि के द्वारा समस्याओं को सुलझाने की दिशा खुली रही तो अनुमान नहीं किया जा सकता कि मानव का अन्त होने से पहले स्पर्धा का कभी अन्त भी हो सकेगा।

### टॉलस्टॉय का अनुभव

अणुव्रत आन्दोलन के व्रत संयममय हैं। संयम निषेध-प्रधान होता है। करने से पहले जो नहीं करना चाहिए, इसका अनुभव आवश्यक है। टॉलस्टॉय ने अनुभव किया कि "एक वर्ग दूसरे वर्ग को गुलाम बनाये रखता है, वह दूसरों के दुःख और पाप का कारण है।" इस पर उन्होंने एक सीधा-सादा-सा अनुमान निकाला- "मुझे दूसरों की सहायता करनी हो तो मैं जो दुःख मिटाना चाहता हूँ, उससे पहले मुझे वे दुःख देने बन्द कर देने चाहिए।"

उन्होंने बताया- "धनिकों के पास से लेकर गरीबों को देने की जो मेरी योजना थी, उसकी निरर्थकता मैं जान गया। मैंने देखा कि पैसा पैसे के रूप में हितकारी नहीं है; इतना ही नहीं, उल्टा अनिष्टकर है। कारण, गरीब का हित तो उसकी अपनी मजदूरी का फल उसी के पास रहे, इसी में है।"

### संयम का सूत्र

सुख न लूटना और दुःख न देना - यह संयम का सूत्र है और शाश्वत सत्य है। सुख देना और दुःख दूर करना - यह उपयोगिता का सूत्र है और सामयिक सत्य है। अर्थ-प्राचुर्य से समाज का विकास नहीं होता- ऐसा नहीं माना जाता। विकास की दशा भले ही दूसरी हो, प्राचुर्य को आवश्यकता से आगे नहीं ले जाना चाहिए। उपयोगिता से आगे प्राचुर्य जाता है, तो वह उन्माद लाता है। व्रत-विकास की दिशा में अर्थ-संग्रह की कल्पना नहीं आती। अर्थ-दान की बात ही कहाँ रही? अर्थ-संग्रह को उचित मानने पर विनियोग की बात आती है। विनियोग की ही एक शाखा दान है।

### ममत्व हटे

व्रत का अर्थ है - अर्थ पर से अपना स्वामित्व हटा लेना। स्वामित्व हटने की पहली शर्त है - ममत्व हटे। पदार्थ-संग्रह में अपना अनिष्ट न दीखे, तब तक ममत्व-बुद्धि नहीं मिटती। संग्रह में अनिष्ट की भावना अध्यात्म-दृष्टि से मिलती है। उसका आदर्श है - कोई कुछ भी संग्रह न करे। अपने से बाहर की वस्तु को अपनी न माने और उसे अपने अधिकार में न ले। यह कठोर साधना है। इसके लिए जीवन की वृत्तियों का महान बलिदान चाहिए। ऐसा न कर सके, उसके लिए फिर मध्यम मार्ग है। उसकी दृष्टि है - जीवन-निर्वाह की। आवश्यकता से अधिक संग्रह न किया जाये। जितना

संग्रह उतना बन्धन - यह व्रत-ग्रहण की पूर्व-भूमिका है। संग्रह द्वारा इष्ट-पूर्ति की कल्पना होती है, तब वह साध्य जैसा बन जाता है।

आत्मविश्वास की कमी है, उससे संग्रह को प्रोत्साहन मिल रहा है। लखपति-करोड़पति भी धन कमाने की दौड़ में जुटे रहते हैं। बुढ़ापे में क्या होगा, बाल-बच्चों का क्या होगा - ऐसी आशंकाएं उन्हें सताती रहती हैं। आत्मविश्वास उत्पन्न करने के लिए अर्थव्यवस्था की स्थिरता अपेक्षित होती है। प्रत्येक व्यक्ति को कार्य मिल जाये और वह योग्यता के अनुरूप मिले, ऐसी स्थिति में जीवन की निश्चिन्तता आती है। भावी जीवन और भावी पीढ़ियों की चिन्ता कम होती है, संग्रह-वृत्ति शिथिल बन जाती है। ऐसी भूमिका में व्रतों को विकसित होने का सुन्दर अवसर मिलता है, पर स्थिति दूसरी ही है। जहाँ ऐसी भूमिका है, वहाँ व्रतों की भावना नहीं है और जहाँ व्रतों की भावना है, वहाँ वैसी भूमिका नहीं है।

### त्याग समतावाद है

गरीबी में अभिलाषा बनी रहती है। अमीरी का दोष है - अतृप्ति। सन्तुष्टि या वृत्ति-संतुलन त्याग से उत्पन्न होता है। पहले वस्तु का त्याग और फिर वासना का त्याग।

त्याग समतावाद है। अपने हित के लिए सब कुछ त्यागे - यह सिद्धांत जैसा धनी के लिए है, वैसा ही गरीब के लिए है। गरीबों को त्याग के द्वारा दो वस्तुएं साधनी चाहिए-

(1) व्यसन-मुक्ति (2) इच्छा-मुक्ति

धनिकों को त्याग के द्वारा तीन वस्तुएं पानी चाहिए-

(1) व्यसन-मुक्ति (2) इच्छा-मुक्ति (3) अशोषण

### जीवन का साध्य

गरीबों को करना चाहिए - बहु-भोग, बहु-परिग्रह और बहु-हिंसा की आकांक्षा का त्याग। धनिकों को करना चाहिए - बहु-भोग, बहु-परिग्रह, बहु-हिंसा और इनकी आकांक्षा का त्याग। समाज का समतावाद सबके लिए समान सुविधा, समान भोग और विकास का समान अवसर मिलने का सिद्धान्त है। सुख-सुविधा और भोग जहाँ साध्य बनते हैं, वहाँ संग्रह और शोषण घुस आते हैं। अणुव्रत आध्यात्मिक समतावाद के साधन हैं। इस क्षेत्र में जीवन का साध्य है - पवित्रता और वस्तु-निरपेक्ष आनन्द। सुख-सुविधा और भोग जीवन-निर्वाह की प्रक्रिया है। उसमें अधिक आकर्षण और ममकार नहीं होना चाहिए। "मैं जैसे अनुभूतिशील हूँ, वैसे दूसरे प्राणी भी अनुभूतिशील हैं" - इसकी मार्मिकता तभी समझी जाती है जब बाहरी पदार्थों से आकर्षण और ममकार टूटता है। ये व्यक्ति को मूढ़ बनाते हैं। मूढ़ व्यक्ति दूसरों की आनुभविक क्षमता को सही-सही नहीं आंक सकता।

### अणुव्रत आंदोलन का स्वरूप

आध्यात्मिक दृष्टि विशुद्ध दर्शन है। वह अपनी समता का स्वीकार है। अपनी मानसिक स्थिति विषम न हो, यही साम्य है। इसी के आधार पर अणुव्रत आंदोलन के स्वरूप आदि का निश्चय किया जा सकता है -

आत्मविश्वास उत्पन्न करने के लिए अर्थव्यवस्था की स्थिरता अपेक्षित होती है। प्रत्येक व्यक्ति को कार्य मिल जाये और वह योग्यता के अनुरूप मिले, ऐसी स्थिति में जीवन की निश्चिन्तता आती है। भावी जीवन और भावी पीढ़ियों की चिन्ता कम होती है, संग्रह-वृत्ति शिथिल बन जाती है। ऐसी भूमिका में व्रतों को विकसित होने का सुन्दर अवसर मिलता है।

1. अणुव्रत आन्दोलन का स्वरूप है - स्वनिष्ठता।
2. अणुव्रत आन्दोलन का ध्येय है - जीवन-शुद्धि।
3. अणुव्रत आन्दोलन का आदर्श है - चरित्र का उत्कर्ष।
4. चरित्र-अपकर्ष के हेतु हैं - बहु-भोग, बहु-परिग्रह और बहु-हिंसा।
5. चरित्र-उत्कर्ष के हेतु हैं - भोग-अल्पता, परिग्रह-अल्पता और हिंसा-अल्पता।
6. आदर्श-प्राप्ति के साधन हैं- अणुव्रत।

### धन और व्रत

आडम्बर और विलासपूर्ण जीवन रहे, तब अणुव्रतों की कल्पना सफल नहीं हो सकती। अणुव्रती अणुव्रतों का पालन भी करे और जीवन को आर्थिक भार से बोझिल भी बनाये रखे, ऐसा बनना सम्भव नहीं। विलासी जीवन में धन चमकता है। सादगीपूर्ण जीवन में व्रत चमकते हैं। धन और व्रत, दोनों एक साथ नहीं चमक सकते। न्याय साधनों द्वारा जीवन-निर्वाह उपयोगी धन मिल जाता है किन्तु आडम्बर और विलास योग्य धन नहीं मिलता। विलास के लिए धन का अतिरेक और उसके लिए अन्यायपूर्ण तरीकों का अवलम्बन - ऐसा होता है, व्रत टूट जाते हैं। इसलिए अणुव्रती को जीवन-व्यवस्था का चालू क्रम बदलना पड़ता है। ऐसा किये बिना वह व्रत और विलास दोनों के साथ भी न्याय नहीं कर सकता। न वह सफल व्रती ही बन सकता है और न सफल विलासी ही रह सकता है। इस पर से अणुव्रती के लिए जीवन-व्यवस्था के परिवर्तन की बात आती है। शोषणहीन समाज-व्यवस्था में उसे कोई कठिनाई नहीं, किन्तु समाज-व्यवस्था वैसा न बनने पर भी कम-से-कम उसे तो अपना-जीवन-क्रम बदलना ही होगा। धन के द्वारा बड़ा बनने की भावना, दूसरों से अधिक सुविधा पाने की भावना, दूसरों के श्रम द्वारा अनुचित लाभ कमाने की भावना, शोषण और अवैध तरीकों द्वारा धनार्जन की भावना छोड़ देना उसका सहज धर्म हो जाता है। अणुव्रत विचार का लक्ष्य है - व्यक्ति व्यक्ति में सहज-धर्म का विवेक जगाना, प्रत्येक व्यक्ति अपनी आन्तरिक प्रेरणा द्वारा बुराइयों से बचे, बचने का उपाय करे, व्रती बने, वैसी भावना पैदा करना।

आचार्य महाश्रमण

# अपराध मुक्ति का मार्ग

नशा भी समस्याओं को पैदा करने वाला होता है। ऐसी अनेक समस्याएं दुनिया में चलती हैं। जो महापुरुष होते हैं, संत पुरुष होते हैं, अपने ढंग से अधर्म को कम करने का प्रयास करते हैं, पाप को नष्ट करने का प्रयास करते हैं और न जाने कितने-कितने लोगों को वे पाप से मुक्त कर देते हैं। उनको धर्म के रास्ते पर स्थापित कर देते हैं।

हमारी दुनिया में धर्म भी होता है और पाप भी होता है। हिंसा भी देखने को मिलती है और अहिंसा की भावना, अहिंसा की क्रिया और अहिंसा का आचरण भी देखने को मिलता है। समाज में अच्छाइयां देखने को मिलती हैं तो बुराइयों का जाल भी देखने को मिल जाता है। ऐसा समय तो कब आया होगा जब बिल्कुल भी हिंसा न रही हो, पूर्णतया अहिंसा व्याप्त हो गयी हो। काल का अंतर हो सकता है।

अवसर्पिणी काल के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आरे में भरतक्षेत्र में ज्यादा पाप नहीं था। लोग बड़े भले होते थे। कोई ज्यादा आशा, लालसा नहीं थी। अपेक्षाओं की पूर्ति कल्पवृक्षों से हो जाती थी। उस जमाने में इतना अधर्म भी नहीं रहा होगा। वर्तमान में पंचम दु:षम आरा है, इसलिए हिंसा, बुराइयां कुछ ज्यादा देखने को मिलती हैं। फिर भी यहाँ अहिंसा, धर्म और अच्छाइयां भी हैं। दुनिया की नियति है कि जब बुराइयां ज्यादा होती हैं, तब बीच-बीच में महापुरुषों का प्रादुर्भाव होता है। वे बुराइयों को कम करने का उपदेश देते हैं, प्रयास करते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में बताया गया है-

**यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।**
**अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।**
**परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।**
**धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे।।**

श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं - "हे भारत! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् साकार रूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ। साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए, पापकर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए मैं युग-युग में प्रकट हुआ करता हूँ।"

यह अवतारवाद की एक अवधारणा है। जैन दर्शन इस प्रकार की किसी अवधारणा को स्वीकार नहीं करता कि कोई परमात्मा अवतार लेता है, दुनिया में पैदा होता है। जैन दर्शन के अनुसार एक बार जो मोक्ष में चला जाता है, वह वापस कभी संसार में नहीं आता। जब तक आत्मा मुक्त नहीं होती, तब तक आत्मा का जन्म-मरण होता रहता है। कोई देव गति से मनुष्य गति में पैदा हो तो मान सकते हैं कि ऊपर से नीचे आ गया। उत्तारवाद फिर भी मान्य है लेकिन अवतारवाद वाली कोई बात नहीं है। एक आत्मा साधना करके मोक्ष में पैदा हो सकती है। साधना के द्वारा मुक्ति प्राप्त होना जैन दर्शन द्वारा सम्मत है।

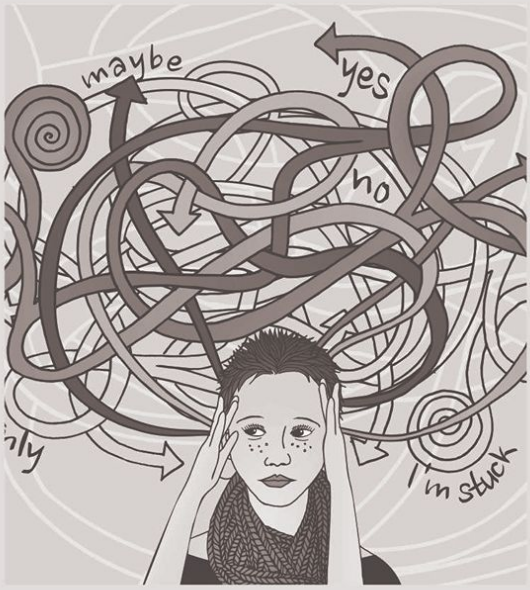


आँखों के आगे कोई पट्टी बाँध ले तो दिखना बंद हो जाता है। इसी तरह अज्ञान के उदय से विवेक और ज्ञानरूपी सूर्य के आगे काला बादल आ जाता है। आँखें बंद हो जाती हैं। आदमी को पता नहीं चलता कि क्या करना, क्या नहीं करना? किसमें लाभ, किसमें हानि? जो जान नहीं पाता, वह क्या धर्म करेगा और क्या अधर्म को छोड़ेगा? इसलिए अज्ञान को बड़ा कष्ट माना गया।

गीता की इस बात को मैं इस रूप में कहना चाहूँगा कि दुनिया में अधर्म बढ़ता है तो बीच-बीच में धार्मिक पुरुष भी पैदा होते हैं, जो विशेष साधक होते हैं, अहिंसक होते हैं और अधर्म का आचरण करने वाली जनता को धर्मोपदेश देते हैं। इसको कोई अवतारवाद कह दे या महापुरुषों की उत्पत्ति कह दे। जहाँ तक महापुरुषों की उत्पत्ति की बात है तो जैन दर्शन भी मानता है कि बीच-बीच में महापुरुष पैदा होते हैं। जैन परम्परा में चौबीस तीर्थंकर हुए हैं। वे महापुरुष थे। उन्होंने अपने-अपने ढंग से तीर्थ का प्रवर्तन किया और लोगों को धर्मोपदेश दिया। तीर्थंकरों के अतिरिक्त और भी कितने-कितने आचार्य, धर्मगुरु पैदा हुए हैं, महापुरुष पैदा हुए हैं, जिन्होंने स्वयं साधना की और जनकल्याण का भी प्रयास किया।

अपराध के मुख्य तीन कारण हैं - अज्ञान, आवेश और अभाव। व्यक्ति को ज्ञान नहीं होता है तो वह गलत काम कर लेता है। बच्चे को कुछ ज्ञान नहीं होता, इसलिए किसी जानवर को देखकर उसे मारना शुरू कर देता है। वह हिंसा-अहिंसा को नहीं जानता है। अज्ञान के कारण आदमी हिंसा/अपराध में चला जाता है। संस्कृत साहित्य में अज्ञान को पाप माना गया, बड़ा दुःख माना गया। पंचसूत्रम् नामक ग्रन्थ में कहा गया - **अज्ञानं खलु कष्टं क्रोधादिभ्योपि सर्वपापेभ्यः**। क्रोध, मान, माया आदि पाप हैं परन्तु अज्ञान उन सबसे ज्यादा खतरनाक कष्ट या दुःख की चीज है क्योंकि अज्ञान के कारण आदमी की आँखों के आगे परदा आ जाता है। जैसे-आँखों के आगे कोई पट्टी बाँध ले तो दिखना बंद हो जाता है। इसी तरह अज्ञान के उदय से विवेक और ज्ञानरूपी सूर्य के आगे काला बादल आ जाता है। आँखें बंद हो जाती हैं। आदमी को पता नहीं चलता कि क्या करना, क्या नहीं करना? किसमें लाभ, किसमें हानि? जो जान नहीं पाता, वह क्या धर्म करेगा और क्या अधर्म को छोड़ेगा? इसलिए अज्ञान को बड़ा कष्ट माना गया।

दूसरा कारण है - आवेश। कभी कोई ऐसा आवेश, आवेग आता है कि आदमी अपराध की ओर अग्रसर हो जाता है, अपराध करने लगता है। कितने लोग आवेश में आकर एक बार कुछ कर लेते हैं परन्तु बाद में उन्हें पश्चात्ताप करना पड़ता है। एक बार तो आवेश में आकर नहीं बोलने की बात आदमी बोल देता है और नहीं करने का काम कर लेता है। फिर आवेश शान्त होने पर सोचता है - काश! मैं अमुक बात नहीं कहता या अमुक कार्य नहीं करता तो अच्छा रहता।

तीसरा कारण है - अभाव। अभाव के कारण भी आदमी अपराध में चला जाता है। पैसा पास में नहीं होता है तो आदमी चोरी-डकैती करने लगता है। हम लोग अहिंसा यात्रा कर रहे थे। एक संस्थान आया। अधिकारियों ने कहा - आप अंदर पधारिए। गुरुदेव प्रायः साधना में विराजमान रहते और मुझे इधर-उधर भेजते रहते। मैं उस संस्थान के अंदर गया। संस्थान में कुछ बच्चे थे। वहाँ के अधिकारी ने बताया - "महात्माजी! ये अनाथ बच्चे हैं। हमने इनको हमारी संस्था में भर्ती किया है। हमने यहाँ भर्ती करके इनको आतंकवादी बनने से बचा लिया।" उनका कथन था कि अगर इनको कोई आश्रय नहीं मिलता और कोई धन्धा नहीं मिलता तो ये अनाथ बच्चे, गरीब बच्चे आतंकवाद और हिंसा में प्रवृत्त हो जाते। इनको तो पैसा चाहिए और आतंकवाद में इन्हें पैसा मिल जाता। अभाव में आदमी का स्वभाव भी बिगड़ जाता है। अभाव होने पर आदमी गलत रास्ते पर, गलत तरीके को काम लेकर गलत कार्य करने लग जाता है।

जब-जब किन्हीं कारणों से अपराध बढ़ जाते हैं तो महापुरुष पैदा होते हैं और वे अपराधों से प्रजा मुक्त हो, ऐसा प्रयास करते हैं। जहाँ तक सुरक्षा की बात है या दुर्जनों के नाश की बात है, सामान्यतया एक शास्ता या राजा होता है तो उसका भी यह काम होता है कि वह अपनी सीमा में अपनी शक्ति से प्रजा की रक्षा करे। राजा के तीन काम होते हैं -

**सदवनमसदनुशासनमाश्रितभरणम्।** जो सज्जन लोग हैं, भले लोग हैं उनकी रक्षा करना। जो दुर्जन लोग हैं, उन पर अनुशासन करना और जो अपने आश्रित हैं, उनका भरण-पोषण करना, भोजन आदि की व्यवस्था करना। महापुरुषों के संपर्क में आने से कितने-कितने असज्जन लोग, दुर्जन लोग अच्छे बन जाते हैं। भगवान महावीर के संपर्क से अर्जुन मालाकार, रोहिणेय चोर

जैसे व्यक्ति भी बदल गये। इस प्रकार कितने-कितने अपराधी लोगों को अपराध छोड़ने की प्रेरणा मिली।

देशाटन करने से कितने लोगों को कुछ बताने का, समझाने का मौका मिलता है। कितनों में प्राण का संचार होता है। हमारे धर्मसंघ में आचार्य यात्रा करते हैं। उनकी एक बार की यात्रा भी लंबे समय के लिए संजीवनी के रूप में मानो प्राण का संचार कर देती है और अनेक समस्याओं का समाधान हो जाता है। विकास का पथ भी प्रशस्त हो जाता है। सामान्य साधु-साध्वियां भी यात्राएं करते हैं। वे भी अपने ढंग से काम करते हैं परन्तु आचार्यों की यात्रा का अलग महत्व होता है। आखिर पद का और स्थान का भी महत्व होता है।

आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने अहिंसा यात्रा की। यात्रा में कितने लोग संपर्क में आये और कितने लोगों को अपराध मुक्त चेतना को जगाने का मौका मिला। गुरुदेव तुलसी ने सुदूर प्रान्तों की यात्राएं कीं। इन यात्राओं से लोगों को संपर्क में आने का मौका मिला और उन्हें समझाने का, धर्मोपदेश देने का मौका मिला। उनके प्रयत्नों से लोगों का उद्धार भी हुआ। यात्राओं में कितने-कितने लोग नशे से मुक्त होते हैं। नशे से जो समस्याएं पैदा होती हैं, उनका निवारण होता है। आचार्य श्री महाप्रज्ञजी कुछ वर्ष पहले दिल्ली से जयपुर पधार रहे थे। सन् 2005 का चतुर्मास दिल्ली था। जयपुर-दिल्ली के पथ में एक गाँव आया। संभवतः उसका नाम था चंदवाजी। मैं मध्याह्न में समणियों को पढ़ा रहा था। एक ग्रामीण महिला आयी। उसके बच्चे भी साथ थे। मैंने सोचा, गाँव की बहन आयी है। इसको थोड़ा उपदेश देना चाहिए। मैंने उससे कहा - "भगवान का नाम लिया करो, जप किया करो।"

महिला प्रबुद्ध थी। वह बोली - "बाबाजी! आपकी यह बात तो अच्छी है कि भगवान का नाम लेना चाहिए परन्तु मैं तो बहुत दुःखी हूँ।"

मैंने पूछा - "तुमको किस बात का दुःख है?"

वह बोली - "आपको क्या दुःख बताऊं? खाने को रोटी नहीं मिलती, रहने को मकान नहीं है और हमारी नौकरी भी स्थायी नहीं है।"

मैंने कहा - "तुम्हारा पति कुछ काम-धन्धा करता होगा? कुछ कमाई करता होगा?"

महिला ने कहा, "वो क्या काम-धन्धा करता है। एक रुपया कमाता है और दस रुपए गंवाता है। वह तो शराबी है। मुश्किल से कुछ कमाई करता है और जितना कमाता है उससे ज्यादा पैसा शराब में लगा देता है।"

मैंने कहा - "वह यहाँ आये तो मैं उसे समझाने का प्रयास करूँगा।"

उस दिन तो वह मेरे पास नहीं आया। अगले दिन हम दूसरे गाँव चले गए। दोपहर में मैं बैठा था। मेरे मन में आया कि कल हम पिछले गाँव में थे, तब एक बहन मेरे पास आयी थी, अपना दुखड़ा सुना रही थी परन्तु मैंने उसके दुःख को दूर करने के लिए क्या प्रयास किया? कुछ कार्यकर्ता हमारे साथ थे। मैंने उनको सारी बात बतायी। वे लोग गये और उस बहन को, उसके पति व बच्चों को लेकर आ गये।

मैंने बहन से यह भी पूछा कि इन बच्चों को कुछ खिलाती हो या नहीं? उस बहन ने कहा - "भोजन होता है तब तो खिला देती हूँ नहीं तो थप्पड़ मारकर और डांटकर सुला देती हूँ।" यह एक गरीब महिला की कहानी है कि वह कैसे जीवन चला रही है।

मैंने उसके पति से पूछा - "तुम शराब पीते हो?"

वह बोला - "हाँ महाराज ! शराब तो मैं पीता हूँ।"

मैंने कहा - "तुम्हारे शराब पीने से घर में कितनी समस्या हो रही है? परिवार में कष्ट हो रहा है।" मैंने समझाया तो उसने कहा - "ठीक है, अब मैं कभी शराब नहीं पीऊँगा।"

नशा भी समस्याओं को पैदा करने वाला होता है। ऐसी अनेक समस्याएं दुनिया में चलती हैं। जो महापुरुष होते हैं, संत पुरुष होते हैं, अपने ढंग से अधर्म को कम करने का प्रयास करते हैं, पाप को नष्ट करने का प्रयास करते हैं और न जाने कितने-कितने लोगों को वे पाप से मुक्त कर देते हैं। उनको धर्म के रास्ते पर स्थापित कर देते हैं। महापुरुष परकल्याणकारी होते हैं। वे अपनी शक्ति का नियोजन दूसरों के कल्याण के लिए करते हैं और दुनिया में पाप को कुछ कम करने का प्रयास करते हैं। ■

तुलसी उवाच

# उत्कर्ष और संघर्ष

मनुष्य अनन्त शक्ति सम्पन्न प्राणी है। उसके पास चेतना है, शक्ति है और है उसके प्रयोग की क्षमता। शक्ति का प्रयोग कर मनुष्य ने नये-नये आविष्कारों को जन्म दिया।

उसने सुख-सुविधा के इतने साधन आविष्कृत कर दिये, जिनके द्वारा वह एक सीमा तक प्रकृति-जयी भी बन गया है। पर इन सबके बावजूद उसके जीवन में कषाय और वासना की इतनी गहरी परतें जमी हुई हैं जो उसे मानवीय मूल्यों का अवबोध नहीं करने देतीं।

हीनता और उच्चता के कृत्रिम मानदण्ड उसके दृष्टिकोण को सम्यक् नहीं होने देते। जातिवाद का मिथ्या दर्प उसे समता की भूमिका पर उतरने नहीं देता। जब तक ये स्थितियां सुदृढ़ हैं, न तो स्वयं शांति से जी सकता है और न दूसरों को जीने देता है।

# हेल्थ इंश्योरेंस - मेडिक्लेम केशलेस

**10 लाख**
का मेडीक्लेम
@ 39 प्रतिदिन में
' पोलिसी 3 वर्षो में
20 लाख हो जायेगी '

**20 लाख**
का मेडीक्लेम
@ 49 प्रतिदिन में
' पोलिसी 3 वर्षो में
40 लाख हो जायेगी '

**50 लाख**
का मेडीक्लेम
@ 55 प्रतिदिन में
' पोलिसी 3 वर्षो में
1 करोड हो जायेगी '

## प्रेगनेंसी कवर 2 लाख का सिर्फ 1 साल वेटिंग में @199 प्रतिदिन में.

65 की उम्र तक हेल्थ इंश्योरेंस
**बगैर मेडिकल चेकअप**
लिमिटेड समय ऑफर !!!

## सुपर टॉप अप
20 लाख का @ ₹ 7 प्रतिदिन में
' आपकी पुरानी पॉलिसी को
छोटी सी प्रीमियम देके बढ़ाए '

## प्रिमीयम डिस्काउंट
2 वार्षिक 7.50% | 3 वार्षिक 10%

## हेल्थ इंश्योरेंस में EMI फैसिलिटी ?
सिर्फ 30% प्रीमियम का डाउन पेमेंट करना होगा. और बाकी अमाउंट EMI में लेंगे, जिसमें 2 EMI से लेकर 30 EMI तक का ऑप्शन सिलेक्ट कर सकते हो.

## 10 लाख की एक्सीडेंटल पॉलिसी ₹. 7 प्रतिदिन में !
' एक्सीडेंट के बेड-रेस्ट से मिलेगा हर हफ्ते ₹. 5000 सैलरी का मुआफ़ज़ा, अगले 100 हफ्तों तक ! '

## हमारे द्वारा मेडिक्लेम में बेस्ट फैसिलिटी
- हॉस्पिटल कमरे की कोई सीमा नहीं
- इलाज राशि की कोई सीमा नहीं
- ऑल इंडिया कैशलेस हॉस्पिटल की सुविधा
- कंस्यूमेबल आइटम्स को कवर किया जाएगा
- क्लेम में कोई पैसा नहीं कटेगा
- फास्ट क्लेम सेटलमेंट की गारंटी
- 3 वर्षीय प्रीमियम पे 3 वर्ष का टैक्स बेनिफिट
- हर्ष वर्ष बढ़ता हुआ कवर

## पोर्टेबिलिटी सुविधा क्या है ?
पोर्टेबिलिटी सुविधा से आप आपकी पुरानी पॉलिसी को **पुराने बेनिफिट, पॉलिसी की प्रारंभ तारीख** एवं **बोनस के साथ,** दूसरी कंपनी में ट्रांसफर कर सकते हैं. अगर आपकी पॉलिसी 2 साल से पुरानी है, तो आपकी पॉलिसी में **वेटिंग पीरियड नहीं आएगा** और आप अगले दिन से क्लेम कर सकते हैं.

## हमारे हजारों क्लेम सेटलमेंट में से कुछ ग्राहकों के क्लेम राशि की झलक

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| संजय-नितेश धाकड़ | भुलेश्वर | ₹. 28,22,147/- | अर्जुन सांखला | गोरेगांव | ₹. 26,95,047/- |
| प्रकाश सिसोदिया | भुलेश्वर | ₹. 25,15,000/- | ख्यालीलाल कोठारी | भिवंडी | ₹. 20,00,200/- |
| महेंद्र कोठारी | चेंबूर | ₹. 17,11,000/- | मनोज शर्मा | चर्नी रोड | ₹. 15,18,450/- |
| प्रवीण बछावत | वरली | ₹. 14,38,372/- | दिनेश कच्छारा | भुलेश्वर | ₹. 14,12,947/- |
| तेजराज गन्ना | सांताक्रूझ | ₹. 13,42,177/- | रोशनलाल मेहता | उरण | ₹. 12,11,145/- |
| रमेश पामेचा | नाना चौक | ₹. 11,35,902/- | हस्तीमल परमार | मालाड | ₹. 8,25,516/- |

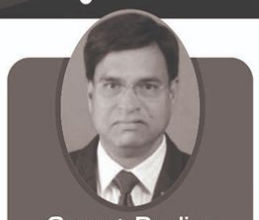

Ganpat Dagliya
Gold Medalist
T.O.T - U.S.A

NICE™
INSURANCE LANDMARK
One Stop Insurance Solution in India !

**Since 40 Years | 30000+ Happy Clients | 11000+ Claims Solved | 300 Awards Won**
**Policies : Health | Jewellers | Factory | Building | Travel | Mutual Funds**

हमारी सेवाएँ पूरे भारत में ऑनलाईन द्वारा ले सकते है।

Chirag Dagliya
M.B.A & Harvard Cert.
T.O.T - U.S.A

A 801/802/803, Shreepati Aradhana, 8th floor, Dr. A. M. Road, Kabutar Khana, Nr. Kalbadevi, Marine Lines (E), Mumbai - 400 002.
Email : info@niceinsure.com | www.niceinsure.com ☎ 022 - 46090022/23/24 Intercom: 5050
**+91 98692 30444 | 98690 50031**

मुनि सुखलाल

# अणुव्रत : सर्वधर्म सद्भाव का मंच

अणुव्रत की आचार संहिता में किसी भी सम्प्रदाय विशेष की छाप नहीं है। यह तो सर्व सम्प्रदाय सम्मत आचार संहिता है। इसके द्वारा किसी सम्प्रदाय विशेष के हित-साधन की अभीप्सा नहीं है। यह तो सर्वधर्म सद्भाव का मंच है। विशुद्ध धर्म की प्रतिष्ठा ही इसका उद्देश्य है। इसीलिए यह एक सार्वभौम धर्म है।

धर्म आज अप्रतिष्ठ हो गया है। धर्म का नाम आते ही पढ़े-लिखे लोग उदासीनता से भर जाते हैं। ऐसा समझा जाने लगा है कि उसका जीवन में कोई स्थान नहीं है। इतना ही नहीं बल्कि यह भी समझा जाता है कि यही सब झगड़ों का मूल है। वास्तव में समझदार लोगों की यह सोच बेबुनियाद नहीं है। धर्म आज कहीं अंधविश्वासों में उलझ गया है तो कहीं स्वार्थभाव में। भले ही आम आदमी आज किसी न किसी धर्म से जुड़ा हुआ है, पर असल में यह जुड़ाव या तो वंश-परम्परा से हो गया है या क्रियाकांड से।

धर्म का सही अर्थ है आत्मशुद्धि, पर आज वह सम्प्रदाय मात्र बनकर रह गया है। धर्म का नाम आने पर आत्मशुद्धि का एहसास ही नहीं होता। बल्कि उसका नाम आते ही सामने कोई सम्प्रदाय आकर खड़ा हो जाता है। इसीलिए आज का बुद्धिवादी धर्म से दूर ही भागता है, उसे दूर से ही नमस्कार करना चाहता है।

### धर्म और राजनीति

कोई जमाना था जब व्यवस्थाओं का संचालन भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से धर्म से ही होता था, पर जब धर्म के कारण व्यवस्थाओं में गड़बड़ी होने लगी, सम्प्रदाय उभरने लगे तो राज्य-व्यवस्था ऊपर आ गयी और धर्म गौण हो गया। आजादी की लड़ाई के समय देश में जिस एकता के दर्शन होते थे, वे सम्प्रदायों के कारण नहीं, राज्य-व्यवस्था के कारण ही होते थे। हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई सभी एकजुट होकर आजादी के लिए अपनी आहुति देने के लिए तत्पर हो जाते थे, पर धीरे-धीरे यह विकास इस तरह से हुआ कि जहाँ राजनीति धर्म के द्वारा शासित होती थी, वहाँ धर्म ही राजनीति के द्वारा शासित होने लगा।

आज तो राजनीति देश पर इस कदर हावी हो गयी है कि धर्म केवल मन्दिरों-मस्जिदों एवं गुरुद्वारों में कैद होकर रह गया है। बल्कि स्थिति तो यह हो गयी है कि धर्म-समारोहों में भी जान तब आती है जब कोई राजनेता मंच पर उपस्थित होता है। यदि किसी कारण से राजनेता वहाँ उपस्थित नहीं भी होता है तो परोक्ष रूप से उसके डोरे हिलते रहते हैं। भले ही इसे राजनीति की प्रभुसत्ता कहें या धर्म की प्रभावहीनता, पर इतना निश्चित है कि धर्म आज अधिकतर राजनीति के सीखचों में बंद है।

इसका यह अर्थ नहीं है कि राजनीति आज पूर्ण रूप से विशुद्ध है। बल्कि राजनीति भी आज सम्प्रदायों के इशारों पर चल रही है। यदि राजनीति अपनी धुरी पर कायम रहती तो वह धर्म में समागत अंधविश्वासों एवं स्वार्थपरताओं को चीरकर एक ऐसे नये युग का सृजन कर सकती थी जिससे आम आदमी का जीवन

यदि राजनीति पर धर्म का अंकुश नहीं रहा तो वह दिग्भ्रांत हो जाएगी तथा धर्म की धारणा के केन्द्र में सम्प्रदाय रहा तो वह भी दिग्भ्रांत हो जाएगा। आज ऐसे धर्म की आवश्यकता है जो न तो सम्प्रदायों से प्रेरित हो और न राजनीति से। बल्कि वह राजनीति को भी पवित्रता दे तथा सम्प्रदाय को भी प्रकाश का पावन धाम बना दे।

सुख-समृद्धिपूर्ण होता, पर वह अपना वैसा चरित्र रूपायित नहीं कर पायी। चूँकि वर्तमान राजनीति का मूलाधार वोट बैंक है, अतः उसका रुझान उधर ही होगा जिधर वोट अधिक बटोरे जा सकते हों।

ऐसी स्थिति में निर्णायक शक्ति सिद्धान्त नहीं बनकर वोट बन जाते हैं और जाने-अनजाने में राजनीति भी सम्प्रदायों की गोद में जाकर अपना त्राण खोजती है। इस दृष्टि से देखा जाये तो आज राजनीति भी अपवित्र हो गयी है। आज वे राजनेता कहाँ हैं जो राजनीति को व्यापार नहीं मानकर सेवा का व्रत मानते थे। वास्तव में यही ममस्या की जड़ है। यहीं से राजनीति पार्टीतंत्र बन जाती है।

**परस्परता**

कहने का अर्थ यह नहीं है कि राजनीति नहीं होनी चाहिए या धर्म नहीं चाहिए। असल में दोनों का अपना अलग-अलग महत्व है। अपने स्थान पर राजनीति की महत्ता है तथा धर्म की भी अपने स्थान पर महत्ता है। बल्कि दोनों को एक-दूसरे की आवश्यकता है। धर्म दीर्घकालीन राजनीति है और राजनीति तत्कालीन धर्म। न तो धर्म के बिना राजनीति चल सकती है और न राजनीतिक सुव्यवस्थाओं के अभाव में धर्म चल सकता है। फिर भी यह तो

जब आदमी का चरित्र विशुद्ध नहीं होता है तभी सारी समस्याएं खड़ी होती हैं। वास्तव में धर्म बुरा नहीं है, वह तो जीवन के लिए आवश्यक प्राण ऊर्जा है। जब भी जीवन इस ऊर्जा से शून्य हो जाता है तो वह समस्या बन जाता है। अणुव्रत शुद्ध धर्म की प्रतिष्ठा का प्रयत्न है। इसीलिए बुद्धिवादी लोग भी इसकी ओर आकर्षित हैं।

आवश्यक है ही कि राजनीति के नाम पर सम्प्रदाय को न थोपा जाये और धर्म के नाम पर सम्प्रदाय को आगे नहीं किया जाये।

यदि राजनीति पर धर्म का अंकुश नहीं रहा तो वह दिग्भ्रांत हो जाएगी तथा धर्म की धारणा के केन्द्र में सम्प्रदाय रहा तो वह भी दिग्भ्रांत हो जाएगा। आज ऐसे धर्म की आवश्यकता है जो न तो सम्प्रदायों से प्रेरित हो और न राजनीति से। बल्कि वह राजनीति को भी पवित्रता दे तथा सम्प्रदाय को भी प्रकाश का पावन धाम बना दे।

अणुव्रत एक ऐसा ही धर्म है। इसकी प्रेरणा न तो राजनीतिक पार्टियां हैं और न कोई सम्प्रदाय। यह तो चरित्र-शुद्धि का एक अभियान है। जब आदमी का चरित्र विशुद्ध नहीं होता है तभी सारी समस्याएं खड़ी होती हैं। वास्तव में धर्म बुरा नहीं है, वह तो जीवन के लिए आवश्यक प्राण ऊर्जा है। जब भी जीवन इस ऊर्जा से शून्य हो जाता है तो वह समस्या बन जाता है। अणुव्रत शुद्ध धर्म की प्रतिष्ठा का प्रयत्न है। इसीलिए बुद्धिवादी लोग भी इसकी ओर आकर्षित हैं। अणुव्रत के समर्थकों-अनुयायियों में एक ओर परम आस्तिक लोग हैं तो दूसरी ओर परम नास्तिक लोग भी हैं, एक ओर पार्टियों के प्रमुख हैं तो दूसरी ओर सम्प्रदायों के प्रमुख भी हैं।

**सर्वधर्म सद्भाव का मंच**

एक सवाल अक्सर उठाया जाता है कि अणुव्रत भी तो एक सम्प्रदाय विशेष के आचार्य की ओर से चलाया जा रहा है, तब यह धर्म कैसे हुआ? इसका सीधा-सा उत्तर है - अणुव्रत की आचार संहिता में किसी भी सम्प्रदाय विशेष की छाप नहीं है। यह तो सर्व सम्प्रदाय सम्मत आचार संहिता है।

इसके द्वारा किसी सम्प्रदाय विशेष के हित-साधन की अभीप्सा नहीं है। यों किसी सम्प्रदाय विशेष के व्यक्ति द्वारा चलाये जाने से ही इसमें सम्प्रदाय प्रवेश कर जाये तब तो अणुव्रत भी अपने आप में एक सम्प्रदाय बन जाएगा। साम्प्रदायिक संकीर्णताओं से ऊपर उठाने के लिए ही भरसक प्रयत्न किया जा रहा है कि न तो यह अणुव्रत अनुशास्ता के सम्प्रदाय को सब पर लादे और न स्वयं में भी कोई खड़ा करे। यह तो सर्वधर्म सद्भाव का मंच है। विशुद्ध धर्म की प्रतिष्ठा ही इसका उद्देश्य है। इसीलिए यह एक सार्वभौम धर्म है। ■

■ जैनेन्द्र कुमार ■

समाज सुधार के लिए शुरू किये गये किसी भी आंदोलन की सफलता का सूत्र है उसकी उपादेयता, प्रासंगिकता और स्वीकार्यता। समाज के सर्वमान्य व्यक्ति यदि उस सुधारवादी आंदोलन की उपादेयता और प्रासंगिकता को मुक्त कण्ठ से स्वीकार कर लेते हैं तो आमजन भी उस आंदोलन के दर्शन का अनुसरण करने की दिशा में अग्रसर होते हैं। अणुव्रत आंदोलन के प्रारंभिक काल से ही तत्कालीन समाज के गणमान्य महानुभावों ने इसकी महत्ता को स्वीकार किया तथा इसे अभिव्यक्ति भी दी। इस माह प्रस्तुत हैं प्रसिद्ध लेखक जैनेन्द्र कुमार के अणुव्रत आंदोलन के संदर्भ में अभिव्यक्त विचार। मानव मन के सूक्ष्म चितेरे जैनेन्द्र कुमार अणुव्रत आंदोलन के शुरुआती दौर से इसके साथ जुड़े रहे। उन्हें 1982 के 'अणुव्रत पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था।

# बाती से बाती जले

अणुव्रत एक नैतिक आन्दोलन है। जैसे बाती से बाती जलती है, नैतिक आन्दोलन में वैसे ही व्यक्ति से व्यक्ति में सुलग पैदा होनी चाहिए। मनुष्य का चरित्र मूल अधिष्ठान है। अणुव्रत आन्दोलन को सर्वथा स्व-शासित अर्थात् आत्म-शासित समाज-व्यवस्था को उदय में लाने के लक्ष्य को सदा अपने समक्ष उपस्थित करके चलना है।

व्रत के बिना चलना ऐसी यात्रा है, जिसमें मानो दिशा नहीं है, न मंजिल है। इसको भटकना कह सकते हैं। स्वभाव से ही मनुष्य में नाना विकल्प उठते हैं। वह इधर भी चलना चाहता है, उधर भी चलना चाहता है। वह पाता है कि उसमें इच्छाएं अनेक हैं और वे परस्पर विरोधी तक हैं। ऐसी अवस्था में उसे एक ही सहारा है कि वह संकल्प प्राप्त करे। व्रत उस संकल्प का नाम है, जिसके हम कर्ता नहीं रह सकते। अपने संकल्प को तो हमी तोड़ भी सकते हैं।

अक्सर होता है कि मन का बनाया संकल्प हमारे निकट एक विकल्प रह जाता है, अर्थात् संकल्प में बल होता है अहंता का और अहं तो मायावी वस्तु है। यानी अपने संकल्पों को तोड़ने के बहाने उस अहं में हम नये-नये संकल्प खड़े कर सकते हैं, किन्तु व्रत संकल्प से बढ़कर है, व्रत टूटता नहीं। वह विवेक की आवाज है; जिसको व्रत का शब्द देकर हमने अटल कर दिया है। ऐसा व्रत हमारे पास है तो साफ है कि संकट के समय हम बेसहारा नहीं रह जाएंगे। हवाएं आती हैं और हमें बहा ले जाती हैं। इच्छाओं के उद्वेग और आवेग हमें झकझोर डालना चाहते हैं। आंधी में आप ही सोचिए कि टूटा पत्ता क्या करे? वह तो इधर-उधर उड़ता ही रह सकता है, लक्ष्य-साधन तो उससे हो नहीं सकता; पर आदमी के सामने तो लक्ष्य है, वह इधर-उधर भटके और भटकता ही रहे, तब तो उसकी मनुष्यता ही असिद्ध रहती है, लेकिन उसे बढ़ना है और बढ़ते चलना है। चलकर किसी ध्येय तक पहुँचना है तो यह भला कैसे सम्भव हो सकता है, जब तक कोई निश्चित संकेत उसके पास न हो। व्रत से उसे वही दिशा-संकेत मिलता है। उसके सहारे निष्ठा पैदा होती है और गति, भ्रमित गति न रहकर प्रगति बनती है।

अणुव्रत यानी व्रत का आरम्भ। यह कोई ऐसा आदर्श नहीं है, जिसे अव्यवहारी कहकर टाल दिया जाये। सारा व्यवहार इसके साथ टिक सकता है, बल्कि देखेंगे कि व्यवहार उससे पुष्ट

बनता है। जीवन बन्द नहीं होता, प्रत्युत व्यवस्थित होता है। अन्तर विवेक वह अंकुश नहीं है, जो हमारी जीवन-चेतना को क्षत-विक्षत करता हो; वह तो उल्टे चैतन्य को स्वस्थ करता है। वह कभी प्राण वेग को कुण्ठित करने वाला नहीं बनता है, बल्कि वह उसे ऊर्जस्व करता है।

यहाँ चेतावनी जरूरी है। बहुत से मान लिये गये विधि-निषेध अक्सर जीवन के तेज को मूर्च्छित करते हुए देखे जाते हैं। पश्चिम की ओर से पूर्व पर, विशेषकर भारतवर्ष पर यह आक्षेप रहा है। पश्चिम की प्रगति पिछली दो शताब्दियों में आश्चर्यकारक रही है। कुछ विचारकों की राय में इसका कारण जीवन के प्रति उनका मुक्त भाव है। निषेधों के बन्धन से उसे जकड़ा नहीं गया है। इसलिए वह खुलकर उठ सकी और चारों ओर बढ़ सकी। उठते हुए पश्चिम के आगे पूर्व चकित और स्तब्ध रह गया है। पश्चिम के गति-वेग के आगे उसे पराजित होना पड़ा है। इसलिए माना जाता है कि जीवन की वह पद्धति जहाँ नाना नियमों और निषेधों से उसे बांधा जाता है, विकास को कुण्ठित करने वाली है और परिपूर्णता की ओर ले जाने वाली नहीं है।

यह चेतावनी असंगत नहीं है और इसीलिए शुरू हमें व्रत के आरम्भ से करना है अर्थात् किसी अहंमन्यता में से व्रत के विचार को नहीं आना चाहिए। ऐसी हठवादिता तो जकड़ भी सकती है, लेकिन यदि मुक्त विवेक का निर्णय हो तो वह किसी प्रकार जीवन की हानि नहीं करेगा, प्रत्युत उत्कर्ष ही साधेगा।

जीवन-चेतना का हमारे द्वारा व्यर्थ इधर-उधर अपव्यय हुआ करता है। वह बचाना जरूरी है। सोचिए कि किनारा यदि नदी का या नहर का न हो तो क्या हो? ऐसी नदी सागर तक नहीं पहुँच सकती, न विशेष उपयोगी रह सकती है। यह सही है कि नदी स्वयं अपना किनारा बनाती चलती है, व्रत जीवन-प्रवाह को इसी तरह किनारा देते चलते हैं और सूखकर नष्ट होने की सम्भावना से बचाये रखते हैं।

स्पष्ट ही आज दो प्रकार की जीवन पद्धतियां देखी जाती हैं। उनके नीचे दो तत्त्ववाद और दो दर्शन खड़े हो गये हैं। किन्तु प्रश्न तत्त्ववाद का नहीं, अपितु वह तो तात्कालिक है। प्रत्यक्ष व्यवहार का प्रश्न है कि इन परस्पर सम्बन्धों को क्या आधार दें? योगवाद का समर्थन तात्त्विक रूप से ही हो सकता है। भोग को नितान्त निषेध मानकर यहाँ चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है। भोग सामने रखकर चलने को ही नियम मान लिया जाये तो क्या समाज की कोई परिकल्पना सम्भव है? स्पष्ट है कि संयम के बिना भोग ही असिद्ध है। मनमानापन चलाने की असमर्थता से मानव-जीवन का आरम्भ है। पशु को ही इसकी छूट है। इसीलिए जहाँ वह रहता है, उसे जंगल कहते हैं। लेकिन मनुष्य को समाज में रहना पड़ता है। समाज यानी जहाँ परस्पर निर्वाह है, जहाँ आपसी आदान-प्रदान की कुछ राजनीति है।

प्रश्न उसी आपसीपन की आवश्यकता में से उत्पन्न होता है। नागरिकता और सामाजिकता पनप नहीं सकती, अगर आदमी मन

जीवन-चेतना का हमारे द्वारा व्यर्थ इधर-उधर अपव्यय हुआ करता है। वह बचाना जरूरी है। सोचिए कि किनारा यदि नदी का या नहर का न हो तो क्या हो? ऐसी नदी सागर तक नहीं पहुँच सकती, न विशेष उपयोगी रह सकती है। यह सही है कि नदी स्वयं अपना किनारा बनाती चलती है, व्रत जीवन-प्रवाह को इसी तरह किनारा देते चलते हैं और सूखकर नष्ट होने की सम्भावना से बचाये रखते हैं।

की रोकथाम न कर सके। यह रोकथाम ऊपर कानून के बल से भी की जा सकती है, पर इसी से वह पूरी सफल और सार्थक नहीं होती। सिपाही की वजह से ही चोर चोरी न कर पाएगा तो समाज में दो ही वर्ग रह जाएंगे। एक अपराध करने की सुविधा चाहने वालों का, दूसरा उस सुविधा को बलात् अपने हाथ में रखना चाहने वालों का। यह स्थिति मानव के और उसकी संस्कृति के लिए शोभाजनक नहीं है।

व्रत स्वेच्छा में से प्राप्त होता है, यानी उससे दो ओर से बचाव होता है। अपराध भाव से और दमन की आवश्यकता से। दमन द्वारा अपराध न होने की रीति-नीति अपराध वृत्ति को कभी काट नहीं पाएगी। सूक्ष्मता से देखें तो दमन से अपराध की जड़ें गहराई में और खिंचती ही गयी हैं। और उसकी बेल फैलती ही गयी है। व्रत का विचार उन जड़ों को काटने का ही उपाय है।

अणुव्रत का आन्दोलन के रूप में आचार्य तुलसीजी के नेतृत्व में प्रचार हो रहा है। यह एक नैतिक आन्दोलन है। जैसे बाती से बाती जलती है, नैतिक आन्दोलन में वैसे ही व्यक्ति से व्यक्ति में सुलग पैदा होनी चाहिए। मनुष्य का चरित्र मूल अधिष्ठान है, उस पर ही समाज-निर्माण या समाज-क्रान्ति खड़ी होगी और उस आन्दोलन की सार्थकता यही नहीं है कि चोर बाजारी न हो, रिश्वत न हो, बल्कि नैतिक आन्दोलन को यहाँ तक जाना है कि भीतर का यानी ईश्वरीय कानून व्यक्ति में और समाज में इतना जागृत और ज्वलन्त रहे कि ऊपर डण्डे और जेल के जोर से मनवाया जाने वाला कानून अनावश्यक हो जाये। जब युद्ध मात्र विश्व-मानस के लिए असहनीय हो जाये और अस्त्र-शस्त्र में विज्ञान का और धन का उपयोग कोरी मूर्खता दीखने लगे, शासक जब स्वयं आत्म-शास्ता हो और प्रशासित अनुभव करने की आवश्यकता में कोई न रह जाये।

अणुव्रत आन्दोलन को सर्वथा स्व-शासित अर्थात् आत्म-शासित समाज-व्यवस्था को उदय में लाने के लक्ष्य को सदा अपने समक्ष उपस्थित करके चलना है। ■

# शब्द कभी मरते नहीं हैं

धर्म, जाति, भाषा व क्षेत्रीयता की सरहदों को लांघकर शब्द ही शाश्वत शक्ति और भक्ति का निर्माण करता है। राजपाट और सुख-दुःख बदलते रहते हैं लेकिन रेत और पानी का रिश्ता कभी नहीं बदलता। धरती और आकाश की इच्छाएं कभी नहीं हारतीं और शब्द की विश्वसनीयता का गुरुत्वाकर्षण कभी नहीं मरता।

जिस तरह बहता हुआ पानी और बोलता हुआ शब्द अपना रास्ता खुद बनाते हैं, उसी तरह साहित्य में समाज और समय का संवाद भी अनवरत जारी रहता है। कौन लिखता है, कौन पढ़ता है और कौन बोलता है, उसकी प्रतिध्वनियां ही मनुष्य के मन और विचार में संवेदना का संसार रचती हैं। ज्ञान और विज्ञान के सभी विकास और सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक समता और विषमता के सभी कुरुक्षेत्र, केवल सृजन और संघर्ष से उदित शब्द ही लड़ते हैं।

आज 21वीं शताब्दी के सूचना और प्रौद्योगिकी के हृदयहीन बाजार में इसीलिए हमें कभी-कभी ऐसा भी लगता है कि शायद शब्द कहीं खो गये हैं, मौन हो गये हैं या फिर संवेदनहीन हो गये हैं। लेकिन धैर्य से देखें और सोचें तो दिखायी देगा कि समय का प्रत्येक सत्य, आज भी एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के बीच अकेला ही संचरण कर रहा है और सृजन के नित्य नये सेतु और वाद-विवाद तथा प्रतिवाद के आधार भी बना रहा है। साहित्य से समाज तक की यह शब्द यात्रा परिवर्तन की एक ऐसी बयार है जो हजारों भाषाओं के साथ करोड़ों की जन चेतना में सद्भाव, सहिष्णुता और मानवीय सरोकारों की खिड़कियां खोलती रहती है। कोई 5 हजार साल से सभ्यता और संस्कृति का उज्ज्वल पथ यह साहित्य ही आलोकित कर रहा है क्योंकि शब्द कभी मरता नहीं है और नूतन विचरण करता रहता है।

राजस्थान को भारत और भारत को विश्व यह साहित्य का सत्य, शिव और सुंदर ही बनाता है और धर्म, जाति, भाषा व क्षेत्रीयता की सरहदों को लांघकर शब्द ही शाश्वत शक्ति और भक्ति का निर्माण भी करता है। राजस्थान ही में कोई दो हजार वर्षों की शब्द और साहित्य की चेतना यह बताती है कि राजपाट और सुख-दुःख बदलते रहते हैं लेकिन रेत और पानी का रिश्ता कभी नहीं बदलता। धरती और आकाश की इच्छाएं कभी नहीं हारतीं और शब्द की विश्वसनीयता का गुरुत्वाकर्षण कभी नहीं मरता।

आज हमारे समाज में दुर्भाग्य से मनुष्य और प्रकृति के बीच एक ऐसा मनमुटाव बढ़ रहा है कि लोग अपने भूत, भविष्य और वर्तमान की त्रिकाल छाया से ग्रस्त हैं और सामाजिक, आर्थिक गैर बराबरी के जलवायु परिवर्तन से व्याकुल और शोकाकुल अधिक हैं। इधर टेक्नोलॉजी लगातार मनुष्य को दिशाहीन और

पैसे की खोज में समाज को संवेदनहीन और केवल सुख-शांति की आवश्यकता हमारे जीवन दर्शन को अत्यधिक असुरक्षित बना रही है तो उधर सत्ता और व्यवस्था की आदिम हिंसक प्रवृत्तियां, शब्द और सत्य पर निरंतर हमले कर रही हैं। फिर अराजकता के बीच अविश्वसनीयता का एक ऐसा माहौल अब बन गया है कि वर्षा ऋतु में कोयल जैसे मौन हो जाती है और मेढ़क जैसे मुखर-वाचाल हो जाते हैं, वैसे ही लेखक और साहित्यकार भी बाजार, मीडिया और राजनीति के कोलाहल में आजकल अपने को अनसुना महसूस कर रहा है।

लेकिन मित्रो! आप सब जानते हैं कि शब्द की नदी सरस्वती भी समय और अज्ञान के अंधेरे में कई बार मन से ओझल हो जाती है लेकिन वह देर-सेवर बूँद-बूँद बनकर, अग्नि परीक्षा का सृजन भी करती है और जन्म से मृत्यु तक मनुष्य की प्राण वायु बनकर बोलती भी है। वैदिक ऋचाओं से लेकर मीरा बाई के पदों तक और रामायण से लेकर महाभारत तक यह शब्द ही साहित्य और समाज को समय के सभी प्रश्नों से मुठभेड़ करना सिखाता है।

यह शब्द ही कभी निर्गुण और सगुण धारा बनकर बहते हैं तो यह सृजन का सरोकार ही कभी युद्ध और शांति का भाग्य लिखता है तो यह क्रौंचवध ही कभी शिकारी को ऋषि वाल्मीकि बनाता है तो कभी रवीन्द्रनाथ बनकर घर-घर में गाया जाता है तो कभी स्वामी विवेकानंद बनकर विश्व को धर्म की सनातन सहिष्णु व्याख्या देता है तो कभी भीमराव अंबेडकर बनकर मनुष्य होने का अधिकार और सम्मान भी सिखाता है।

इस तरह शब्द कभी निरर्थक, लाचार और उदास नहीं होता तथा वह उपेक्षा और विस्मृति के गर्भ में रहकर भी अधिक प्रखर और अमृत धारा बन जाता है। ऐसे में शब्द और साहित्य का लोकतंत्र सदैव राजनीति के आगे चलने वाली मशाल ही होता है और राजा की हिंसा में नहीं अपितु प्रजा (जनता) की अहिंसा में ही फलता-फूलता है।

सामाजिक चेतना का प्रथम सृजनकर्ता और निर्माता यह शब्द ही है और साहित्यकार इसी पुनर्जागरण का प्रतिफल रचता और गाता है क्योंकि मनुष्य का शाश्वत सत्य तो गरीब और सर्वहारा की मंगलध्वनि में ही युगों-युगों तक प्रवाहमान बना रहता है।

अतः घबराइए मत! शब्द और साहित्य को समाज के भीतर व्याप्त गैर बराबरी, हिंसा-प्रतिहिंसा और झूठ-सच को उजागर करने में अर्पित करते हुए वर्तमान समाज को भविष्य का नया सपना दीजिए। शब्द और साहित्य की प्रासंगिकता फिर आज यही है कि यथास्थिति को बदलने का जोखिम उठाएं। राग दरबारी को छोड़कर राग भैरवी और राग कल्याणी गाएं। मनुष्य होने की गरिमा का महाकाव्य सुनाएं और दसों दिशाओं में व्याप्त मुक्ति संग्राम की जनचेतना को एकजुट बनाएं।

जयपुर में रहने वाले लेखक वरिष्ठ साहित्यकार व पत्रकार हैं। आप राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष रह चुके हैं।

# अणुव्रत अनुपम यंत्र

विष्णुकान्त झा - वैशाली (बिहार)

जनता का, जनता के द्वारा,
जन-जन के हित तंत्र।
लोकतंत्र की परिभाषा है,
अति पुनीत यह मंत्र।

कैसे हो फलीभूत यह,
लोकतंत्र स्वतंत्र।
आचार्य तुलसी ने दिया,
अणुव्रत अनुपम यंत्र।

क्रोध, लोभ अरु ईर्ष्या,
जीवन के ये शूल।
अणुव्रत के अनुष्ठान से,
फेंको उखाड़ समूल।

अणुव्रती लेता नहीं,
जाति-धर्म का नाम,
चरित्र के आधार पर,
करता है मतदान।

हो अवैध मतदान नहीं,
रखता इसका ध्यान।
मिथ्याक्षेप से दूर रहे,
करे नहीं अपमान।

अभ्यर्थी का चाहिए,
होना हृदय उदार।
सेवा-भाव से युक्त हो,
सभी अर्थ व्यापार।

छलबल, धनबल, बाहुबल,
रोब दाब अनाचार।
मत प्राप्ति के लिए करे नहीं,
इन तत्त्वों का उपचार।

रमेश चंद शर्मा

# सर्व धर्म समभाव सख्य सहयोग संवाद

सर्व धर्म समभाव का विचार आचरण में आ जाये तो दुनिया को हिंसा, नफरत, द्वेष, भेद, भय से मुक्ति दिलाने में सहायक सिद्ध हो सकता है। आत्म बल, आत्मिक बल को पशु बल, बाहु बल से नहीं जीता जा सकता है। सत्य, प्रेम, करुणा की शक्ति सच्ची, सही शक्ति है। यह क्रियात्मक, सक्रिय शक्ति है। इसे जागृत करने की आवश्यकता है।

भारतीय दर्शन, संस्कृति और परम्परा हमेशा सर्व समावेशक रही है। यहाँ खण्ड का नहीं, पूर्ण का चिंतन हुआ है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का उद्घोष भारत भूमि से ही हुआ है। हमारा ध्येय वाक्य 'सत्यमेव जयते' तथा 'अनेकता में एकता' का रहा है। यहाँ प्रकृति भी विविधता से भरपूर है। विविधता सहज सुलभ शक्ति, ऊर्जा है। आज देश में संकीर्णता, यत्र-तत्र असहिष्णुता, अलगाव, विद्वेष, भेद, हिंसा, द्वेष, नफरत, भय का वातावरण भी दिखायी देता है। ऐसे में सर्व धर्म समभाव की राह, विचार, विश्लेषण दिशा-दर्शक हो सकते हैं।

विश्व की भिन्न-भिन्न जमातों को अपने में समा लेने वाला भारत एक अद्भुत देश है। इस देश ने कभी आगे बढ़कर दूसरे देश पर आक्रमण नहीं किया, बल्कि बाहर से आने वालों – शक, हूण, पारसी, मुसलमान, यहूदी, ईसाई आदि सबका स्वागत ही किया। इसलिए रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भारत को महामानव-सागर कहा है। प्रेम के बिना सबको समा लेने की कला घटित नहीं हो सकती। इस भारत-भूमि में प्राप्त प्रेम के कारण सबको लगा कि यह हमारा घर है। कभी-कभी दो समूह, जमात एकत्र होती हैं तो आपस में कुछ संघर्ष भी होता है, परन्तु अंत में शुद्ध प्रेम ही कायम रहता है। वह प्रेम ही भारत का आधार है। भारत में एक मिश्र (मिली-जुली), साझा संस्कृति का निर्माण हुआ है। मुस्लिम, ईसाई, पारसी, यहूदी, जैन, बौद्ध, सिख आदि संस्कृतियों का योगदान स्वीकार करके भारत की संस्कृति सम्पन्न और समृद्ध हुई है। संसार के किसी भी भाग से आये हुए अच्छे विचारों को अपने में समाहित कर उसे अपना रूप देना ही भारत की विशेषता रही है।

भारत की पहचान गंगा, गौ, गाँव, गौतम, गांधी के रूप में रही है। दुर्भाग्य है कि आज भारत की यह पहचान खतरे में है। विकास के नाम पर जो बिगाड़ खाता चल रहा है, उसने इस प्रक्रिया को और अधिक विस्तार दिया है। ऐसे में सर्व धर्म समभाव का विचार इस स्थिति से निपटने, उबरने का एक सशक्त उपाय नजर आता है। इसके लिए धर्म क्या है? इसके मर्म, प्रकृति, स्वभाव, संस्कार, मानसिकता, भावना पर चिंतन-मनन, सोच-समझ, विचार, विश्लेषण करने की गहन आवश्यकता है। कहा गया है - **'धारयति इति धर्मः।'** जो धारण करे, वह धर्म। धर्म सत्य, कर्त्तव्य, मूल्य, मूल, मर्यादा, स्वभाव है। धर्म का मतलब है–सदाचार, संयम, करुणा, सद्भावना, आचरण। धर्म का व्यापक अर्थ है। धर्म का पालन करें तो प्रकृति, समाज का पालन-पोषण बहुत अच्छे सामर्थ्यपूर्ण हर्षोल्लास पूर्वक हो सकता है।

ऋग्वेद कहता है -

"मिलकर चलो, मिल-जुलकर बात करे, तुम्हारे मन एक साथ जानें, तुम्हारे यत्न साथ-साथ हों, तुम्हारे हृदय एकमत हों, तुम्हारे मन संयुक्त हों, जिससे हम सब सुखी हो सकें।"

क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा - इन पंच तत्त्वों का सबका अपना-अपना धर्म है। प्रकृति और प्रकृति में उपस्थित सभी की उत्पत्ति पंच तत्त्वों से ही हुई है। प्रत्येक वस्तु, प्राणी का अपना-अपना धर्म है। विभिन्न विचारधाराओं ने धर्म की व्याख्या की है।

ऋग्वेद कहता है -

"मिलकर चलो, मिल-जुलकर बात करो, तुम्हारे मन एक साथ जानें, तुम्हारे यत्न साथ-साथ हों, तुम्हारे हृदय एकमत हों, तुम्हारे मन संयुक्त हों, जिससे हम सब सुखी हो सकें।"

अथर्ववेद में कहा गया है -

"यह हमारी मातृभूमि विभिन्न भाषा बोलने वाले और विभिन्न धर्मों को अपनाने वाले लोगों को समान रूप से शरण देती है।"

मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षण बताये गये हैं -

**"धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचं इन्द्रियनिग्रहः।**
**धीर्विद्या सत्यं अक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।"**

अर्थात् धृति (धैर्य), क्षमा, दम (काबू), चोरी न करना, भीतरी-बाहरी सफाई, इन्द्रियों का निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य और क्रोध न करना। ये धर्म के 10 लक्षण हैं।

संत तुलसीदास जी ने कहा -

**"दया धरम का मूल है, पाप मूल अभिमान।**
**तुलसी दया न छोड़िए, जब तक घट में प्राण।।"**
**"परहित सरिस धर्म नहीं भाई। परपीड़ा सम नहीं अधमाई।।"**
**"धरम न दूसर सत्य समाना। आगम निगम पुरान बखाना।।"**

जैन तीर्थंकरों ने कहा-

**"अहिंसा परमो धर्मः" - अहिंसा सर्वोच्च धर्म है।**

गुरु नानक देव कहते है -

**"सभनी घटी सहु वसै, सह बिनु घटु न कोई"** - सभी शरीरों में प्रभु बसता है, बिना प्रभु के कोई शरीर नहीं है।

बौद्ध दर्शन करुणा का पाठ पढ़ाता है।

इस्लाम कहता है -

**"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर रहीम।"**- दयावान को करूं प्रणाम, कृपावान को करूं प्रणाम। विश्व सकल का मालिक तू, अंतिम दिन का चालक तू।

ईसाईयत की आवाज -

"ईश्वर प्रेम है और उसकी इच्छा है कि सब मनुष्यों की रक्षा हो और वे सत्य का ज्ञान प्राप्त करें। शांति का वाद्य बना तू मुझे, हो तिरस्कार वहाँ करूं स्नेह, हो हमला तो क्षमा करूं मैं, हो जहाँ भेद अभेद करूं, हो जहाँ भूल मैं सत्य करूं।"

पारसी बोलता है-

**"हे प्रभो तू उत्तमोत्तम धर्म संदेशा सुना,**
**ताकि नेकी की राह चल मैं तेरी महिमा गा सकूं।"**

यहूदी कहता है -

**"धन्य प्रभु है नाम तिहारा, नित्य निरंतर सांझ सवेरा,**
**सारे जग से है तू अपार, स्वर्ग से कीर्ति तेरी गुरुतर।"**

सार रूप में, एक सूत्र में बाँधने वाली शक्ति, एक बनाये रखने वाली शक्ति ही धर्म है। दुनिया को एक बनाये रखे, वही धर्म है। संतुलित रहना धर्म है। धर्म के त्रिरत्न - सत्य, प्रेम, यज्ञ (त्याग) हैं। सामूहिक जीवन में प्रेम जरूरी तत्त्व है। सत्य, प्रेम रचनात्मक शक्ति है। स्वधर्म को पहचानना। कर्त्तव्य-मूल को पहचानना। स्वधर्म के बिना धर्म नहीं रह सकता। दोनों में एकरूपता है। स्वधर्म से पिण्ड और समग्र सत्ता में स्वस्थ संबंध बनता है जिससे व्यक्ति और समग्र सत्ता - दोनों कायम रहती है। स्वधर्म जितना सर्व के लिए आवश्यक है उतना ही 'स्व' के लिए भी आवश्यक है।

सत्य ही ईश्वर है। अहिंसा सत्य का मूल स्रोत है। अहिंसा के बिना सत्य, धर्म का पालन असंभव है। हिंसा से सत्य को साबित, प्रमाणित नहीं कर सकते। साधन और साध्य एक हैं। शुद्ध साधन - शुद्ध लक्ष्य। सभी धर्मों की एक ही बुनियाद है और वह है सत्य, प्रेम, करुणा। बाहरी आधार चाहे भिन्न हों।

दुनिया में अनेक पंथ, सम्प्रदाय, समूह हैं। प्रत्येक समूह में अनेक धाराएं हो सकती हैं - उदार धारा, संकीर्ण धारा, मध्यम धारा, मिश्रित धारा, अवसरवादी धारा, सुप्त धारा आदि। कुछ धाराओं का अपना विशेष आग्रह नहीं होता। वे बहाव में बह जाती हैं। जैसा माहौल देखा, उसी के अनुसार अपने को दिखाने लगती हैं। कभी-कभी इनकी भूमिका बहुत ही खतरनाक साबित हो जाती है।

सर्व धर्म समभाव का अर्थ है आप अपनी आस्था, विश्वास को मानते हुए दूसरे की आस्था, विश्वास को चोट नहीं पहुँचाओ। सबको अपनी-अपनी तरह से अपनी-अपनी आस्था, विश्वास को रखते हुए दूसरे की आस्था, विश्वास का सम्मान करना है। हम कोई ऐसा तरीका नहीं अपनाएं जो दूसरे को दुःख, हानि, नुकसान पहुँचाये। सभी धर्मों का हो सम्मान, मानव मानव एक समान। एक-दूसरे की आस्था, विश्वास को जानें, समझें, पहचानें। उनसे संपर्क संवाद कायम करें।

यथासंभव एक-दूसरे के पर्व, त्योहार, कार्यक्रम में शामिल हों। एक-दूसरे को जानें, समझें, पहचानें। आपसी मेलजोल बढ़ाएं। परस्पर मित्रता बढ़ाएं। सभी धार्मिक स्थल सम्मान योग्य हैं। उनके प्रति सम्मान व्यक्त करें। अफवाह, झूठ, दुष्प्रचार से बचें। साम्प्रदायिकता, हठधर्मिता, रूढ़ि, दिखावा, मैं या मेरा ही श्रेष्ठ, अहं भाव असुरक्षा और भय पैदा करते है। यह भाव अपने समूह तक सीमित रहने का आग्रह रखता है। कट्टरता, संकुचन बढ़ाता है। समाज में अलगाववाद को बढ़ावा देता है।

सभी समूह में अच्छाइयां, मजबूती, बुराइयां, त्रुटियां, कमजोरी मौजूद हैं। अपने समूह, धर्म की कमजोरियां दूर करें, हटाएं। दूसरे समूह, धर्म के गुणों को देखें, समझें। उसे मान्यता, सम्मान दें। अपनी बुराई तथा दूसरे की अच्छाई पर गौर करें।

बुराई और बुरा, पाप और पापी, अन्याय और अन्यायी, जुल्म और जुल्मी, दोष और दोषी, अत्याचार और अत्याचारी दोनों अलग-अलग हैं। हमें बुराई, पाप, अन्याय, जुल्म, दोष को हटाना, समाप्त करना है। बुरे, पापी, अन्यायी, जुल्मी, दोषी, अत्याचारी को बदलना है। उसमें बदलाव लाना है। बदला नहीं, बदलाव चाहिए। इससे ही समाज, देश-दुनिया में सुधार संभव है।

इतिहास में तथा अपने समय में भी बदलाव के अनेक प्रेरक प्रसंग, उदाहरण हमारे समक्ष हैं। इनसे हमें प्रेरणा लेकर हिम्मत, विश्वास के साथ इस विचार को बढ़ावा देना होगा। अन्याय, अत्याचार, हिंसा, द्वेष, असमानता, बुराई, भय को दूर करना और न्याय, करुणा, प्रेम, अहिंसा, सत्य, निर्भय, समतामय समाज बनाना हमारा कर्त्तव्य है। इसका प्रयास ही हमारी राह है। व्यवहार की दुनिया में सत्य, धर्म, ईश्वर, प्रेम, करुणा, सद्भावना, सौहार्द, साझापन, एकता, सहयोग, सहकार, संवाद, संपर्क को सहज, सरल, सुलभ बनाना ही सर्व धर्म समभाव का सही रास्ता है। यह व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन दोनों में सहायक है। व्यक्तिगत मोक्ष और समाज कल्याण का रास्ता अलग नहीं है। प्रकृति के नियम सभी पर समान रूप से लागू हैं।

सर्व धर्म समभाव का विचार आचरण में आ जाये तो दुनिया को हिंसा, नफरत, द्वेष, भेद, भय से मुक्ति दिलाने में सहायक सिद्ध हो सकता है। आत्म बल, आत्मिक बल को पशु बल, बाहु बल से नहीं जीता जा सकता है। सत्य, प्रेम, करुणा की शक्ति सच्ची, सही शक्ति है। यह क्रियात्मक, सक्रिय शक्ति है। इसे जागृत करने की आवश्यकता है। प्रेम से सृष्टि होती है, वैर से विनाश। सर्व धर्म समभाव के लिए सख्य, सहयोग, संवाद की राह अपनाकर हम आगे बढ़ सकते हैं।

दिल्ली में रहने वाले लेखक वरिष्ठ गांधीवादी चिंतक व कार्यकर्ता हैं। वे गांधी युवा बिरादरी के माध्यम से देशभर में गांधी का संदेश फैला रहे हैं।

काव्य

# संस्कारों का मैं त्योहार हूँ

डॉ. राजमती पोखरणा सुराणा - भीलवाड़ा

मैं अणुव्रत हूँ मैं ही जीवन का आधार हूँ,
संस्कार का अवदान मैं सुन्दर उपहार हूँ।

हार नहीं मानूँगा जब तक बदल न दूँ,
तो तुम जीतोगे कैसे मुझसे मैं संस्कार हूँ।

मुझे अपनाओगे नहीं तो तुम हँसोगे कैसे,
मैं दुःखी दिखूँगा ही नहीं वो आकार हूँ।

तो तुम सुख की अनुभूति करोगे कैसे,
मैं ही नियमों का अप्रतिम संसार हूँ।

अपमानित नहीं, सम्मानित कराता हूँ मैं,
सुन्दर स्वर्णिम संस्कारों का मैं त्योहार हूँ।

गिरीश पंकज

# वैज्ञानिक प्रगति का मानव जीवन पर प्रभाव

जीवन के हर क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रगति के नये पड़ाव हमें दिखायी देते हैं। मनुष्य समाज भौतिक दृष्टि से काफी समृद्ध होता चला जा रहा है, लेकिन जैसे-जैसे भौतिकता घनीभूत हो रही है; नैतिकता का क्षरण हो रहा है। भौतिकता के साथ-साथ अगर नैतिकता भी समानांतर रूप से चलती रहे, तो यह पूरी दुनिया सुखी हो सकती है।

प्रगति मानव जीवन का स्थायी भाव है। अगर मनुष्य के जीवन में प्रगति की आकांक्षा न होती, तो वह आज भी कंदराओं में जीवन व्यतीत कर रहा होता। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। मनुष्य और पशु में यही अंतर है। मनुष्य चेतनासंपन्न जीव है, इसीलिए उसने अपनी पाषाणकालीन आदिम अवस्था से मुक्ति पायी और नित नवीन अनुसंधानों के द्वारा अपने आपको प्रगति पथ पर अग्रसर करता रहा। हमारे आसपास जितने भी उपकरण विद्यमान हैं, वे सब वैज्ञानिक प्रगति के ही तो सुपरिणाम हैं। इसके कारण आज हम गर्व से अपने आपको हाईटेक कहते हैं।

सच तो यह है कि मनुष्य चैन से बैठकर जीने वाला जीव नहीं है। अपनी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण वह निरंतर अनुसंधान करता है, खोज करता है; खोज में रत रहता है। ऐसा नहीं है कि हर व्यक्ति खोज अथवा वैज्ञानिक अनुसंधान में लगा रहता हो, सामान्य व्यक्ति का अनुसंधान अलग किस्म का रहता है। वह अपनी सुख-सुविधाओं की खोज में रत रहता है। नाकारा व्यक्ति बैठे-बैठे खाने का, भोग-विलास का जुगाड़ कैसे हो, इसकी तलाश में रहता है। उसी में वह सुख खोजता है, लेकिन कुछ लोग आत्मकेंद्रित नहीं होते। वे स्वार्थी नहीं, परमार्थी और पुरुषार्थी होते हैं। वे समूची मानवता का खयाल करके लोक कल्याण हेतु अनुसंधान करते हैं। उसी का सुपरिणाम है कि आज हम विद्युत की उपलब्धि को देख रहे हैं, जो हमारे जीवन का अब एकदम अनिवार्य हिस्सा है। दूरसंचार की दुनिया में अनुसंधान करते-करते हम इंटरनेट और मोबाइल तक जा पहुँचे। मानव जीवन को बचाने के लिए अनेक रोगों से मुक्ति के उपाय हमारे वैज्ञानिकों ने खोजे। प्रगति का आलम यह है कि धरती से ऊपर उठकर हमने अंतरिक्ष तक की दूरी नाप ली। कहने का आशय यह है कि वैज्ञानिक प्रगति हमारा सहज स्वभाव है। बेशक हर व्यक्ति वैज्ञानिक नहीं होता, लेकिन मुट्ठी भर लोग इस दिशा में निरन्तर सक्रिय रहते हैं। उन्हीं के श्रम से किये गये अनुसंधानों का आनंद हम सब ले रहे हैं।

तमाम तरह की वैज्ञानिक प्रगति का लाभ लेते हुए इसका सकारात्मक-नकारात्मक प्रभाव भी हमारे जीवन पर पड़ता है। प्रगति का आलम यह है कि हमने परमाणु बम भी बनाये लेकिन यह परमाणु बम मानव प्रगति में सहायक होने के बजाय दूसरे देश को भयग्रस्त करने के काम में अधिक आ रहा है।

कुछ देशों ने परमाणु बम बनाकर मानो खुद ही आत्मघाती कदम उठाये। ऐसी प्रगति किस काम की, जो विनाश का कारण बने। जैसा धमाका अमेरिका ने जापान में किया था परमाणु विस्फोट करके, उसका खमियाजा आज तक हिरोशिमा-नागासाकी के लोग भुगत रहे हैं।

वैज्ञानिकों ने निरन्तर अनुसंधान करके अनगिनत उपलब्धियां हासिल कीं, लेकिन कुछ का जीवन में विपरीत असर भी पड़ते देखा। जब तक वैज्ञानिक प्रगति के साथ नैतिक मूल्यों का समावेश नहीं होगा, तब तक आविष्कारों का दुरुपयोग रोका नहीं जा सकता।

वैज्ञानिक प्रगति ने मनुष्य को आलसी भी बनाया है। अब बहुत सारा सिस्टम रिमोट से संचालित हो रहा है। टीवी का रिमोट तो फिर भी समझ में आता है कि तमाम तरह के चैनल हम रिमोट के सहारे बदलते रहते हैं लेकिन अब तो बिजली भी रिमोट से चालू-बंद होने लगी है, दरवाजे तक रिमोट से कंट्रोल होते हैं। इसलिए लोग एक स्थान पर बैठे-बैठे रिमोट के जरिए काम करने के आदी होते जा रहे हैं। इस कारण मोटापे जैसी समस्या भी अनेक परिवारों में देखी जा रही है। और जब से स्मार्ट फोन आया है, तब से मोटापे की समस्या और ज्यादा बढ़ गयी है। छोटे-छोटे बच्चे मोबाइल में वीडियो गेम खेलते रहते हैं। कुछ नन्हे बच्चे तो मोबाइल देखे बगैर भोजन भी नहीं करते। स्कूल जाने वाले बच्चे मोबाइल में लगे रहते हैं। इस कारण वे हद से ज्यादा मोटे भी हो रहे हैं तथा पढ़ाई में भी पिछड़ रहे हैं। मोबाइल में सिर्फ वीडियो गेम ही अब बच्चे नहीं देखते, जो सर्वे हुआ है, उसे अगर सत्य मानें तो किशोर-बच्चे मोबाइल में अश्लील वीडियो भी देखने लगे हैं। इसका दुष्परिणाम यह हो रहा है कि उनमें यौन विकार बढ़े हैं। इस कारण शारीरिक दुर्बलता भी आ रही है। मोबाइल के चलते हिंसक वारदातें भी हुई हैं। माता-पिता ने बच्चों को मोबाइल नहीं दिया, तो उन्होंने अपनी माँ या पिता की हत्या कर दी या आत्महत्या ही कर ली।

मोबाइल का अविष्कार एक क्रांतिकारी घटना है। हमारी वैज्ञानिक प्रगति का यह एक ऐसा पड़ाव है, जिसके कारण हम पलक झपकते वैश्विक हो जाते हैं। एक दौर था जब एक शहर से दूसरे शहर टेलीफोन से बात करना भी बहुत कठिन था। कोई भी कॉल बहुत मुश्किल से लगती थी। लेकिन अब तो हम एक बटन दबाते ही घर बैठे दुनिया के किसी भी कोने में रहने वाले व्यक्ति से संवाद स्थापित कर सकते हैं। वीडियो कॉल कर सकते हैं। यह हमारी प्रगति है, लेकिन उसका दुष्प्रभाव यह है कि कुछ लोग घण्टों इसी में लगे रहते हैं। स्मार्ट फोन में फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, सब कुछ उपलब्ध है। इस कारण लोग मनोरंजन पर अधिक ध्यान देने लगे हैं। इसके चलते उनकी रचनात्मकता प्रभावित हुई है।

वैज्ञानिक प्रगति का भरपूर लाभ समूची दुनिया ले रही है। जो लोग इसका सही इस्तेमाल कर रहे हैं, वे प्रगति कर रहे हैं। लेकिन जो मोबाइल को विशुद्ध मनोरंजन का साधन समझ कर अपना समय बर्बाद कर रहे हैं, अपने आप से ही अन्याय कर रहे हैं। जीवन के हर क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रगति के नये पड़ाव हमें दिखायी देते हैं। यह प्रगति हमें निरंतर नवीन करती जा रही है। यही कारण है कि मनुष्य समाज भौतिक दृष्टि से काफी समृद्ध होता चला जा रहा है, लेकिन जैसे-जैसे भौतिकता घनीभूत हो रही है; नैतिकता का क्षरण हो रहा है। यह कटु सत्य है। भौतिकता के साथ-साथ अगर नैतिकता भी समानांतर रूप से चलती रहे, तो यह पूरी दुनिया सुखी हो सकती है।

वैज्ञानिकों ने निरन्तर अनुसंधान करके अनगिनत उपलब्धियां हासिल कीं, लेकिन कुछ का जीवन में विपरीत असर भी पड़ते देखा। जैसे कभी बैल की मदद से हम खेती किया करते थे, बाद में ट्रैक्टर आ गया तो लोग ट्रैक्टर्स के सहारे खेती करने लगे, इसलिए बैल बेकार हो गये तो फिर वे कटने के काम आने लगे। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि वैज्ञानिक प्रगति के साथ हमें संतुलन का भी ध्यान रखना है। ट्रैक्टर की इतनी अधिकता भी न हो जाये कि हमारे बैल बेकार हो जाएं।

हथियारों का इतना अधिक निर्माण न हो जाये कि वह हमें युद्ध के लिए बाध्य करने लग जाये। जब तक वैज्ञानिक प्रगति के साथ नैतिक मूल्यों का समावेश नहीं होगा, तब तक आविष्कारों का दुरुपयोग रोका नहीं जा सकता।

रायपुर में रहने वाले लेखक अनेक महत्वपूर्ण सम्मानों से विभूषित हो चुके हैं। वे साहित्य अकादेमी के पूर्व सदस्य तथा सम्प्रति छत्तीसगढ़ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के प्रांतीय अध्यक्ष हैं।

डॉ. कृष्णा कुमारी

# हमसे है जमाना...

अच्छा तो यह होगा कि हम अपने विश्वासों, सिद्धान्तों, धारणाओं को अपनाते हुए बिना किसी समझौते के अपना रास्ता खुद बनाएं और जीवन का सम्पूर्ण आनन्द उठाएं। दुनिया ऐसे लोगों को ही सलाम करती है। स्वयं को पहचान कर और स्वयं की महत्ता को स्वीकार करके ही सच्चा और अच्छा जीवन जिया जा सकता है।

दिन भर में न जाने कितनी बार हम इन वाक्यों को परस्पर व्यवहार में लाते हैं - 'अच्छा नहीं लगेगा...!', 'लोग क्या कहेंगे...?' भले ही इस वजह से हमें कितनी ही पीड़ा उठानी पड़ती हो। जरा सोचिए, क्या हम ऐसा करके उचित कर रहे हैं? या फिर खुद के प्रति अन्याय कर रहे हैं। आखिर बात-बात में हमें दूसरों की ही परवाह क्यों होती है। किससे, किसलिए तथा क्यों डरते हैं हम? जब हम किसी का बुरा नहीं कर रहे हैं, अपना कार्य अपनी सुविधा से कर रहे हैं, अपनी पसन्द से जी रहे हैं, फिर पराश्रित क्यों? जिनको लेकर हम इतनी सतर्कता बरतते हैं, क्या वे हमारी मन:स्थिति से अवगत भी हैं? बिल्कुल नहीं...। उन्हें हमारे बारे में सोचने की फुर्सत तक नहीं होती। उन्हें कुछ फर्क नहीं पड़ता है।

लेकिन हम हैं कि मानते ही नहीं। ऐसी सरलता, मासूमियत, भावुकता किस काम की? यह भी बहुत बड़ा यथार्थ है कि कोई व्यक्ति सबको एक साथ खुश नहीं रख सकता। फिर सबको प्रसन्न रखने का प्रयास निरर्थक है। जब हम अपनी जगह सही हैं तो जिसको जो कहना है कहे, जो सोचना हो सोचे, हमें इसकी परवाह नहीं करनी चाहिए। यह तो दुनिया का दस्तूर है, कुछ न कुछ कहेगी ही। चाहे आप दैवीय गुणों से सुसम्पन्न एक आदर्श व्यक्ति ही क्यों न हों। इतिहास बताता है कि ऐसे महान पुरुषों को तो संसार द्वारा हमेशा प्रताड़ित ही किया गया है। 'एक गधे और बाप-बेटे की कहानी' सभी जानते हैं। हर स्थिति में लोगों ने उन्हें गलत ही ठहराया। ऐसे में आखिर आदमी करे भी तो क्या करे? कोई रास्ता नहीं सिवाय इसके कि लोगों की फिक्र करनी छोड़ दी जाये, लेकिन होता इसका उल्टा है। दूसरों के माफिक चलते हैं हम। उनकी नजर से देखते हैं खुद को। जैसा वे लोग हमें देखना चाहते हैं, वैसा ही बनने की कोशिश रहती है हमारी।

किसी ने कह दिया कि आज आप बड़े खूबसूरत लग रहे हैं तो बाग-बाग हो जाते हैं, फूलकर कुप्पा हो जाते हैं। किसी ने कह दिया कि यह परिधान आप पर नहीं फब रहा तो उन वस्त्रों को अगले ही दिन उठाकर ताक पर रख देते हैं जिन्हें हम बड़े शौक से खरीद कर लाये थे। क्या हमारी पसन्द का कोई महत्व नहीं? क्या कुछ भी खरीदने के समय हम दूसरों को साथ लेकर जाएंगे? फिर सैकड़ों लोग होते हैं हमारे इर्द-गिर्द। किस-किसकी पसंद का खयाल रखेंगे?

यानी हम अपनी पसंद, भावना, सिद्धान्त, इच्छा को दबाकर समझौता करें, मानसिक गुलाम बने रहें। जैसा दूसरे लोग चाहते हैं, वैसा करें। यह तो महज दिखावा हुआ। सिर्फ इसलिए कि हम

औरों की नजर में अच्छे बने रहें, अपनी इच्छाओं का गला घोंटकर पराधीन बने रहें।

शादी-ब्याह को ही लीजिए। हर आदमी अपने बच्चों का विवाह पूरी धूमधाम से करता है। चाहे इसके लिए कर्ज ही क्यों न लेना पड़े क्योंकि जाति-बिरादरी में नाक नीची न हो जाये, कोई अँगुली न उठा दे। यहाँ तक भी कोई बात नहीं। हद तो तब होती है जब यह मालूम पड़ जाने पर भी कि बेटी को ससुराल में दहेज की बाबत बेहद प्रताड़ित किया जा रहा है, फिर भी उसे अपने घर नहीं आने देते। उसके बार-बार फरियाद करने पर भी माँ-बाप यही दुहाई देते हैं कि अब वही घर तेरा ठिकाना है। पिता के घर से तो तेरी डोली उठ गयी अब पति के घर से ही तेरी...।" क्योंकि वे लोगों से यह ताना नहीं सुनना चाहते कि देखो, ब्याहता बेटी को घर में बिठा रखा है। ऐसे में चाहे बेटी की जान ही क्यों न चली जाये।

समाज द्वारा जो अवधारणाएं, वर्जनाएं, मापदण्ड, अन्धविश्वास, सिद्धान्त, आडम्बर किसी जमाने में निर्धारित कर दिये गये थे, उन्हें आँखें बन्द करके ढोते रहना व्यक्ति को मंजूर है। वर्तमान में उनकी कोई प्रासंगिकता है भी कि नहीं, यह सोचने की जहमत वह नहीं उठाता। अरे...! समय बीतने के साथ तो पत्थर भी घिस जाते हैं। उन पर पड़ी हुई लकीरें भी मिट जाती हैं, लेकिन व्यक्ति के दुराग्रह अमिट हैं। चाहे इसके लिए कितनी ही परेशानी क्यों न उठानी पड़े। लेकिन नहीं, हमें तो दूसरों की अधिक परवाह है। हाँ, दूसरों की परवाह हमें करनी है, लोग क्या कहेंगे इसका डर मन में पालना है तो बुरे कामों के लिए पालें, दुष्कर्मों के लिए पालें। अपनी नेक-नीयत पर भरोसा है तो फिर दूसरों की परवाह अनावश्यक है।

हर मौके पर हम दूसरों की सन्तुष्टि का ध्यान रखते हैं, गोया कि आत्मतुष्टि का कोई महत्व ही नहीं है। हर काम महज दूसरों को दिखाने के लिए ही किया करते हैं, अपने सुख या खुशी के लिए नहीं। जबकि होना यह चाहिए कि हमारा मन क्या कह रहा है? क्या चाहता है? उस पर ध्यान दें। अपनी सुविधाओं, आकांक्षाओं का भी खयाल करें, तभी सच्चे सुख की प्राप्ति हो सकती है। अच्छा तो यह होगा कि हम अपने विश्वासों, सिद्धान्तों, धारणाओं को अपनाते हुए बिना किसी समझौते के अपना रास्ता खुद बनाएं और जीवन का सम्पूर्ण आनन्द उठाएं। दुनिया ऐसे लोगों को ही सलाम करती है। स्वयं को पहचान कर और स्वयं की महत्ता को स्वीकार करके ही सच्चा और अच्छा जीवन जिया जा सकता है। जिगर मुरादाबादी भी फरमाते हैं -

**"हम को मिटा सके ये जमाने में दम नहीं**
**हम से जमाना खुद है, जमाने से हम नहीं।"**

कोटा निवासी लेखिका राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्यापन के साथ ही लेखन से भी जुड़ी हैं। साहित्य की विभिन्न विधाओं में इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

लघुकथा

# चंदन का हार

■ डॉ. मंजु गुप्ता - नवी मुंबई ■

रोहन ने अपने प्यारे दादा जी की पुण्यतिथि पर माँ के साथ उनकी तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की। पुष्पाजंलि अर्पित करते हुए वह अतीत में विचरने लगा। उसे याद आ रहा था कि उसने आठ साल की उम्र में दादाजी को मुखाग्नि दी थी। उस दिन उसके पिता शराब के नशे में धुत थे। उन्हें यह भी मालूम नहीं था कि उनके पिता इस दुनिया से चले गये हैं।

उसे दादाजी की हर वह बात याद आ रही थी जो वे उसके पिता को नशे की लत छोड़ने को कहते थे। उसके नुकसान गिनाते लेकिन पिता ने उनकी कोई बात नहीं मानी।

"अरे बेटा, किन खयालों में खो गये?" माँ उसकी ओर देख रही थी।

"कुछ नहीं, ऐसे ही। दादाजी, पिताजी की याद आ गयी।" उसकी आँखें छलछला आयीं।

"सब ईश्वर इच्छा है। हम कुछ नहीं कर सकते।" माँ ने उसके सिर पर हाथ फेरा।

"हाँ, माँ।"

"सुन। तू इतना बड़ा डॉक्टर बन गया है। इलाज करना तेरा कर्त्तव्य है, लेकिन इससे जुड़ा एक दायित्व यह भी है कि तू लोगों को नशे के नुकसान बता। नशे के कारण अपने पिता की हुई अकाल मृत्यु का उदाहरण तेरे पास है।"

"हाँ माँ। यही मेरा संकल्प है।" उसके चेहरे पर दृढ़ संकल्प का भाव तैर रहा था।

"अरे, हमारी बातों में दादाजी को यह चंदन का हार चढ़ाना तो रह ही गया।" माँ ने उसके हाथों में चंदन का हार दिया।

चंदन के हार की खुशबू कमरे को महकाने लगी थी। माँ को लग रहा था कि उसके बेटे का संकल्प लोगों के जीवन को महकाने लगा है।

राजेन्द्र सारस्वत, श्रीगंगानगर

# दु:ख तो अपना साथी है

एक बहुत पुरानी फिल्म है 'दोस्ती'। इस फिल्म का यह गाना याद कीजिए -"सुख है इक छाँव ढलती, आती है जाती है, दु:ख तो अपना साथी है।"

दु:ख क्या है और सुख किसे कहते हैं? इस प्रश्न का किसी विद्वान ने कितना खूबसूरत उत्तर दिया है - "जो अपने मन के मुताबिक न हो वह दु:ख और जो मनचाहा मिल जाये वह सुख। सामाजिक जीवन में दृष्टि डालेंगे तो पाएंगे कि दुनिया में सब सुख के पलड़े के साथ खड़े रहते हैं। दु:ख में तो अपने कपड़े भी वैरी हो जाते हैं। जैसे अंधेरे में अपनी परछाई भी साथ छोड़ जाती है।

कहा जाता है कि दु:ख के गर्भ से सुख का जन्म हुआ करता है तथा सुख के गर्भ से दु:ख का जन्म हुआ करता है। जब जीवन में बहुत अधिक सुख का एहसास हो तो स्मरण रखना चाहिए कि दु:ख दबे पाँव कहीं आसपास ही दुबका बैठा है।

वैसे गंभीरता से सोचें तो महसूस होता है कि यह पूरा संसार दु:खी है। कोई भी जीव समस्यामुक्त यानी पूर्णरूपेण सुखी नहीं है। आमतौर पर व्यक्ति सुख के दिनों में ईश्वर को स्मरण नहीं रखता, मगर जब उस पर दु:खों का पहाड़ टूट पड़े तब उसका भगवान पर से भी भरोसा उठ जाता है। राजस्थान में बहुत दु:खी व्यक्ति को कहते सुना जाता है - " भगवान रूसग्यो..!"

इसमें कोई दो राय नहीं कि निर्धनता और गरीबी दुनिया का सबसे बड़ा दु:ख है, मगर अमीर ही सबसे अधिक सुखी हो, यह आवश्यक नहीं है। दु:ख-सुख का भी वर्गीकरण होता है। छोटे-छोटे लोगों के सुख-दु:ख भी छोटे-छोटे होते हैं, वहीं बड़े लोगों के सुख-दु:ख भी उन्हीं के समान बड़े होते हैं। आवश्यक नहीं कि सभी दु:ख भाग्य और ईश्वर प्रदत्त हों।

प्रकृति और यथार्थ के कुछ निर्धारित मापदंड हैं जिनके उल्लंघन का दंड दु:ख के रूप में मिलता है। यह भी यथार्थ है कि खुशी या सुख जितना बाँटा जाये, उतना बढ़ता है। वहीं पीड़ा या दु:ख बाँटने से कम होता है। वैसे अपना दु:ख हर किसी के समक्ष प्रकट करने से बचना चाहिए।

कवि रहीम ने कहा भी है -

**"रहिमन निज मन की व्यथा, मन में राखो गोय।**
**सुन इठलइहैं लोग सब, बांटि न लइहें कोय।।"**

यह भी कड़वा सच है कि आम तौर पर तथाकथित अपने लोग ही दु:खी करते हैं जिन पर आदमी बहुत अधिक भरोसा किया करता है। निम्नलिखित पक्तियों में इस भाव को बखूबी बयां किया गया है -

**"गैरों को कब फुर्सत है दु:ख देने की,**
**जब होता है कोई हमदम होता है.. !"**

किसी को भी सातों सुख नहीं मिल पाते। ये सात सुख हैं - पहला सुख निरोगी काया, दूजा सुख घर में हो माया, तीजा सुख मनोनुकूल जीवनसाथी, चौथा सुख सुत आज्ञाकारी, पाँचवां सुख राज में पासा, छठा सुख निज देश में बासा और सातवां सुख हो सानंद बुढ़ापा। यदि वृद्धावस्था में घोर अकेलापन और विकट सन्नाटे का जीवन हो तो वह पूरी सुखपूर्ण जिंदगी पर भारी पड़ जाता है। जीवन दूभर हो जाता है।

महाभारत की कथा के अनुसार कुरुक्षेत्र का महासमर समाप्त हो गया। कौरवों की भारी पराजय हुई। पांडव पक्ष विजित रहा। हस्तिनापुर का साम्राज्य महाराज युधिष्ठिर को सम्भलाने के बाद श्रीकृष्ण ने द्वारिका के लिए प्रस्थान करते समय कुंती से कहा - "बुआ! मैं चलता हूँ। जाते-जाते कुछ देना चाहता हूँ। बोलो, क्या दूं?" तब कुंती बोलीं -"केशव! तुमने हमें राजपाट, ऐश्वर्य, वैभव और समृद्धि दे दी। सब कुछ तो दे दिया, अब हमें क्या चाहिए। फिर भी देना ही चाहते हो तो एक चीज माँगती हूँ। तुम हमें निरंतर दु:ख देते रहना।" यह सुनकर श्रीकृष्ण चौंक गये।

बोले-" बुआ, यह क्या माँग रही हो!" तब कुंती बोलीं- " मैं इसलिए दु:ख माँग रही हूँ कि जब-जब भी हम पर दु:ख आया, हमने तुम्हें याद किया, तुम नंगे पाँव दौड़े चले आये। अब हम सुख पाकर तुम्हें भूल न जाएं, इसलिए हमें दु:ख देते रहना।"

आइवर यूशिएल

# रोमन सम्राट की कथा सेनापति की व्यथा !

रणभूमि के इतने बड़े योद्धा को शायद गणित के प्रति बरती गई थोड़ी-सी लापरवाही के चलते ही इतना बड़ा नुकसान उठाना पड़ा। इसलिए ही तो कहा गया है कि गणित सिर्फ विषय भर नहीं है। यह जीवन का एक आवश्यक अंग है और सही तरह से जीवन जीने के लिए इससे दोस्ती करना बेहद जरूरी है और लाभप्रद भी।

पिछले शनिवार को श्रुति का जन्मदिन था। मम्मी-पापा की इस लाडली के बर्थ डे पर हर बार की तरह ही इस बार भी शानदार पार्टी न होती, यह भला कैसे संभव था। परंतु इस बार उसने शर्त रख दी कि पार्टी तभी होगी जब उसमें सुधेन्दु भइया आएंगे। अब सुधेन्दु भइया जैसे फक्कड़ व्यक्ति को इस तरह की पार्टियों तक लाना कोई आसान काम था क्या? सो इस काम के लिए मुझसे संपर्क साधा गया ताकि मेरे जोर-दबाव व सिफारिश पर वे किसी तरह इस आयोजन में पहुँच जाएं। खैर, मेरी इज्जत रह गयी और जब सुधेन्दु भइया बच्चों की इस पार्टी में पहुँचे तो वहाँ का माहौल पूरी तरह ही बदल गया।

"आज तो आपसे कोई मजेदार किस्सा या अच्छी-सी कहानी सुनेंगे।" बच्चा पार्टी में से एक स्वर उभरा तो सबने एकमत से इसका समर्थन करना शुरू कर दिया। जैसे-जैसे यह माँग बढ़ती जा रही थी, वैसे-वैसे सुधेन्दु भइया मुश्किल में फँसते जा रहे थे। कहानी-किस्से नाम की चीज से तो उनका दूर-दूर तक का कोई वास्ता था ही नहीं। परंतु जो बच्चों की माँग को अपने हिसाब से न मोड़ ले वह फिर सुधेन्दु भइया कैसे कहलाएगा भला। यही कला तो है जिसके चलते बच्चों के बीच सुधेन्दु भइया इतने लोकप्रिय हैं। बस, कुछ देर सोचने के बाद सुधेन्दु भइया शुरू हो गये। पहले तो उन्होंने कहानी की भूमिका बाँधी जिसमें उन्होंने बताया कि बहुत प्राचीन काल में रोमन साम्राज्य का अपने एक पड़ोसी राज्य के साथ सीमा संबंधी विवाद हो गया। बात यहाँ तक बढ़ गयी कि रोमन सम्राट को इसका फैसला करने के लिए पड़ोसी राज्य पर आक्रमण का आदेश देना पड़ा।

दोनों सेनाओं के बीच भीष्ण युद्ध हुआ और अंत में रोमन सेनापति की कुशल रणनीति की वजह से दुश्मनों को मुँह की खानी पड़ी। फिर क्या था? जीत का जश्न मनाती सेना अपने देश लौटी और सेनापति प्रसन्नता के साथ जब दरबार में उपस्थित हुआ तो सम्राट ने उठकर स्वयं उसका स्वागत किया।

सुधेन्दु भइया ने कहानी की इस भूमिका को जिस तरह रोचकता के साथ पेश किया था, उससे सारे बच्चों की इसमें रुचि बढ़ जानी स्वाभाविक थी। इसी उत्सुकता को और बढ़ाने के लिए शायद जान-बूझ कर सुधेन्दु भइया कुछ क्षणों के लिए एकदम चुप हो गये तो नन्ही श्वेता इस व्यवधान को सह नहीं सकी और एकाएक बोल पड़ी - "फिर आगे क्या हुआ भइया?"

" क्या होना था। रोमन सम्राट ने न सिर्फ अपने सेनापति का सम्मान किया बल्कि उसे बेशकीमती उपहार प्रदान करते हुए भरे दरबार में उसका पद और सुविधाएं दोनों बढ़ाने की घोषणा भी

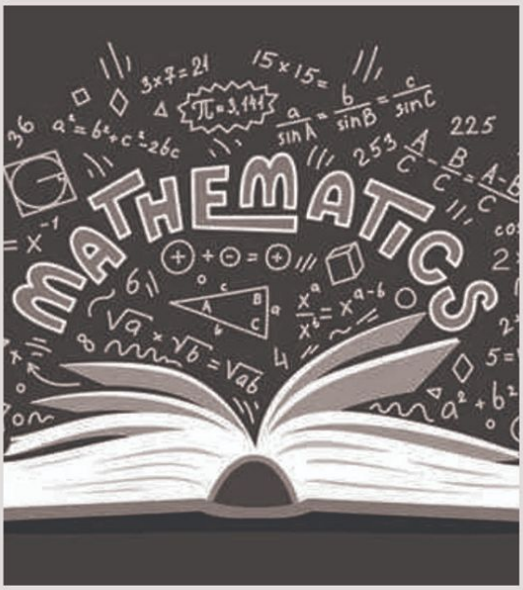


सेनापति द्वारा जिस धनराशि की अपेक्षा की जा रही थी, उसे खजाने से निकलवा देना सम्राट के लिए कोई आसान निर्णय नहीं था। एक बहुत बड़ा धर्म संकट उसके समक्ष था जिससे उबरने के लिए उसे कोई युक्ति सोचनी थी ताकि साँप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे।

की। इसके बाद जब सम्राट ने सेनापति से पूछा कि वह इस सबसे संतुष्ट तो है न, तो सेनापति के उत्तर ने उन्हें संकट में डाल दिया।

सेनापति ने राजा द्वारा की गयी घोषणा और उनके द्वारा दिये सम्मान के प्रति पहले तो आभार व्यक्त किया और फिर विनम्रता के साथ अपनी इच्छा दर्शाते हुए निवेदन किया कि वह अब राष्ट्र की और सेवा कर पाने लायक उम्र को पार कर चुका है और युद्ध व दूसरे वीरतापूर्ण कार्य करते-करते थक गया है। उसकी चाहत है कि अब महाराज उसे इन पुरस्कारों और सम्मानों के बदले इतनी नकद राशि दे दें ताकि उसे लेकर वह किसी एकांत-शांत जगह आराम से अपनी बाकी बची जिंदगी बिता सके। सम्राट के पूछने पर सेनापति ने इस नकद राशि की चाहत दस लाख डिनैरो (डिनैरियस रोमन साम्राज्य के समय प्रचलित एक रजत मुद्रा) के रूप में अभिव्यक्त की।

रोमन साम्राज्य चाहे कितना विकसित एवं वैभवशाली रहा हो, पर सम्राट में दिल की विशालता का जो गुण होना चाहिए, वह उसमें नहीं था। राजकोष में अकूत संपदा थी और सम्राट यह भी जानता था कि सेनापति ने अपनी उम्र का सारा महत्वपूर्ण भाग देश की सेवा में पूरी तरह लगा दिया था, पर उसके बदले में सेनापति द्वारा जिस धनराशि की अपेक्षा की जा रही थी, उसे खजाने से निकलवा देना सम्राट के लिए कोई आसान निर्णय नहीं था। एक बहुत बड़ा धर्म संकट उसके समक्ष था जिससे उबरने के लिए उसे कोई युक्ति सोचनी थी ताकि साँप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे। दूसरे दिन निर्णय की घोषणा किये जाने का आश्वासन देते हुए सम्राट ने दरबार की कार्यवाही स्थगित कर दी।

अगले दिन यथासमय दरबार लगा। सबको यह जानने की उत्सुकता थी कि देखें सम्राट ने क्या निर्णय लिया? आखिर वह क्षण भी आया जब रोम के महाप्रतापी सम्राट ने भरे दरबार में घोषणा की, "अपने सेनापति की अब तक की सेवाओं से हम जितने संतुष्ट हैं, उतने ही प्रसन्न भी। इन्होंने अब तक राष्ट्र के लिए जो सेवाएं दी हैं, उनके बदले में हमारी ओर से किसी एक निश्चित राशि की घोषणा कर देना हमें न्यायसंगत नहीं लग रहा है। इस महान योद्धा ने अपने पूरे कार्यकाल में अपने बुद्धि कौशल और बाहुबल से ही अपने लिए धन व यश कमाया है, अतः इस स्वाभिमानी योद्धा के अनुरोध की संवेदनशीलता को देखते हुए हमने बिल्कुल अलग तरह का फैसला किया है।"

इतनी कहानी सुनाने के बाद सुधेन्दु भइया एकदम चुप होकर कुछ देर तो बच्चों की तरफ सिर्फ देखते भर रहे और फिर बोले, "अब तुम लोगों में से क्या कोई अंदाजा लगा सकता है कि रोमन सम्राट का बिल्कुल अलग तरह का यह फैसला आखिर क्या रहा होगा?" बच्चे तो बच्चे ही ठहरे। इतने बड़े सम्राट के फैसले का अंदाजा लगाते भी तो क्या?

सबको चुपचाप बैठे देख आखिर सुधेन्दु भइया ने खुद ही आगे बोलना शुरू किया - "रोमन सम्राट ने पूरे दरबार पर एक सरसरी नजर डालते हुए बताया कि उन्होंने जो फैसला लिया है, उससे सेनापति जैसे स्वाभिमानी इंसान के आत्मसम्मान एवं उनकी गरिमा पर जरा-सी भी आंच नहीं आएगी और चूँकि इस तरीके द्वारा इस सेनानायक को मिलने वाली राशि उसके अपने ही सामर्थ्य एवं शक्ति द्वारा निर्धारित होगी, अतः हमारा फैसला पूरी तरह ही न्यायसंगत ठहराया जाएगा।"

इसके बाद सम्राट ने सेनापति से मुखातिब होकर पूछा कि क्या फैसला सुनने के लिए वे तैयार हैं? सेनापति के हामी भरने पर उन्होंने निर्णय सुनाना शुरू कर दिया - "राजकोष में इस समय सिर्फ पीतल की पचास लाख मुद्राएं हैं जिनका मूल्य दस लाख डिनैरो के बराबर है यानी ठीक वही रकम जो सेनापति पुरस्कार स्वरूप पाना चाह रहे हैं। वे ये सारी मुद्राएं ले जा सकते हैं। शर्त सिर्फ इतनी है कि पहले दिन सिर्फ एक, दूसरे दिन उसकी दोगुनी यानी दो, तीसरे दिन उसकी दोगुनी यानी चार और इस तरह हर बार पिछले दिन की तुलना में उन्हें दोगुनी मुद्राएं ले जानी होंगी और वह भी स्वयं अपने आप बिना कोई बाहरी मदद लिये। सेनापति को हर रोज निश्चित वजन की सिर्फ एक मुद्रा ही उठानी पड़े, इसके लिए जिस दिन जितनी मुद्राएं उठायी जाती रहेंगी, उन सबको राज्य की टकसाल में ढालकर एक बड़ी मुद्रा में तुरन्त ही रूपांतरित करवा देने की व्यवस्था कर दी जाएगी ताकि ढोने में सुविधा रहे।"

"इस तरह हर रोज संख्या में दोगुनी होती मुद्राओं को सेनापति अपने दमखम से जब तक ले जा पाएंगे, ले जाते रहेंगे। उन पर कोई बंदिश नहीं रहेगी, पर जिस दिन इन मुद्राओं का वजन सेनापति के सामर्थ्य पर भारी पड़ जाएगा, बस वहीं सिलसिला रुक जाएगा और उस दिन तक घर ले जायी गयी समस्त मुद्राओं को इनका इनाम मान लिया जाएगा। हमें विश्वास है कि सेनापति को हमारा यह निर्णय स्वीकार्य होगा।" कहते हुए सम्राट ने सेनापति की ओर देखा।

"मैं सम्राट के निर्णय का आदर करते हुए उनके प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ।" अपने महाराज के प्रति सम्मान दर्शाते हुए सेनापति ने सिर झुकाकर अभिवादन किया। मन ही मन सेनापति जी इस बात का अंदाजा लगा कर बेहद खुश थे कि अपनी ताकत से वे खजाने से भारी संख्या में मुद्राएं अपने घर ले जाने में सफल रहेंगे।

...और इस तरह अगले दिन से ही राजकोष से घर तक मुद्रा ढोने का कार्य सेनापति ने शुरू कर दिया। उस दिन चूँकि पहला दिन था, अतः सिर्फ एक मुद्रा लेकर जाते इस महानायक को आगे आने वाले दिनों की अल्पसंख्या का जरा-सा भी आभास तक नहीं हुआ।

आज के हिसाब से 5 ग्राम की यह मुद्रा जो 21 मिलीमीटर व्यास की थी, भला दिक्कत भी क्या करती! इसी तरह दूसरे दिन 10 ग्राम, तीसरे दिन 20 ग्राम, चौथे दिन 40 ग्राम, पाँचवें दिन 80 ग्राम और छठे दिन 160 ग्राम के सिक्के ले जाना भी बेहद आसान कार्य रहा। सातवें दिन मुद्रा का वजन 320 ग्राम पहुँच गया और व्यास लगभग साढ़े आठ सेमी। आठवें दिन यह भार 640 ग्राम तथा व्यास साढ़े दस सेमी जिसे 128 सिक्कों से ढालकर बनाया गया था। नौवें दिन 256 सिक्कों से बनी मुद्रा का भार 1.280 किग्रा तक जा पहुँचा और व्यास रहा 13 सेमी।

इसी तरह 12वें दिन 27 सेमी व्यास वाली मुद्रा का भार हो गया 10.240 किग्रा। 13वें दिन 34 सेमी व्यास के साथ भार 20.480 किग्रा। 14वें दिन 42 सेमी व्यास वाली मुद्रा भार में 40.960 किग्रा तक जा पहुँची और पंद्रहवें दिन तो 53 सेमी व्यास के साथ जब इसका भार 81.920 किग्रा हो गया तो पहली बार सेनापति को इसे घर तक ले जाने में थोड़ा परिश्रम करना पड़ा।

सोलहवें दिन 32768 मुद्राओं के बराबर ढले एक सिक्के का जो भार में 163.840 किग्रा था और व्यास में 67 सेमी जिसे ढोते समय सेनापति को अच्छा-खासा श्रम करना पड़ा।

सत्रहवें दिन तो दृश्य पूरी तरह ही बदल चुका था क्योंकि 327.680 किग्रा वजन के सिक्के को जिसका व्यास 84 सेमी था, सेनापति अपनी पीठ पर लादने की जगह उसे लुढ़काते हुए घर ले जा रहा था। ...और इसके बाद तो जो सोचा भी नहीं जा सकता, वही हुआ। विश्व स्तर का यह विजेता पुरस्कारस्वरूप प्राप्त इन मुद्राओं की बमुश्किल ढुलाई कर सका और फिर अंतिम दिन जब उसने 1,31,071 वास्तविक मुद्राओं से ढालकर बनाये गये सिक्के

सेनापति द्वारा ले जायी गयी कुल मुद्राओं का योग निकलवाया जाये और जब योग आया तो सब देखकर हैरान रह गये कि सेनापति द्वारा ले जायी गयी कुल मुद्राएं थीं 1,31,071 बस! यानी सेनापति ने जितनी मुद्राओं की अपेक्षा की थी, उसका सिर्फ उन्नीसवां भाग ही वह घर ले जा सका था।

का जो भार में 655.360 किग्रा था, लुढ़काते ढकेलते मुश्किल से घर पहुँचाया तो वहीं उसने उस प्रयास के अंत की घोषणा कर दी।" इतना किस्सा सुनाने के बाद सुधेन्दु भइया ने बच्चों की तरफ चारों ओर नजर घुमाई।

सारे बच्चे उनको अब तक बड़े ध्यान से सुन रहे हैं, ऐसा विश्वास जब उन्हें हो गया तो उन्होंने सबके सामने एक सवाल रख दिया, "बच्चो, इस घटना को सुनने के बाद तुम अंदाजा लगा सकते हो कि सेनापति ने पुरस्कार के रूप में जितनी मुद्राओं की माँग की थी, उसका कितना भाग वह अपने घर तक ले जा सका। आधा, चौथाई, एक बटे आठ भाग या इससे कुछ कम-ज्यादा?" बच्चों के उत्तर सुनकर सुधेन्दु भइया को बेहद दुःख हुआ क्योंकि उनमें से कोई भी ऐसा नहीं था जो सही उत्तर के नजदीक तक भी पहुँच पाया हो।

अंत में सुधेन्दु भइया ने कहानी को समापन की ओर ले जाते हुए बताया, "सम्राट की शर्त से सेनापति के बाहर हो जाने पर उन्होंने दरबारियों को आदेश दिया कि सेनापति द्वारा ले जायी गयी कुल मुद्राओं का योग निकलवाया जाये और जब योग आया तो सब देखकर हैरान रह गये कि सेनापति द्वारा ले जायी गयी कुल मुद्राएं थीं 1,31,071 बस! और वह भी रजत की नहीं, पीतल की यानी सेनापति ने जितनी मुद्राओं की अपेक्षा की थी, उसका सिर्फ अड़तीसवां भाग ही वह घर ले जा सका था।...आश्चर्य होता है उपरोक्त घटना द्वारा यह जानकर कि रणभूमि के इतने बड़े योद्धा को शायद गणित के प्रति बरती गई थोड़ी-सी लापरवाही के चलते ही इतना बड़ा नुकसान उठाना पड़ा। है न?"

"इसलिए ही तो कहा गया है कि गणित सिर्फ विषय भर नहीं है। यह जीवन का एक आवश्यक अंग है और सही तरह से जीवन जीने के लिए इससे दोस्ती करना बेहद जरूरी भी है और लाभप्रद भी।"

कहते-कहते सुधेन्दु भइया ने अपने स्थान से उठकर जैसे ही शुभकामनाओं से भरा अपना गिफ्ट श्रुति के हाथ में थमाया तो सभी बच्चों ने उनके साथ दोहराना शुरू कर दिया - "हैप्पी बर्थ डे टू यू..."। और इस तरह एक हंगामेदार पार्टी की शुरुआत हो गयी।

बरेली निवासी लोकप्रिय बाल-विज्ञान लेखक। बाल विकास तथा विज्ञान से जुड़े विषयों पर कई पुस्तकें प्रकाशित।

■ डॉ. रेखा जैन , दिल्ली ■

# अणुव्रत है मानव धर्म

अणुव्रत एक ऐसा धर्म है जो किसी भी देश के निवासी के लिए, किसी भी धर्म-संप्रदाय को मानने वाले के लिए श्रेयस्कर है, हितकारी है। आचार्य श्री तुलसी ने 75 वर्ष पूर्व अणुव्रत आंदोलन का शुभारंम्भ किया। अणुव्रत में अहिंसा, नैतिकता की ही बात है। छोटे-छोटे नियमों की आचार संहिता अणुव्रत में निर्दिष्ट है। अणुव्रतों को अपनाने से स्वयं पर अनुशासन होता है, संयम होता है। अणुव्रत असांप्रदायिक धर्म है, इसके लिए जैन होना आवश्यक नहीं।

हिंसा जीवन को पतन की ओर ले जाती है और अहिंसा उत्थान की ओर। अणुव्रत अहिंसा की बात करता है। अणुव्रत आचार संहिता का एक सूत्र है - मैं किसी भी निरपराध प्राणी की हत्या नहीं करूँगा। अणुव्रत व्यक्ति को ईमानदारी की प्रेरणा देता है। नशामुक्तता का संदेश देता है। व्यक्ति बुराइयों को त्याग कर अणुव्रत के द्वारा जीवन को अच्छा बनाये, यह जरूरी है। अणुव्रत मध्यम मार्ग है, मानव को मानव बनाने का। सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति अणुव्रत के प्राण हैं, जीवन के त्राण हैं। अणुव्रत अनेक जागतिक समस्याओं का समाधान है।

'धर्म' वह प्रणाली है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी चेतना को विकसित करने में सक्षम होता है। मानव कल्याण का भाव हमें संसार में परस्पर प्रेम, सहानुभूति और एक-दूसरे के प्रति सम्मान करना सिखाकर श्रेष्ठ आदर्शों की ओर ले जाता है। मानव धर्म उस स्वच्छ व्यवहार को माना गया है जिसका अनुसरण करके सभी को प्रसन्नता और शांति प्राप्त हो सके। यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा था कि लोक में श्रेष्ठ धर्म क्या है तो युधिष्ठिर ने कहा कि दया ही श्रेष्ठ धर्म है। दूसरों पर दया करना और अपने मन, वचन और कर्म से प्राणी मात्र का हित करना ही मनुष्य का कर्त्तव्य है और धर्म भी। जब तक मनुष्य में दूसरों के लिए दया भाव जाग्रत नहीं होगा, तब तक उसमें सेवा भाव का होना भी असंभव है।

उपनिषद् कहती है - **'क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया'** अर्थात् धर्म का मार्ग तो छुरे की तरह है, उस पर चलने का अर्थ है बहुत संकटों से जूझना। इसलिए धर्म के लिए कमर कसने का पहला उपाय है दृढ़ हो जाना। ज्ञान, भक्ति और कर्म का सही समन्वय ही हमें उस अत्यन्त दुरूह लक्ष्य तक पहुँचा सकता है।

आज के इस भौतिक युग में यदि मनुष्य, मनुष्य के साथ अच्छा व्यवहार करना नहीं सीखेगा, तो भविष्य में वह मानव कल्याण की ओर न सोचकर एक-दूसरे का घोर विरोधी ही होगा। इसी कारण हर हर तरफ मानवता का गला दबाया जा रहा है। विश्व का ऐसा कोई कोना नहीं बचा है, जहाँ धर्म के नाम पर राजनीति न हो रही हो। हर तरफ न जाने कितने लाखों लोग बेघर हो रहे हैं और कितने ही मासूम बच्चे अनाथ हो रहे हैं।

यदि हम अपने जीवन में नैतिकता का अपनाने लग जाएं तो मानव का कल्याण हो जाये। इसके लिए सबसे पहले हमें मोह का त्याग करना चाहिए। मोह का त्याग यदि हो जाये तो जीवन महान बन जाएगा। मानव को कोई भी चीज क्रोध से नहीं, बल्कि प्रेम से जीतनी चाहिए और क्रोध को क्रोध से नहीं बल्कि क्षमा से जीतना चाहिए। जो व्यक्ति अपने स्वभाव में क्षमा को धारण करके रहता है, वह महान बन जाता है। मानव धर्म अहिंसा, शांति, पवित्रता व सच्चरित्र का उद्गम स्थल है। यह नाश के मार्ग से बचाकर व्यक्ति को सन्मार्ग पर लाता है। अणुव्रत इंसान को इंसान बनाने वाला मानव धर्म है। ■

# न्यू बर्थ

■ ताराचंद मकसाने ■

अमित बेटा, किचन में मेरे लिए लगाया हुआ 'मिडिल बर्थ' जिसे तुम 'फोल्डिंग बेड' कहते हो, उसका आनंद मैंने ले लिया है और मेरा जी भर गया है। इसे अब फोल्ड करके रख देना, भविष्य में तुम्हें भी इसकी जरूरत पड़ सकती है! मुझे अब 'न्यू बर्थ' मिल गया है...।

आज वंदना के पति सुजीत की तीसरी बरसी थी, परंतु बेटा अमित इस बात से अनभिज्ञ था। वह रोजाना की तरह तैयार होकर ऑफिस के लिए रवाना हो गया, वंदना उसे जाते हुए देख रही थी। वह दरवाजा धड़ाम से बंद करते हुए लिफ्ट की ओर बढ़ गया। वंदना की बहू मिताली और पोती आस्था, पोता तन्मय अपने-अपने बेडरूम में सो रहे थे। वंदना रसोईघर में लगी अपने स्वर्गीय पति की तस्वीर के सामने जाकर बैठ गयी और उनकी छवि को देखते हुए बोली -"मुझे अपने साथ क्यों नहीं लेकर गये आप...मैं अब कितनी अकेली पड़ गयी हूँ...।" ...और वह सिसक-सिसक कर रोने लगी।

पति की मौत के बाद वंदना मुंबई से महज चार घंटे की दूरी पर बसे अपने गाँव में अकेली रह रही थी। उसे फैमिली पेंशन की बड़ी रकम मिल रही थी जिससे उसे किसी के सामने हाथ फैलाने की नौबत नहीं आती थी। बेटा अमित महीने-दो महीने में एकाध बार मिलने आ जाता था और हर बार आग्रह करता कि वह मुंबई आ जाये तथा उसके साथ रहे, मगर वंदना यह कहकर टाल देती थी कि उसकी पूरी जिंदगी इस गाँव में बीती है। सभी करीबी रिश्तेदार, उसकी सखी-सहेलियाँ और सुजीत का मित्र परिवार सभी तो इसी गाँव में हैं। फिर उसके सैकड़ों विद्यार्थी भी तो यहीं रहते हैं जिन्हें उसने कभी संगीत की तालीम दी थी। आज वह उनके बच्चों को संगीत सिखा रही है। उसके लिए इन सबको छोड़ना नामुमकिन है।

अमित अपनी पत्नी और बच्चों के साथ मुंबई में रहता था। वंदना साल भर पहले ही शारदा संगीत विद्यालय से रिटायर हुई थी। अब वह घर पर गरीब बच्चों को मुफ्त में संगीत सिखाती थी। गाँव में होने वाले हर छोटे-बड़े आयोजन में वंदना को संगीत की प्रस्तुति हेतु बड़े आदर के साथ आमंत्रित किया जाता था। सब कुछ

ठीक चल रहा था। वंदना अपनी दुनिया में खुश थी। एक दिन अमित अपने पूरे परिवार के साथ बिना पूर्व सूचना दिये अचानक गाँव आया तो वंदना को आश्चर्य हुआ।

"बेटा, सब ठीक तो है न! अचानक कैसे आ गये?" वंदना ने पूछा।

"सब ठीक है माँ, हम आपको लेने आये हैं। मिताली, तन्मय और आस्था चाहते हैं कि आप हमारे साथ ही रहें। आप गाँव में अकेली रहती हैं, यह हमें अच्छा नहीं लगता।"

"बेटा, तुम मेरी चिंता मत करो, मुझे यहाँ कोई तकलीफ नहीं है, पूरा गाँव मेरा परिवार है। मैं अपने छोटे-से गाँव में बच्चों को संगीत की शिक्षा देकर ईश्वर की आराधना कर रही हूँ। संगीत सीखने के लिए आने वाले बच्चे मेरा छोटा-मोटा काम कर देते हैं। इस गाँव में मुझे बहुत ही आदर-सम्मान भी मिलता है।" वंदना ने कहा।

"दादी, आप इतना अच्छा गाती हैं और दूसरों को संगीत सिखाती हैं, मुझे भी सिखाओ न, मुझे भी गाने का बहुत शौक है...।" कहते हुए आस्था ने दादी को अपनी बांहों में बाँधने का असफल प्रयास किया।

वंदना भावाकुल हो गयी। उसे चूमते हुए बोली - "क्यों नहीं बेटा, तुम्हें भी संगीत सिखाऊँगी...तुम तो मेरी लाडली पोती हो।"

"थैंक्यू दादी।" कहते हुए आस्था खुशी से उछल पड़ी।

"लेकिन बेटा, अभी मेरे बच्चों की संगीत की कक्षाएं चल रही हैं जो अगले महीने समाप्त हो जाएंगी। उसके बाद ही मैं आ पाऊँगी।" वंदना ने कहा।

दो महीने का समय मानो पंख लगाकर उड़ गया। वंदना मुंबई पहुँच गयी। अमित, मिताली, आस्था और तन्मय ने उसका जोरदार स्वागत किया। आस्था अब दादी से संगीत की तालीम लेने लगी। इसके बाद तो वह अपने स्कूल में आयोजित संगीत प्रतियोगिताओं में प्रथम आने लगी। वंदना के आ जाने से मिताली ने नौकरी करनी शुरू कर दी।

मुंबई में अमित के वन बेडरूम किचन के छोटे-से फ्लैट में वंदना के लिए खुशियों के ये दिन कुछ दिनों तक ही कायम रहे। कभी अमित देर रात घर आता था तो मिताली को अपनी ऑफिस की मीटिंग्स से फुर्सत नहीं मिलती थी। शनिवार और रविवार को छुट्टी के दिन तो वंदना की परेशानियाँ बहुत बढ़ जाती थीं। छुट्टी के दिन कभी अमित के दोस्त घर पर आते थे तो कभी मिताली की सहेलियों का जमघट लग जाता था। वंदना कभी बाल्कनी में घंटों बैठी रहती थी तो कभी किचन के किसी कोने में सिमट जाती थी। फ्लैट के एकमात्र बेडरूम पर अधिकांश समय आस्था और तन्मय का ही कब्जा रहता था। वहाँ वंदना की एंट्री पर पाबंदी थी। जब कभी आस्था की सहेलियाँ आती थीं तो घर में गाना-बजाना होता था और तब घर थियेटर बन जाता था। वंदना अपने मन को समझाती थी कि मुंबई में जगह की समस्या बड़ी विकट है। अतः थोड़ा-बहुत एडजस्ट कर लेना चाहिए। वंदना को घोंसले रूपी इस फ्लैट में घुटन महसूस हो रही थी, मगर उसके सामने और कोई विकल्प भी नहीं था।

वक्त जैसे-तैसे कट रहा था। वंदना ने एडजस्ट करना सीख लिया था। वह कभी किचन में सोती थी तो कभी बाहर हॉल में रखे सोफा कम बेड पर सो जाती थी। एक दिन रविवार को अमित ने हिचकिचाते हुए वंदना से कहा -"मम्मी, आपसे एक बात कहनी है, आप बुरा तो नहीं मानेंगी?"

"क्या बात है बेटा, भला मैं क्यों बुरा मानूँगी, कहो तो सही...।" वंदना तुरंत बोली।

"मम्मी, आपको तो पता है कि हमारा फ्लैट बहुत छोटा है, जिसमें हम सब को बहुत दिक्कत होती है। जब कभी घर पर मेहमान आ जाते हैं तो समस्या और भी विकट हो जाती है। आपको यहाँ आये करीब सालभर हो गया है। मुझे मालूम है कि आपको भी बहुत परेशानी होती है।" कुछ संभलते हुए अमित ने कहा।

"हाँ, यह तो मैं भी समझती हूँ, अब तो मैंने भी एडजस्ट करना सीख लिया है। मुझे अब कोई परेशानी नहीं होती है।" वंदना ने अमित की परेशानी को समझते हुए कहा।

"वो तो ठीक है मम्मी, पर अगर आप तैयार हों तो हम सबकी परेशानी दूर हो सकती है।" अमित ने अपने मन की बात कहने से पूर्व भूमिका बनाते हुए कहा।

"वो कैसे? मैं कुछ समझी नहीं, मैं किसके लिए तैयार हो जाऊं?"

"मम्मी, हम दो बेड रूम किचन का बड़ा फ्लैट खरीद लें तो आपको एक बेड रूम अलग से मिल जाएगा। इससे आपकी परेशानी कम हो जाएगी। आप अपने कमरे में पूजा-पाठ और संगीत की आराधना कर सकेंगी।"

"हाँ, यह तो अच्छी बात है। ले लो बड़ा फ्लैट, सबको सुविधा होगी।"

मम्मी, इसके लिए हमें अपने गाँव का मकान बेचना होगा...।"

अमित की बात सुनकर वंदना के पैरों तले की जमीन खिसकने लगी। वह अवाक् रह गयी।

"अमित बेटा, यह क्या कह रहा है तू, गाँव का मकान हम कैसे बेच सकते हैं। यह तो तुम्हारे पापा की निशानी है, जहाँ तुम्हारा बचपन बीता है। इस मकान के साथ हमारे जीवन की कई खट्टी-मीठी यादें जुड़ी हुई हैं। इस मकान के साथ हमारा अटूट भावनात्मक रिश्ता है।" वंदना ने किंचित् उदास होते हुए कहा।

"मम्मी, मैं भी यही चाहता हूँ कि अपने माता-पिता की सम्पत्ति को बेचा न जाये, पर यह हमारी विवशता है। मुंबई में अगर हमें बड़ा फ्लैट लेना है तो गाँव वाला मकान बेचना ही पड़ेगा। वैसे भी अब आप हमारे साथ ही रहेंगी तो गाँव का मकान बंद ही पड़ा रहेगा।" अमित ने वंदना को समझाते हुए कहा।

"वह तो ठीक है बेटे, पर..." वंदना की बात बीच में ही काटते

हुए अमित ने कहा - "मम्मी, आपकी उम्र भी बढ़ रही है। फिर बढ़ती उम्र में कई बीमारियां हमारे शरीर में बसेरा करने लग जाती हैं। गाँव में उचित चिकित्सा सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं हैं, जबकि मुंबई में हर प्रकार की चिकित्सा सुविधा राउण्ड दि क्लॉक मिल जाती है।" अमित की इस दलील ने वंदना को निरुत्तर कर दिया। उसके समक्ष अब सिवाय 'हाँ' कहने के और कोई चारा नहीं रह गया था।

अमित को मकान बेचने के लिए गाँव के कई चक्कर लगाने पड़े। वंदना को भी दो-एक बार कुछ कागजात पर हस्ताक्षर हेतु गाँव जाना पड़ा था। बेचान के कागजात पर हस्ताक्षर करते वक्त वंदना की आँखों में छुपा हुआ नीर आँसुओं की शक्ल में उसके गालों को भिगो रहा था। कई दिनों तक वंदना की आँखों से बहते आँसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे, पर अमित और मिताली बहुत खुश थे। उन्होंने बड़ा फ्लैट ढूंढ़ना शुरू कर दिया। काफी दिनों तक भागदौड़ के बाद एक फ्लैट पसंद आ गया। कुछ ही दिनों बाद पजेशन भी मिल गया। परिवार के सभी सदस्य नये फ्लैट में शिफ्ट हो गये। वंदना को एक अलग बेडरूम मिल गया था, पर शिफ्टिंग के पहले दिन से ही आस्था की भौंहें तन गयी थीं। उसे अपने लिए एक अलग बेडरूम चाहिए था। वह पापा-मम्मी के साथ बेडरूम शेयर करने को तैयार नहीं थी। मिताली और आस्था के बीच होने वाले तीखे संवादों से वंदना अनभिज्ञ नहीं थी। आस्था का बेडरूम हड़पने का आरोप उस पर लग रहा था। इस बात को लेकर घर में अक्सर झगड़े होते जिससे वंदना बहुत परेशान हो रही थी। एक रविवार को जब वंदना अपने बेडरूम में पूजा-पाठ कर रही थी, तब आस्था की तेज आवाज से उसका ध्यान विचलित हो गया।

आस्था गुस्से से तमतमाते हुए कह रही थी - "दादी को अब इस उम्र में प्राइवेसी क्यों चाहिए? वे बाहर हॉल में या किचन में भी तो सो सकती हैं। मैं अब बड़ी हो गयी हूँ और मुझे अलग रूम चाहिए। इस वर्ष कॉलेज का मेरा फाइनल ईयर है। मुझे कई बार रात में देर तक पढ़ना पड़ता है।"

अमित ने कहा - "ठीक है, मैं मम्मी से आज ही इस बारे में बात करता हूँ।" तभी वंदना अपने कमरे से बाहर आ गयी और बोली - "अमित, यह कमरा आस्था को दे दें। वह सही कह रही है। उसके लिए पढ़ाई ज्यादा जरूरी है। मेरा क्या है, मैं कहीं पर भी सो जाऊँगी...।"

"थैंक्यू माई डियर दादी। यू आर ग्रेट।" कहते हुए आस्था वंदना से लिपट गयी।

वंदना ने आस्था को अपना बेडरूम दे दिया या आस्था ने हथिया लिया, यह तो पता नहीं चला मगर इस घटना के बाद वंदना इस फ्लैट में मुसाफिर बन गयी थी। वह कभी बाहर हॉल में सोफा पर तो कभी वॉल यूनिट, तिपाई, कुर्सियों की भीड़ में अपने लिए थोड़ी-सी जगह बनाकर सो जाती थी। हॉल में देर तक टीवी चलने पर या मेहमानों के आगमन पर वह मॉड्यूलर किचन में उपलब्ध नाममात्र की जगह को अपना आशियाना बना लेती थी।

एक दिन वंदना ने देखा कि किचन में एक तरफ की दीवार पर लकड़ी की एक बड़ी तख्ती लगायी जा रही थी। कारपेंटर जब फिटिंग करके चला गया तब वंदना ने अमित से पूछा - "क्या काम चल रहा है अमित बेटा?" "कुछ नहीं, आपके सोने के लिए एक फोल्डिंग बेड बनवाया है ताकि आप जब चाहें तब इसे खोलकर सो सकती हैं। इससे आपको डिस्टर्ब नहीं होगा।"

"ट्रेनों में जैसे लोअर, मिडिल और अपर बर्थ होते हैं न, वैसा ही यह बर्थ है न बेटा...!" वंदना किंचित् व्यंग्यात्मक लहजे में बोली। अमित इस व्यंग्य को समझ नहीं सका। वह तुरंत बोला - "हाँ मम्मी, इसे आप ट्रेन की तरह का बर्थ समझ सकती हैं। जब चाहें तब इसे खोल सकती हैं या बंद कर सकती हैं। इससे आपको काफी सुविधा हो जाएगी।"

"बेटा, हम इसे 'मिडिल बर्थ' कह सकते हैं क्योंकि ट्रेन में लोअर तथा अपर बर्थ हर समय खुले रहते हैं मगर मिडिल बर्थ को हर समय खुला नहीं रखा जा सकता है क्योंकि इससे दूसरे मुसाफिरों को परेशानी होती है। जब सोने का वक्त हो तभी इसे खोलना ज्यादा उचित रहता है!" वंदना ने मुस्कुराते हुए फिर एक व्यंग्य बाण चला दिया। इस बार अमित को वंदना के शब्दों में छिपा हुआ व्यंग्य समझ में आ गया, मगर वह कुछ बोला नहीं।

वंदना को किचन में बने फोल्डिंग बेड पर सोने में बहुत दिक्कत होती थी। परीक्षा के दिनों में कई बार रात को दो-ढाई बजे आस्था किचन में आकर अपने लिए कॉफी बनाती थी, तब ट्यूबलाइट की रोशनी और बर्तनों की आवाज से वंदना की नींद खुल जाती थी। बाद में उसे फिर नींद नहीं आती थी। दोपहर में भी उसे चैन की नींद नहीं मिल पाती थी। उसे पोस्टमैन, कूरियर वालों आदि से रूबरू होना पड़ता था। वंदना जैसे-तैसे अपनी जिंदगी काट रही थी।

जब से वंदना का स्थायी आशियाना किचन में शिफ्ट हो गया था, तब से उसके भीतर एक तूफान उठ गया था। उसके दिलो-दिमाग में विचारों की बाढ़ आ गयी थी। क्या उसने यह दिन देखने के लिए ही अपने पति के खून-पसीने की कमाई से बनाये मकान को बेचने की सहमति दी थी? मगर वंदना ने इस तूफान को अपने भीतर ही दबाये रखा। अपने बर्ताव में इसकी भनक तक नहीं लगने दी। उसने कई दिनों तक वैचारिक मंथन किया और अंततः एक ठोस निर्णय ले लिया कि वह इस घर में नहीं रहेगी। अब उसे 'मिडिल बर्थ' पर नहीं सोना है। उसे हर हाल में अपने गाँव लौटना है। वंदना ने इस निर्णय को अंजाम तक पहुँचाने की तैयारी शुरू कर दी।

एक दिन वंदना ने अपने मन की बात अपनी घनिष्ठ सहेली सुनीता को बता दी जो शारदा संगीत विद्यालय में अध्यापिका थी। सुनीता यह जानकर बहुत खुश हो गयी कि वंदना फिर से हमेशा के लिए अपने गाँव में आ रही है। सुनीता ने यह बात स्कूल में सभी को बता दी। वंदना के आगमन की खबर सारे गाँव में भी जंगल में आग की तरह फैल गयी। वंदना जिन बच्चों को संगीत सिखाती थी, वे बच्चे और उनके अभिभावक भी खुश हो गये, मगर गाँव में अब वंदना का मकान नहीं था। इसका दुःख उसे खाये जा रहा था। जब इस बारे में उसने सुनीता से बात की तो उसने बताया कि सेठ रूपचंद ने उसका मकान खरीदा था जो आज भी बंद पड़ा है। सेठ रूपचंद उसके पति के अच्छे मित्र हैं और उनसे उनके पारिवारिक रिश्ते भी हैं। उसके पति सेठ रूपचंद से जरूर बात करेंगे। सुनीता के आश्वासन से वंदना को बहुत तसल्ली मिली और काले घने बादलों के बीच कामयाबी की किरण नजर आने लगी।

दो ही दिन के बाद सुनीता का फोन आया - "वंदना, बहुत अच्छी खबर है। सेठ रूपचंद से हमारी बात हो गयी है। वे अपनी माँ की स्मृति में तुम्हारे मकान को संगीत विद्यालय के रूप में परिवर्तित करना चाहते हैं और आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को मुफ्त में संगीत की शिक्षा देने की भी उनकी योजना है। वे तुम्हें इस विद्यालय की प्रभारी बनाना चाहते हैं। जहाँ तक तुम्हारे रहने का सवाल है तो इसकी व्यवस्था फिलहाल तुम्हारे अपने मकान में ही हो जाएगी, बाकी हम सब हम संभाल लेंगे। बस, यह बताओ कि तुम कब आ रही हो?"

"बहुत ही जल्दी आऊँगी सुनीता...।" अपनी आँखों से छलकते हुए खुशी के आँसुओं को पल्लू से पोंछते हुए वंदना ने कहा। अब वंदना के मन में उठा विचारों का तूफान थम गया। उसने गाँव जाने की सारी तैयारी कर ली। अब इस वह इस पिंजरे से फुर्र होने के लिए मौके की तलाश में थी। एक दिन अमित ने बताया कि वह अपने पत्नी और बच्चों के साथ चार दिनों के लिए लोणावला घूमने जा रहा है। वंदना के लिए यह बहुत अच्छा मौका था।

अमित अपने परिवार के साथ चार दिनों के लिए लोणावला चला गया। इधर वंदना ने अपना सारा सामान समेट लिया और अगले ही दिन एक प्राइवेट कार से गाँव के लिए रवाना हो गयी। अमित जब लोणावला से लौटा तो देखा दरवाजे पर ताला लटक रहा है। उसे ताज्जुब हुआ कि माँ बिना बताये कहाँ चली गयीं। दरवाजा खोला तो सोफा के पास तिपाई पर एक चिट्ठी रखी थी। अमित ने लपक कर चिट्ठी उठायी और पढ़ने लगा -

प्रिय अमित,

मुझे घर में न पाकर तुम्हें ताज्जुब हुआ होगा, पर कोई चिंता न करना। मैं अपने गाँव जा रही हूँ। बेटा, इस घर में मेरा दम घुट रहा था, मैं खुले आसमान के नीचे सांस लेने की आदी हूँ। इस बात की चिंता मत करना कि मैं गाँव में कहाँ रहूँगी, कैसे रहूँगी, किसके मकान में रहूँगी, मेरी सारी व्यवस्था हो गयी है।

अमित बेटा, किचन में मेरे लिए लगाया हुआ 'मिडिल बर्थ' जिसे तुम 'फोल्डिंग बेड' कहते हो, उसका आनंद मैंने ले लिया है और मेरा जी भर गया है। इसे अब फोल्ड करके रख देना, भविष्य में तुम्हें भी इसकी जरूरत पड़ सकती है! मुझे अब 'न्यू बर्थ' मिल गया है...जहाँ मैं फिर से अपनी जिंदगी सुकून से जीऊँगी और खुली हवा में सांस ले सकूँगी।

तुम्हारी माँ

वंदना

नवी मुंबई निवासी लेखक भारतीय रिजर्व बैंक से सेवानिवृत्ति के बाद साहित्य सृजन में संलग्न हैं। इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

# परिचर्चा

## "सरकार का दायित्व और नागरिकों का कर्त्तव्य"

मई अंक में प्रस्तुत परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु -

### लोकतंत्र और हमारा दायित्व

वैश्विक दृष्टि से आज लोकतंत्र का बहुत अधिक महत्व है। यह विकसित समाज में न्याय, समानता और स्वतंत्रता की आधारशिला है। लोकतंत्र न केवल लोगों को अधिकार प्रदान करता है बल्कि सरकार को जनता के हित में काम करने की जिम्मेदारी भी देता है। लोकतंत्र में सरकार का प्रमुख दायित्व समानता के साथ नागरिकों की सुरक्षा, कल्याण और समृद्धि की रक्षा करना होता है। साथ ही समाज में न्याय और समानता सुनिश्चित करना भी उतना ही महत्वपूर्ण कार्य होता है।

लोकतंत्र में नागरिकों का दायित्व है - सक्रियता, जागरुकता दिखाना। उन्हें अपने अधिकारों का बोध होना चाहिए। नागरिकों को लोकतंत्र की सुरक्षा में सहायता करने के लिए सरकार के साथ मिल-जुल कर काम करना चाहिए। भ्रष्टाचार, अन्याय और भेदभाव के खिलाफ लड़ाई में भाग लेने का दायित्व भी उनका होता है। लोकतंत्र के मूल तत्त्वों में सरकार को व नागरिकों को संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकारों व कर्त्तव्यों के दृष्टिगत स्वीकृत नियमों और निर्देशों के अनुसार चलना आवश्यक होता है।

भारतीय लोकतंत्र एक निरंतर प्रक्रिया है और उसका समायोजन चुनौतियों और संवेदनशीलता के साथ होता है। कुछ क्षेत्रों में उसने महत्वपूर्ण प्रगति की है। जैसे तकनीकी की उन्नति, आर्थिक विकास और सामाजिक सुधार। हालाँकि कुछ क्षेत्रों में अब भी काम करने की आवश्यकता है। जैसे भ्रष्टाचार उन्मूलन, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं, समाज में आर्थिक असमानता आदि को कम करने के प्रयास आदि। इसलिए हमें अपने सामाजिक और राजनीतिक दायित्वों का पालन करते हुए समाज व राष्ट्र की समृद्धि और सशक्तीकरण के लिए प्रतिबद्ध रहना चाहिए। लोकतंत्र में समाज का सशक्तीकरण कई तरीकों से हो सकता है -

1. शिक्षा : शिक्षा के माध्यम से समाज को जागरूक और सशक्त बनाया जा सकता है। शिक्षा से लोगों को अपने अधिकारों के बारे में जानकारी मिलती है और वे स्वयं को सक्रिय नागरिक के रूप में साबित करने के लिए सक्षम होते हैं।

2. सामाजिक संगठन : सामाजिक संगठन और सरकारी संगठन के माध्यम से लोगों को एक साथ आने और सामाजिक मुद्दों पर आवाज उठाने का मौका मिलता है। यह उन्हें अपनी माँगों के लिए सरकार से लड़ने की शक्ति देता है।

3. मीडिया : मीडिया भी समाज को सशक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि यह लोगों को जानकारी व जागरुकता प्रदान करता है। साथ ही सरकार की निगरानी भी करता है। जब मीडिया भेदभावपूर्ण हो जाता है तो लोकतंत्र भी कमजोर हो जाता है।

4. न्यायपालिका की स्वतंत्रता : न्यायपालिका को स्वतंत्र और निष्पक्ष बनाये रखना चाहिए ताकि लोकतंत्र के मौलिक सिद्धांतों का पालन हो सके।

5. सार्वजनिक पारदर्शिता : लोकतंत्र की मजबूती के लिए सरकारी प्रक्रिया और निर्णय की सार्वजनिक पारदर्शिता को बढ़ावा देना चाहिए ताकि लोग सरकारी कार्यों को समझ कर उसकी निगरानी कर सकें।

6. चुनाव : चुनाव जनता को अपना नेतृत्व चुनने का मौका देता है जिससे नागरिक सरकार के निर्णयों में सहभागी बनते हैं और आवश्यकता पड़ने पर अपने अधिकारों की सुरक्षा हेतु लड़ाई लड़ सकते हैं।

लोकतंत्र को राजनीतिक दूषितता या धार्मिक कट्टरता अस्थिर बनाते हैं और जन आकांक्षाओं को कमजोर बनाते हैं। यह लोकतांत्रिक संस्थाओं के लिए चुनौती होती है क्योंकि लोग अपनी सरकारों और नेताओं पर विश्वास रखते हैं।

लोकतांत्रिक संस्थाओं और नागरिक समुदाय को सक्रिय रहकर राजनीतिक दूषितता और धार्मिक कट्टरवाद के खिलाफ लड़ते हुए राजनीतिक प्रक्रियाओं को सुधारने का माध्यम बनने की आवश्यकता होती है।

**-तेजकरण सुराणा,** दिल्ली

## सरकार को वादे याद दिलाना सजग नागरिकों का कर्त्तव्य

9 जून को केन्द्र सरकार ने अपना दायित्व सम्भाल लिया है। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने भाजपा के नरेन्द्र मोदी को अपना नेता चुना है। नरेन्द्र मोदी तीसरी बार भारत के प्रधानमंत्री के पद पर विराजमान हुए हैं। चुनावी वादों की बात करें तो सत्तारूढ़ गठबंधन ने कहा है कि वह जरूरतमंद नागरिकों को आगामी पाँच वर्षों तक मुफ्त राशन, मुफ्त पानी और मुफ्त गैस कनेक्शन देगी। पी.एम.सूर्य घर योजना लाएगी। यानी जीरो बिजली बिल की व्यवस्था करेगी। आयुष्मान भारत का 70 साल से अधिक आयु के बुजुर्गों को भी लाभ दिया जाएगा। जन औषधि केंद्र पर 80 फीसदी छूट के साथ दवाई मिलती रहेगी। तीन करोड़ और पक्के मकान बनाए जाएंगे। मुद्रा योजना के तहत 20 लाख रुपये का लोन मिलेगा। दिव्यांगों को पीएम आवास योजना में प्राथमिकता मिलेगी। युवाओं के लिए रोजगार के लाखों अवसर मिलेंगे। तीन करोड़ महिलाओं को लखपति बनाया जाएगा।

यदि ऐसा हुआ तो यह अच्छी बात होगी। यह तो नागरिकों को समझना चाहिए कि पिछले पाँच साल सरकार ने क्या किया? उससे पिछले कार्यकाल में क्या किया? राजनीतिक दल तो भूल जाते हैं लेकिन सजग नागरिकों को बार-बार याद दिलाना चाहिए। वादों के प्रति यदि सत्तारूढ़ दल बेपरवाह हो जाते हैं तो जनता को याद दिलाना चाहिए। दिलचस्प बात यह है कि विपक्षी दल भी पाँच साल लगभग सोये रहते हैं। जनता की उपेक्षा या जनहित में न किये जाने वाले कार्यों के प्रति संसद से सड़क तक जनता को जागरूक कौन करेगा? अलबत्ता माँगों को मनवाने के लिए या विरोध प्रदर्शन के लिए जनता को ही मुश्किल में डालने वाली गतिविधियाँ नहीं की जानी चाहिए।

**-मनोहर चमोली 'मनु'**, पौड़ी गढ़वाल

## जनता, सरकार, विपक्षी दलों के बीच सामंजस्य जरूरी

भारतीय लोकतंत्र सम्पूर्ण विश्व में एक अनोखा लोकतंत्र है जो सभी के हित में सोचने वाला है। लोकतंत्र की कड़ी के चलायमान आधार स्तम्भ चुनाव आयोग ने जबसे चुनाव के सात चरणों की घोषणा की, उसी समय से समस्त राजनीतिक दलों ने दिन-रात चुनाव प्रचार करते हुए अपनी-अपनी प्राप्त करने की कोशिश शुरू कर दी। भारतीय लोकतंत्र के इस महापर्व में जनता ने अपने पसंदीदा दल और उम्मीदवार को अपना अमूल्य मत दिया।

सरकार बनने पर राजनीतिक दलों को जनता से किये गये वादों को शत-प्रतिशत पूर्ण करना चाहिए। वहीं, जनता को समय-समय पर सरकार को अपने वादों एवं घोषणाओं की याद दिलाते रहना चाहिए। सबका हित एवं भला हो, सरकार को ऐसी नीति तैयार करनी पड़ेगी। लोकतंत्र की मजबूती के लिए जनता, सरकार, विपक्षी दलों के बीच आपसी सामंजस्य जरूरी है। जीओ और जीने दो की भावना से काम करना चाहिए जिससे अमूल्य वोट देने वाली जनता का भी हित हो सके।

**-हरीश कुमार सालवी**, दिवेर

## जवाबदेह सरकार के लिए जवाबदेह नागरिक जरूरी

नागरिक जब तक अपने कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक नहीं होगा, तब तक सरकारों की मनमानी चलती रहेगी। एक जागरूक नागरिक हमेशा अपने कर्म में विश्वास रखता है। वह किसी लोभ-लालच में आकर मतदान नहीं करता। वर्तमान में सभी दल ऐसे वादे करते हैं जिन्हें पूरा किया जाना किसी रूप में सम्भव नहीं होता, लेकिन वोट के लिए वे ऐसा करते हैं।

वोट देने के बाद लोग यह समझने लग जाते हैं कि पाँच साल तक सारी जिम्मेदारी निर्वाचित प्रतिनिधि की है। वह सरकारी विभागों में फोन करे और हमारा काम हो जाये। यहीं से उनकी मनमानी शुरू हो जाती है। अपने-पराये का मसला खड़ा हो जाता है। जनप्रतिनिधि तभी जवाबदेह बन सकते हैं जब जनता अपने अधिकार के प्रति ही नहीं, अपने दायित्व के प्रति भी सावचेत हो। लोभ-लालच एवं जाति-धर्म से ऊपर उठकर देशहित को ध्यान में रखकर सरकार को चुने। सरकार को मनमानी करने का मौका ही मतदाता देता है। निर्वाचित प्रतिनिधि से सामूहिक लाभ पूरा होने की उम्मीद की जानी चाहिए न कि व्यक्तिगत हित। आज व्यक्तिगत लाभ के लिए ही मारामारी चल रही है। यदि हमें सरकारों की मनमानी रोकनी है तो हमें अपने कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक होना होगा। नागरिक अपनी जवाबदेही के प्रति जागरूक होकर ही जवाबदेह सरकार बना सकते हैं और इस जवाबदेही की शुरुआत स्वयं से ही करनी होगी।

**-रामस्वरूप रावतसरे**, शाहपुरा (जयपुर)

## कान्ति और क्रान्ति की मशाल बने नागरिक

उद्यम, प्रवृत्ति व कर्त्तव्यपरायणता के ताने-बाने से निर्मित बाती तथा निष्पक्ष, निर्वैर व न्याय स्वरूपा सरकार के स्नेह से प्रज्वलित दीप है - भारत देश का लोकतंत्र। यह दीप सही जलता है तो सरकार प्रभावी बनती है और आम आदमी में झलकता है संतोष व शांति का भाव - विडम्बना यह है कि चुनी हुई सरकार भौतिक उपलब्धि को तथा कोरे वादों से मतदाता के मन में उठते लुभावने लड्डुओं की मृग मरीचिका के प्रदर्शन मात्र को विकास की संज्ञा दे देती है। इससे मतदाता भटक जाता है। स्वानुशासन के बजाय प्रशासन ही महत्वपूर्ण बन जाता है। आजादी के बाद इतना लम्बा अरसा बीतने के बाद भी सरकारें शिक्षा, रक्षा व चिकित्सा की ओर केन्द्रित होने के बजाय वोट की राजनीति में ही उलझी

रहती हैं और मतदाता अपनी स्वार्थपूर्ति में। नतीजतन सही समय पर सही तरीके से सही माँग करने की आवाज दब जाती है। मुफ्त और खैरात की प्राप्ति को लालायित हो जाता है आम नागरिक।

ऐसे में आवश्यकता है कि सरकार लुभावने वादे नहीं करे, अपितु जन कल्याणकारी प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख हो। शिक्षा को एक क्रान्तिकारी मोड़ देने की अपेक्षा है। सरकार की पहली प्राथमिकता हो - हर नागरिक को अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएं मिलें, वह किसी उद्यम या सेवा से जुड़े, प्रामाणिक बने, सुखी बने तथा व्यसन मुक्त जीवन जीये। नागरिकों में पारस्परिक सद्भाव की भावना हो। धर्म तो सबका एक ही है - "मानव धर्म" और इसका मुख्य स्रोत है 'अणुव्रत" जो प्रत्याशियों और मतदाताओं दोनों के हृदय परिवर्तन का एक कारगर उपाय है। कांति और क्रांति की मशाल बनेगा नागरिक तो नक्सलवाद, आतंकवाद, साम्प्रदायिक विवाद, तोड़फोड़ की प्रवृत्ति, भयवाद से मुक्ति मिल सकती है। सरकार का प्रमुख दायित्व हो शिक्षा, संस्कृति, सबको काम और लोकतंत्र का प्रशिक्षण तथा नागरिक का परम कर्त्तव्य भी यही हो कि इन्हीं बिंदुओं के सम्बंध में अपने कदम बढ़ाये। अपनी प्रवृत्ति को राष्ट्रीय प्रकृति के साथ संबद्ध करे। मानवीयता को मान दे। परोस्परोपग्रह के भाव जगाये।

-**धर्मचन्द जैन 'अनजाना'**, थामला

## शुचितापूर्ण प्रत्याशियों का हो चयन

किसी भी देश में लोकतंत्र का तब तक कोई मायने नहीं है, जब तक वहाँ की जनता के लिए देशहित सर्वोपरि नहीं हो। जाति, धर्म, संप्रदाय आदि कुछ भी देशहित से ऊपर नहीं होना चाहिए। यह स्वस्थ लोकतंत्र की पहली शर्त है। चुनावों के दौरान राजनीतिक दल जनता को खुश करने के लिए वादों की झड़ी लगा देते हैं। चाहे उन्हें पूरा कर पाना संभव ही न हो। ऐसे वादों पर चुनाव आयोग को पूर्ण प्रतिबंध लगा देना चाहिए। साथ ही नफरत, घृणा और वैमनस्य फैलाने वालों पर कठोर कार्रवाई करनी चाहिए। ऐसे लोगों व दलों की मान्यता हमेशा के लिए खत्म कर देनी चाहिए। जब जनता नैतिक, सादगीपूर्ण, प्रामाणिक, शालीन, व्यसनमुक्त और देशभक्त जनप्रतिनिधियों के हाथ में शासन की बागडोर सौंपेगी तो हर नागरिक का तथा देश का भला होगा।

-**शुभकरण बैद,** लाडनूं

## लोकतंत्र में अणुव्रत

ऊँचे गगन में लहराता झंडा, लोकतंत्र की महिमा गाये।
लोकतंत्र की गरिमा रखने, आओ,अणुव्रतों को अपनाएं।

जात-पांत की गंदी राजनीति, समाज से हम मिलकर भगाएं।
अच्छे भविष्य निर्माण के हेतु, आओ,अणुव्रतों को अपनाएं।

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, सर्वधर्म समभाव हम रख पाएं।
मानवता के रिश्तों को बचाने, आओ,अणुव्रतों को अपनाएं।

समाज से भ्रष्टाचार मिटाने को, सदाचार का पाठ पढ़ाएं।
हिंसात्मक प्रवृत्ति से हटकर, आओ,अणुव्रतों को अपनाएं।

तेरा-मेरा की राजनीति से हट, विकास हो एकमात्र ध्येय हमारा।
क्षणिक लोभ में न फँसें कभी, आओ,अणुव्रतों को अपनाएं।

-**वीरेंद्र सालेचा,** अहमदाबाद

आगामी अंक का विषय

## परिचर्चा

# कैसे पूरी हो शांति की चाह?

2 अक्टूबर 'विश्व अहिंसा दिवस' से ठीक 11 दिन पहले 21 सितम्बर को मनाये जाने वाले 'विश्व शांति दिवस' का विशेष महत्व है। संयुक्त राष्ट्र संघ की अगुआई में ये दोनों विशिष्ट दिवस अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाये जाते हैं। दुनिया यह स्वीकार कर चुकी है कि बिना अहिंसा के शांति संभव नहीं है। अहिंसा का विचार मानव मन की गहराइयों में जितना परिपुष्ट होगा, उतनी ही सघनता में समाज, राष्ट्र और विश्व स्तर पर शांति स्थापित की जा सकेगी।

प्रश्न है, व्यक्ति कैसे अपने चिंतन और व्यवहार में अहिंसा को अपनाये? जब चारों ओर हिंसा फैली हो, कैसे हमारी नयी पीढ़ी अहिंसा के संस्कारों को आत्मसात करे? एक जवाबदेह नागरिक के नाते क्या है हमारी जिम्मेदारी? शिक्षा जगत और बुद्धिजीवी वर्ग क्या अपनी भूमिका भली प्रकार निभा रहा है? सरकार से क्या हैं हमारी अपेक्षाएं? अहिंसा के प्रसार में धर्म और धर्मगुरुओं की क्या है जिम्मेदारी?

'अणुव्रत' पत्रिका के **सितम्बर 2024 अंक** में प्रकाशित होने वाली परिचर्चा हेतु इन्हीं सब मुद्दों पर आमंत्रित हैं आपके विचार। रचनात्मक, प्रयोगधर्मी और अनुभवजन्य विचारों को प्रकाशन में प्राथमिकता दी जाएगी। अपने विचार अधिकतम 200 शब्दों में हमें **10 अगस्त 2024 तक 9116634512 पर व्हाट्सएप के माध्यम से भेजें।**

# अणुव्रत समाचार

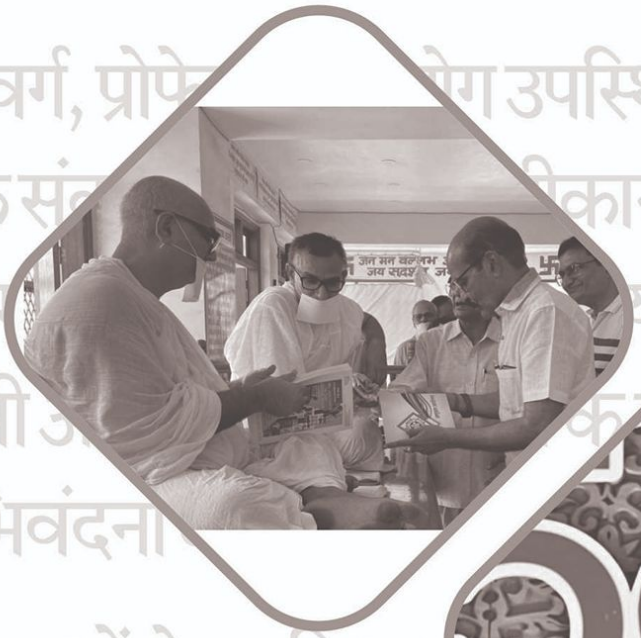

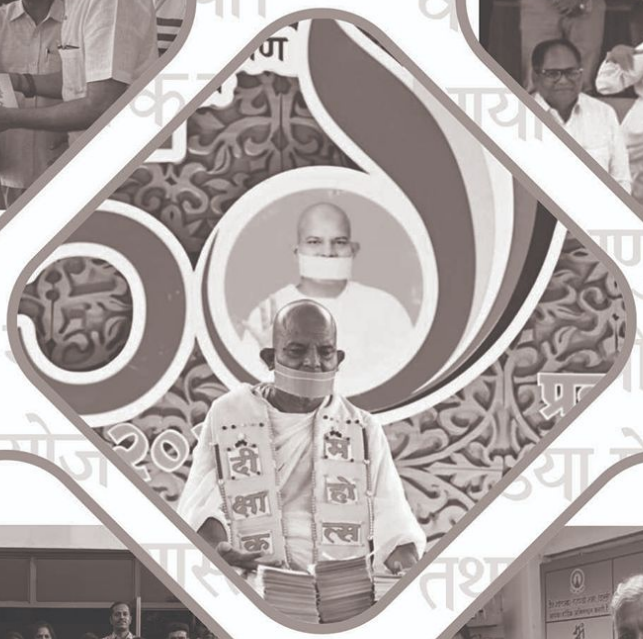

अणुविभा

# चिल्ड्रन'स पीस पैलेस

## राजसमंद

**प्रकृति की गोद में अनुभव करिए शान्ति के स्पंदनों को...**

एक बार अवश्य देखिए...

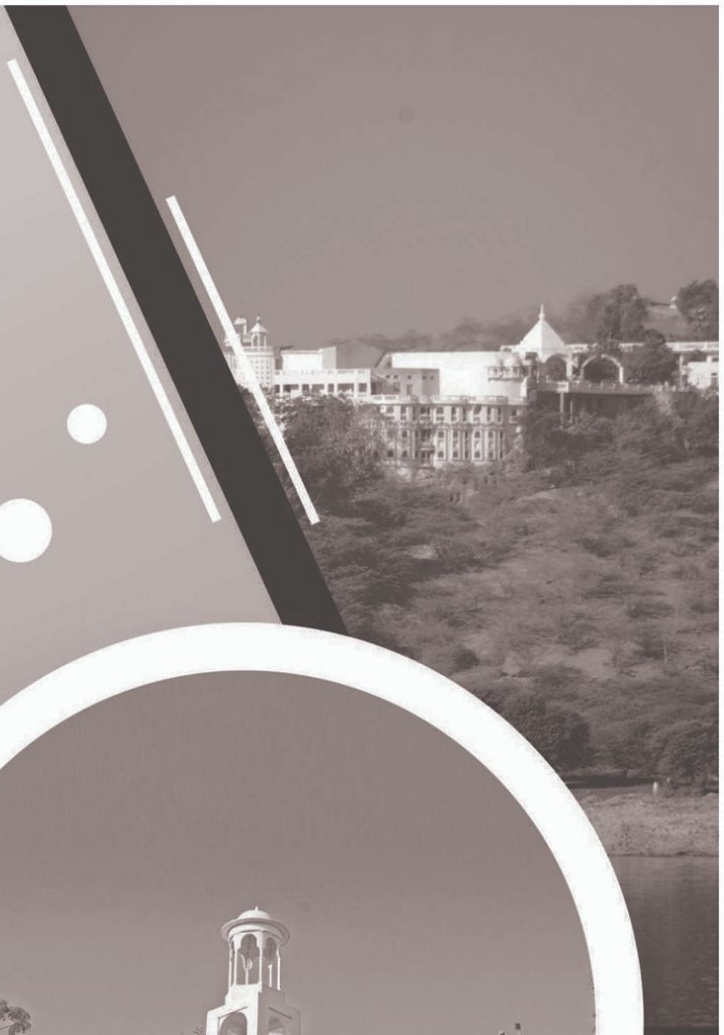

सम्पर्क सूत्र

- राजसमंद
  +91 911 66 34513, +91 992 85 08098

**अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी**

पोस्ट बॉक्स संख्या - 28, राजसमन्द (राजस्थान)

- office@anuvibha.org
- www.anuvibha.org
- www.facebook.com/anuvibha.page

# देश भर में मना अनुशास्ता अभिवंदना समारोह

## आचार्य श्री महाश्रमण के दीक्षा कल्याण महोत्सव के उपलक्ष में हुए कार्यक्रम

■■ संयोजिका डॉ. कुसुम लुनिया की रिपोर्ट ■■

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत समितियों व अणुव्रत मंचों द्वारा अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के दीक्षा कल्याण महोत्सव के उपलक्ष में 22 मई को 'अनुशास्ता अभिवंदना समारोह' आयोजित किया गया। इस अवसर पर आयोजित वैचारिक संगोष्ठियों में वक्ताओं ने अणुव्रत अनुशास्ता के विरल व्यक्तित्व व विलक्षण कर्तृत्व पर प्रकाश डाला।

इन कार्यक्रमों में सभी जाति, वर्ग, प्रोफेशन के लोग उपस्थित रहे तथा प्रायः सभी ने संयम हेतु एक संकल्प अवश्य ही स्वीकारा। अनेक कार्यकर्ताओं ने द्रव्य संयम, एकासन, उपवास किया। गाजियाबाद अणुव्रत समिति के मंत्री अनिल लुनिया ने तेले के तप के साथ अणुव्रत अनुशास्ता की अभिवंदना की।

अन्य धर्म-सम्प्रदायों के धर्मगुरुओं के सान्निध्य में स्थानक, जैन मन्दिर, गुरुद्वारे व अन्यान्य कार्यस्थलों पर भी आयोजन हुए। इन कार्यक्रमों में अनेक बुजुर्गों व युवाओं ने अणुव्रत अनुशास्ता को अभिवंदना का अर्घ्य चढ़ाया। इन आयोजनों से अणुव्रत आंदोलन को बल मिला तथा नये कार्यकर्ताओं का अणुव्रत से भी जुड़ाव हुआ।

कार्यक्रम को अणुव्रत आन्दोलन के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार का आध्यात्मिक पथदर्शन तथा अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर और महामंत्री भीखम सुराणा का नेतृत्व मिला। अणुव्रत संसदीय मंच के संयोजक अर्जुनराम मेघवाल समेत अणुविभा के पदाधिकारियों एवं कार्यसमिति के सदस्यों को जहाँ भी मौका मिला, अनुशास्ता अभिवंदना समारोह में अपनी सक्रिय सहभागिता दर्ज की।

नॉर्थ जोन से प्रणीता तलेसरा, सेन्ट्रल जोन से राजन जैन, ईस्ट जोन से पंकज सेठिया, साउथ जोन से केसरी चन्द गोलछा, वेस्ट जोन से संगीता हिंगड़ तथा नेपाल से मिलन नौलखा ने आयोजन करवाने में सहयोग किया।

अणुव्रत मीडिया टीम के संयोजक पंकज दुधोड़िया, सदस्य वीरेन्द्र बोहरा व जयन्त सेठिया ने लगभग 99 समाचार सोशल मीडिया में प्रसारित किये। प्रिंट मीडिया ने भी संगोष्ठी के समाचार तथा आलेख प्रकाशित किये। दिल्ली ऑफिस से मनीष सोनी, नवीन शर्मा ने सहयोग दिया।

विभिन्न समितियों की ओर से आयोजित अभिवंदना समारोह की झलकियां प्रस्तुत हैं-

**अणुव्रत समिति जयपुर** द्वारा निर्माण नगर स्थित ज्ञान विहार में आयोजित समारोह में मुख्य वक्ता राजस्थान सरकार में उद्योग एवं वाणिज्य विभाग के अतिरिक्त आयुक्त युवक रत्न राजेंद्र सेठिया ने आचार्य श्री महाश्रमण के अवदानों की हमारे जीवन में प्रासंगिकता के बारे में बताया।

मुनिश्री तत्त्वरुचि 'तरुण' ने आचार्य श्री महाश्रमण के जीवन के विभिन्न आयामों से अवगत कराते हुए अपने जीवन में संयम को अपनाने की प्रेरणा दी।

मुनिश्री संभव कुमार ने मुक्तकों के माध्यम से आचार्यश्री के प्रति अपनी भावनाओं की प्रस्तुति दी। इससे पहले समिति अध्यक्ष विमल गोलछा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि हम सभी को आज के दिन संयमित जीवन जीने का संकल्प करना चाहिए।

**अणुव्रत समिति गाजियाबाद** द्वारा जैन स्थानक रामपुरी में आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री रोहित कुमार ने कहा कि आचार्य श्री महाश्रमण सद्भावना संवर्धक महान आचार्य हैं। उनसे नेपाल से आते वक्त मिलना हुआ था, उनकी अहिंसा यात्रा नैतिकता, सद्भावना, सौहार्द, शान्ति, समता का संदेश लेकर चल रही है। गुरुओं की ऐसी अभिवंदना सभी को करनी चाहिए, इससे सम्यक्त्व पुष्ट होता है।

**अणुव्रत समिति विजयवाड़ा** ने अजित नाथ वाटिका में अभिनंदन चंद्र सागर एवं साध्वीश्री मयूरयशा के सान्निध्य में अभिवंदना समारोह मनाया। श्री जैन मूर्ति पूजक संघ की विशेष उपस्थिति में चारित्रात्माओं ने अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के प्रभावशाली बाह्य व्यक्तित्व व अलौकिक आन्तरिक व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए उन्हें कोटि-कोटि अभिवंदन किया।

**अणुव्रत समिति धुबड़ी** की ओर से गुरुद्वारा में आयोजित कार्यक्रम में वहाँ के प्रमुख बलबीर सिंह ने कहा कि आचार्य महाश्रमण मानवता के मसीहा हैं। असम यात्रा के दौरान आचार्य प्रवर यहाँ पधारे थे।

**अणुव्रत समिति चूरू** ने पेंशनर समाज में तथा **काठमांडू, कोटकपूरा, करवड** आदि समितियों ने नये प्रयोगों से अभिवंदना के स्वरों को अनुगूँजित किया। **अणुव्रत समिति मुंबई** तथा **अणुव्रत समिति पाली** ने एक से अधिक कार्यक्रम किये।

## निम्नलिखित स्थानों पर अभिवंदना समारोह का आयोजन किया गया –

जयपुर, हुबली, धरान, बीदासर, छापर, दलखोला, सरदारशहर, अहमदाबाद, किशनगंज, बोरावड़, कोलकाता, नोएडा, सिरसा, जालना, मोमासर, धुबड़ी, जाखल, दमक, फरीदाबाद, इनरुआ, इचलकरंजी, नाथद्वारा, दिनहाटा, कोटकपूरा, बेंगलुरु, हावड़ा, करवड, पत्थरी, रीछेड़, श्रीगंगानगर, हिसार, चूरू, राजबिराज, बज्जू, बीकानेर, गोगासर, दार्जीलिंग, मुंबई, विजयवाड़ा, राजसमंद, औरंगाबाद, दिवेर, शिवपुरी, मण्डी गोविन्दगढ़, सिलीगुड़ी, पीसांगन, भद्रपुर, पाली, बालोतरा, सवाईबड़ी, गुवाहाटी, उदयपुर, नोखा, हनुमानगढ़, धुलिया, बिर्तामोड, गदग, लावा सरदारगढ़, इस्लामपुर, इंदौर, विराटनगर, गाजियाबाद, खारूपेटिया, मैलूसर, आसीन्द, कल्याणपुरा, अजमेर, कटक, तेजपुर, पोखरा, गोगुन्दा, भुज, पीलीबंगा, विजयनगर, काठमांडू, जसोल, जोधपुर, लाडनूं, पुणे, बरपेटारोड, जींद, बेल्लारी, श्रीडूंगरगढ़, नेपालगंज, हनुमाननगर, धुलाबाड़ी

अहमदाबाद

गाजियाबाद

आसीन्द

बरपेटारोड

गुवाहाटी

हावड़ा

भुज

दलखोला

दलखोला

छापर

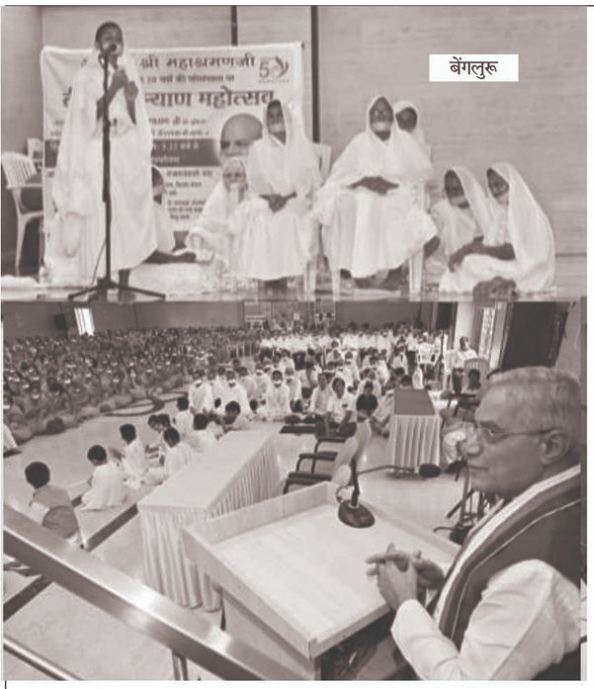
बेंगलुरू

चुरू

बीकानेर

काठमांडु

सिलीगुड़ी

दिनहाटा

हुबली

अजमेर

# सूर्य की तरह दैदीप्यमान है आचार्य श्री महाश्रमण : साध्वी डॉ गवेषणाश्री

## अणुव्रत समिति द्वारा अनुशास्ता अभिवन्दना का समायोजन

## बुधवार से प्रारंभ होगा पंचदिवसीय कन्या संस्कार निर्माण शिविर

## आचार्य श्री महाश्रमणजी कीर्तिधर महापुरुष है – मुनि दीपकुमार

आचार्य श्री महाश्रमणजी का अभिवंदना समारोह आयोजित

## विश्व पर्यावरण दिवस पर प्रति...

## "विचारों का प्रदूषण सबसे ख...

## छापर में मनाया आचार्य महाश्रमण का दीक्षा कल्याणक दिवस

**सुजानगढ़।** निकटवर्ती कस्बे छापर के भिक्षु साधना केंद्र में आचार्य महाश्रमण का 50 वां दीक्षा कल्याणक दिवस मनाया गया। अणुव्रत समिति छापर, तेरापंथ सभा छापर सहित सभी संघीय संस्थाओं ने आचार्य महाश्रमण के प्रति अभिवंदना जताई। तेरापंथ महिला मंडल एवं तेरापंथ कन्या मंडल ने गीतिका के माध्यम से अभिवंदना जताई। इस अवसर पर मुनि डॉ. विनोद कुमार ने कहा कि तेरापंथ धर्म संघ को आचार्य महाश्रमण ने नई ऊंचाइयों पर विद्यमान किया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के संरक्षक प्रदीप सुराणा, अध्यक्ष विनोद ...

लाडनूं. अभिवंदना समारोह में अणुव्रत ...

## आचार्य महाश्रमण ने तेरापंथ धर्मसंघ को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया : मुनि विनोद कुमार

छापर | भिक्षु साधना केंद्र में बुधवार को जैन श्रावकों ने तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें आचार्य महाश्रमण का 50वां दीक्षा कल्याणक दिवस मनाया। सेवाकेंद्र व्यवस्थापक मुनि विनोद कुमार के सानिध्य में हुए कार्यक्रम में श्रावकों ने आचार्य महाश्रमण के प्रति श्रद्धा भाव प्रकट किए। तेरापंथ महिला मंडल व तेरापंथ कन्या मंडल ने गीतिका की प्रस्तुति दी। मुनि विनोद कुमार ने कहा की तेरापंथ धर्मसंघ को आचार्य महाश्रमण ने नई ऊंचाइयों पर विद्यमान किया। अणुव्रत समिति संरक्षक प्रदीप सुराणा, अध्यक्ष विनोद नाहटा, महिला मंडल मंत्री हेमलता दूधोड़िया, सूरजमल नाहटा, सभा मंत्री चमन दूधोड़िया, छाया दूधोड़िया, सरोज भंसाली, सुमन बैद ने आचार्य महाश्रमण के प्रति मंगल भावना जताई।

**सुजानगढ़|** शासनश्री सुप्रभा व साध्वी संघ प्रभा के सानिध्य में बुधवार को तेरापंथ सभा भवन में आचार्य महाश्रमण के दीक्षा कल्याणक उत्सव को स्वर्ण जयंती के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। मंगलाचरण सिद्धि बेद ने किया। ललिता बेद ने गीत के भावों की प्रस्तुति दी। सभा सदस्य केसरीचंद मालू ने आचार्य के जीवन को उल्लेखित किया। महिला मंडल की बहनों ने गीतिका की प्रस्तुति दी गई। साध्वी मनीषा श्रीजी ने आचार्य महाश्रमण के जीवन पर प्रकाश डाला। साध्वी वृंद ने दीक्षा कल्याणक उत्सव पर गीत की प्रस्तुति दी। निवर्तमान अध्यक्ष ...

## अणुव्रत अभिवंदना समारोह संपन्न

भास्कर न्यूज | राजसमंद

## अनुशास्ता अभिवंदना समारोह में दी मंगलकामनाएं



श्रीगंगानगर. कार्यक्रम में प्रवचन देती साध्वीश्री।

श्रीगंगानगर @ पत्रिका. आचार्य श्री महाश्रमण के 50 वें दीक्षा कल्याण महोत्सव पर बुधवार को रिद्धि-सिद्धि प्रथम में रखे गए अनुशास्ता अभिवंदना समारोह में मंगलकामनाएं दी गईं। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वाधान में अणुव्रत समिति का यह कार्यक्रम साध्वीश्री प्रज्ञावती के सान्निध्य में हुआ। राजस्थान प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी सहायक निदेशक लोक सेवाएं ऋषभ जैन मुख्य वक्ता थे। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों को जीवन में सकारात्मक बदलाव ... उन्होंने आचार्यश्री को समता, सक्रियता और सरलता की प्रतिमूर्ति भी बताया। साध्वश्री कीर्तिप्रभा, मयंकयशा एवं प्रशांतयशा के अलावा तेरापंथी सभा के अध्यक्ष देव सुराणा, अणुव्रत समिति के संरक्षक विमल कोटेचा, अध्यक्ष राजकुमार जैन, जैन कन्या महाविद्यालय की प्रबंध समिति के सचिव नरेश जैन, राजेंद्र आंचलिया ने भी विचार रखे। संतोष दुगड़ ने गीतिका प्रस्तुत की।अणुव्रत गीत से मंगलाचरण हुआ। अणुव्रत नियमों का संकल्प भी करवाया गया। मुख्य वक्ता आरएएस जैन को समिति के संरक्षक विजय कुमार ...

### आचार्यश्री को समता, सक्रियता और सरलता की प्रतिमूर्ति बताया

# अनुशास्ता अभिवंदना समारोह में आचार्यश्री महाश्रमण को दी मंगलकामनाएं

### अणुव्रत समिति ने नियमों के संकल्प भी करवाए





**श्रीगंगानगर।** आचार्य श्री महाश्रमण के 50 वें दीक्षा कल्याण महोत्सव पर बुधवार को रिद्धि सिद्धि प्रथम में रखे गए अनुशास्ता अभिवंदना समारोह में मंगलकामनाएं ... अधिकारी सहायक निदेशक लोक सेवाएं ऋषभ जैन मुख्य वक्ता थे।

अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों को जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने वाला बताते हुए वक्ताओं ने ... साध्वश्री कीर्तिप्रभा, मयंकयशा एवं प्रशांतयशा के अलावा तेरापंथी सभा के अध्यक्ष देव सुराणा, अणुव्रत समिति के संरक्षक विमल कोटेचा, अध्यक्ष राजकुमार जैन, जैन कन्या ... का संकल्प भी करवाया गया। मुख्य वक्ता आरएएस ऋषभ जैन को समिति के संरक्षक विजय कुमार गोयल, शरत जैन आदि ने साहित्य भेंट किया। अणुव्रत समिति के मंत्री ...

# अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

## पर्यावरण जागरुकता अभियान

# विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधरोपण समेत अनेक आयोजन

■■ संयोजिका डॉ. नीलम जैन की रिपोर्ट ■■

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के नेतृत्व में विश्व पर्यावरण दिवस पर 5 जून को देशभर की अणुव्रत समितियों व मंचों ने पौधरोपण किया। इसके साथ ही कई स्थानों पर अनेक रुचिकर व नवाचार युक्त गतिविधियां आयोजित की गयीं। इन कार्यक्रमों में संबंधित अणुव्रत समिति व मंच के पदाधिकारियों व सदस्यों के साथ ही विभिन्न सभा, संस्थाओं के प्रतिनिधियों की सक्रिय भागीदारी रही।

**अणुव्रत समिति राजसमंद** द्वारा 100 फीट रोड स्थित चिंतन भवन में पर्यावरण संगोष्ठी आयोजित की गयी। विदुषी साध्वियों

के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अणुविभा के ट्रस्टी, तेरापंथी सभा कांकरोली अध्यक्ष, अणुव्रत समिति अध्यक्ष, संगठन मंत्री, कांकरोली महिला मंडल अध्यक्ष सहित अनेक श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे।

**गंगाशहर अणुव्रत समिति** द्वारा वृक्षारोपण संकल्प कार्यक्रम का आयोजन शांति निकेतन के पावन प्रांगण में हुआ। इस अवसर पर सेवा केंद्र की व्यवस्थापिका साध्वीश्री चरितार्थ प्रभा ने कहा

कि वर्तमान में प्रदूषण की जो स्थिति है, उसके कारण धरती का तापमान बढ़ रहा है, बीमारियां बढ़ रही हैं। प्रकृति के सुरक्षित रहने से ही हम सबकी सुरक्षा संभव है। साध्वीश्री प्रांजल प्रभा ने भी विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम के बैनर का लोकार्पण अणुविभा के पर्यावरण जागरुकता अभियान की राष्ट्रीय संयोजिका और आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के पूर्व महामंत्री ने किया। अभियान के अंतर्गत हर व्यक्ति को वृक्षारोपण हेतु संकल्प पूर्वक जोड़ा जाएगा। मंत्री ने अभियान से जुड़ने का आह्वान करते हुए कहा कि हम पर्यावरण संरक्षण कर भावी पीढ़ी को स्वास्थ्य का उपहार दे सकते हैं।

**विजयवाड़ा अणुव्रत समिति** द्वारा म्युनिसिपल पार्क, योग

साधना केन्द्रों व अन्य इलाकों में पौधों का वितरण करने के साथ ही पर्यावरण को सुरक्षित रखने का संदेश दिया गया।

**चिकमंगलूर अणुव्रत समिति** के तत्त्वावधान में अंबर वैली स्कूल के बच्चों ने पर्यावरण संरक्षण के संदेश के साथ 5

किलोमीटर लंबी रैली निकाली। उन्होंने वाहन जनित प्रदूषण से बचाव के लिए स्केटिंग और साइकिलिंग कर स्वच्छ पर्यावरण का संदेश दिया। इसके बाद आजाद पार्क में आयोजित कार्यक्रम में स्कूल की ओर से बच्चों को बीजों भरी पेंसिल का वितरण किया गया।

# अणुव्रत समाचार

**अहमदाबाद अणुव्रत समिति** ने वृक्षारोपण और पर्यावरण संरक्षण का कार्यक्रम आयोजित किया। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के डीजल शेड साबरमती के प्रांगण में

वृक्षारोपण के साथ ही कार्मिक विभाग द्वारा नुक्कड़ नाटिका प्रस्तुत की गयी। जो रेल कर्मचारी अपने घर पर पौधे लगाना चाहते थे, उन्हें निःशुल्क पौधे प्रदान किये गये। अणुव्रत समिति ने सेव अर्थ और अन्य संस्थाओं के सहयोग से 250 से अधिक पौधे लगाये। कार्यक्रम में डीआरएम एडीआई सुधीर कुमार शर्मा, डीआरएम संगीता शर्मा, प्रेसिडेंट पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन के साथ ही सौरभ मोदी एवं अशोक मीना आदि की उपस्थित रही। अणुव्रत समिति की ओर से लोगों को पर्यावरण की सुरक्षा के संकल्प दिलवाये गये।

**मुम्बई अणुव्रत समिति**, क्षेत्र बोरिवली में पौधों का वितरण किया गया। साध्वीश्री हर्षिता ने अणुव्रत समिति के कार्यों की

सराहना की और मंगल पाठ सुनाया। मुम्बई अणुव्रत समिति, क्षेत्र भिवंडी के कार्यक्रम में विभिन्न प्रकार के फूलों और फलों के पौधे मंदिर और गार्डन में लगाये गये। कई बहनों ने अपने घरों में पौधे लगाकर जागरुकता दिखायी। मुम्बई अणुव्रत समिति, क्षेत्र घाटकोपर ने पृथ्वी लाइफ स्टाइल कॉम्प्लेक्स में 51 पौधे लगाये तथा इनकी देखभाल की जिम्मेदारी लेने का संकल्प जताया।

**उदयपुर अणुव्रत समिति** की ओर से अरिहंत भवन में शासनश्री मुनि सुरेश कुमार के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री सिद्धप्रज्ञ ने कहा कि पर्यावरण की शुद्धि के लिए संयम प्रधान जीवनशैली जरूरी है। अणुव्रत जीवन को संयमित एवं पर्यावरण को नियमित बनाता है। स्वच्छ पर्यावरण के लिए विचारों को प्रदूषित होने से बचाने की सख्त जरूरत है।

अणुव्रत समिति, तेरापंथ महिला मंडल एवं सद्भाव सेवा संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार दिये गये।

**सिलिगुड़ी अणुव्रत समिति** की ओर से गुरुकुल स्कूल में 50 बच्चों की उपस्थिति में आयोजित कार्यक्रम में नीम, गोल मिर्च, पपीता और अन्य पौधे लगाये गये। इस दौरान बच्चों के लिए पौधे

उगाने की वर्कशॉप के साथ ही उन्हें बीज वितरित किये गये। प्रश्नोत्तर सत्र में सही उत्तर देने वाले बच्चों को पौधे वितरित किये गये। अणुव्रत समिति ने स्कूल को जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम के लिए किताबें प्रदान कीं। समिति ने हर वार्ड में इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करने का संकल्प लिया।

**दलखोला अणुव्रत समिति** की ओर से क्रीड़ा किड्स किंडरगार्टन स्कूल में स्थित अणुव्रत वाटिका में पौधे लगाने और उनकी

देखभाल के बारे में बताया गया। बच्चों ने अखबार से ईको फ्रेंडली कैरीबैग्स बनाये तथा कविताएं सुनायीं। अणुव्रत समिति के सदस्यों ने अपने घरों में भी पौधे लगाये।

**इस्लामपुर अणुव्रत समिति** की ओर से नेताजी एकेडमी चिल्ड्रन

स्कूल स्थित अणुव्रत वाटिका के साथ ही स्थानीय विधायक के आवास पर भी पौधरोपण किया गया। कार्यक्रम में सभी को पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलायी गयी।

**खारुपेटिया अणुव्रत समिति** की ओर से तेरापंथ भवन में आयोजित कार्यक्रम में एक नवाचार देखने को मिला। यहाँ एक गमला बनाया गया जिसमें पत्तियों पर अणुव्रत आचार संहिता के 11 नियम प्रभावी ढंग से लिखे गये थे। प्लास्टिक, जल, और वायु प्रदूषण के कारण और बचाव के उपायों पर चर्चा हुई। इस अवसर पर पौधरोपण भी किया गया।

**फारबिसगंज अणुव्रत समिति** ने अणुव्रत वाटिका में पौधरोपण किया। **दिनहाटा अणुव्रत समिति** की ओर से बोडो सॉलमारी ठाकुर पंचानन हाई स्कूल में 25 पौधे लगाये गये।

**नोएडा अणुव्रत समिति** ने एमिटी यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नोएडा में ईको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाया। पर्यावरण ब्रोशर का अनावरण

एमिटी यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति डॉ. अजय राणा ने किया। इस अवसर पर पौधे लगाने के साथ ही अणुव्रत वाटिका बनाने का आगाज भी किया गया। समिति की उपाध्यक्ष ने ईको फ्रेंडली फेस्टिवल मनाने का संकल्प दिलवाया।

**फरीदाबाद अणुव्रत समिति** और सेवा भारती, फरीदाबाद ने विशेष कार्यक्रम आयोजित किया। इसके तहत संत कबीर गीता मंदिर स्कूल के बच्चों ने प्लास्टिक की पन्नियां इकट्ठी कर उन्हें

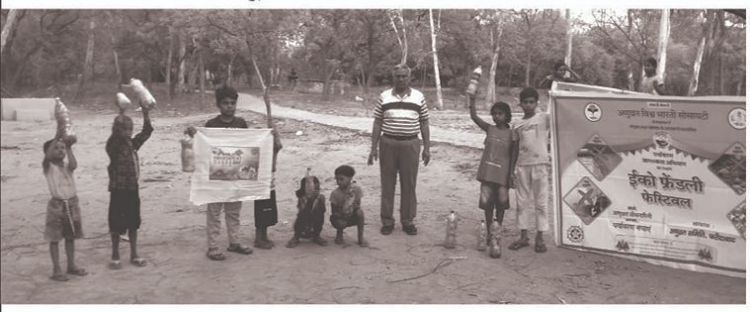


बोतलों में भरकर जागरुकता फैलायी। सब्जी मंडी, प्रेस कॉलोनी और सारण चौक में प्लास्टिक की पन्नियों के उपयोग को हतोत्साहित करते हुए पर्यावरण जागरुकता फैलायी गयी। ब्लू वर्ल्ड सीनियर सेकंडरी स्कूल और सेवा भारती हरियाणा प्रदेश की बैग लाइब्रेरी द्वारा ईको फ्रेंडली थैले वितरित किये गये। सब्जी मंडी से शिव मंदिर तक अणुव्रत गीत के साथ पदयात्रा की गयी और ईको फ्रेंडली बैग वितरित किये गये।

**शिवपुरी अणुव्रत मंच** ने उपस्थित जनसमुदाय और बच्चों को धरती माँ को प्यार करने और उसके जैविक और अजैविक घटकों को अपना परिवार मानने का संकल्प दिलाया। मंच ने वात्सल्य गृह के बच्चों के साथ मिट्टी के बीज बॉल बनवा कर तथा रिसाइकल्ड सीड पेपर्स को प्लांट करवाने के साथ ही बच्चों से पर्यावरण संरक्षण पर चित्रकारी करवायी।

**मंडी गोविंदगढ़ अणुव्रत समिति** की ओर से तहसील परिसर में विभिन्न तरह के पौधे लगाये गये। इसके साथ ही तहसील परिसर में लगे करीब तीन सौ पेड़-पौधों को बचाने के लिए रोजाना सुबह 1 घंटा पानी देने का संकल्प लिया गया।

**डाबड़ी अणुव्रत समिति** की ओर से अग्रवाल धर्मशाला के अग्रसेन पार्क स्थित अणुव्रत वाटिका में आयोजित कार्यक्रम में बच्चों ने परिंदों के लिए विभिन्न पात्रों में पीने का पानी रखा।

**दिवेर अणुव्रत समिति** ने बालिका स्कूल में पौधरोपण कार्यक्रम रखा। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष ने पर्यावरण जागरुकता पर विचार रखे। **बज्जू अणुव्रत मंच** की ओर से आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने उत्साह के साथ पौधरोपण किया और बच्चों को प्रशिक्षण भी दिया।

# ईको फ्रेंडली कैरी बैग वितरण की पहल

## अनेक अणुव्रत समितियों और मंचों ने बढ़ाये हाथ

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से विश्व पर्यावरण दिवस पर 5 जून को ईको फ्रेंडली कैरी बैग्स वितरण करने की पहल की गयी। अणुविभा का लक्ष्य पर्यावरण के प्रति जागरुकता को बढ़ाना है। इसके लिए धरती के संसाधनों का उचित उपयोग और वनों का संरक्षण आवश्यक है। अणुव्रत का उद्देश्य भी इसी चेतना को जागृत करना है, जिससे पर्यावरण की रक्षा हो सके। इसी कड़ी में ईको फ्रेंडली कैरी बैग के विचार को आत्मसात करने का आह्वान किया गया।

निम्नलिखित अणुव्रत समितियों व उनसे जुड़े कार्यकर्ताओं ने ईको फ्रेंडली कैरी बैग वितरण में अपनी भागीदारी निभायी -

**अणुव्रत समिति**

| | |
|---|---|
| जयपुर | खारूपेटिया |
| दिनहाटा | नोएडा |
| फारबिसगंज | कटक |
| नाथद्वारा | इस्लामपुर |
| मालेगांव | तेजपुर |
| बेंगलुरु | अहमदाबाद |
| बारडोली | वापी |
| इंदौर | अम्बिकापुर |
| बालोतरा | जसोल |
| छापर | चूरू |

## इसलिए जरूरी है ईको फ्रेंडली बैग

- नॉन बायोडिग्रेडिबल थैलियां पर्यावरण के अनुकूल नहीं होती हैं। इन थैलियों को विघटित होने में सैकड़ों वर्ष लग सकते हैं। यदि नॉन बायोडिग्रेडिबल थैलियों का इस्तेमाल जारी रहा तो इसके चलते पूरा ईको सिस्टम बिगड़ जाएगा। ऐसा समय आएगा जब धरती अन्न उत्पादन के योग्य नहीं रहेगी। भुखमरी की स्थिति पैदा हो सकती है। साथ ही इससे जुड़ी अन्य आपदाएं तक झेलनी पड़ सकती हैं।

- वहीं, ईको फ्रेंडली बैग बायोडिग्रेडिबल यानी पर्यावरण के अनुकूल हैं क्योंकि ये प्रदूषण और पर्यावरणीय क्षरण में योगदान नहीं करते हैं। ईको फ्रेंडली थैलियों को आसानी से पुनर्नवीनीकरण किया जा सकता है या खाद बनायी जा सकती है।

# अणुव्रत संरक्षक

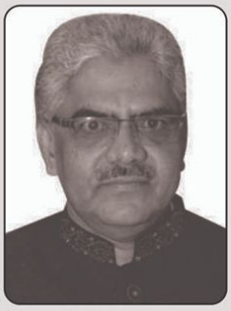

**श्री ललित माण्डोत**
बरार-बेंगलुरु

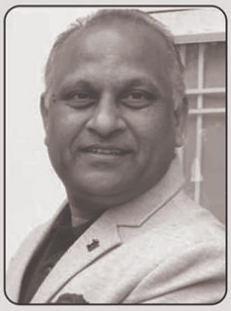

**श्री प्रदीप नाहटा**
कालु-जयपुर

**श्री शांतिलाल पितलिया**
पीपली नगर-बेंगलुरु

**अणुविभा के अर्थ संबल अभियान में आपने 1 लाख रुपये अनुदान की सहभागिता कर अणुव्रत आंदोलन को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।**

**अणुविभा परिवार आपका हृदय से आभारी है।**

# सिरकाली और रायपुर में
# जीवन विज्ञान शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यशाला

■■ संयोजक रमेश पटावरी की रिपोर्ट ■■

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के जीवन विज्ञान विभाग द्वारा तमिलनाडु के सिरकाली स्थित शुभम विद्या मंदिर परिसर में 27 से 29 मई तक जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गयी। उद्घाटन सत्र में जीवन विज्ञान के राष्ट्रीय प्रशिक्षण प्रभारी एवं मुख्य प्रशिक्षक राकेश खटेड़ ने कहा कि ध्वनि, संकल्प, सम्यक् आसन, सम्यक् श्वास, कायोत्सर्ग, ध्यान, शरीर विज्ञान, शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक स्वास्थ्य, मूल्यबोध और अहिंसा के माध्यम से प्रशिक्षित कर जीवन को सुखमय और कलापूर्ण बनाने का विज्ञान है - जीवन विज्ञान। यह विद्यार्थी के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। तीन दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान पावर प्वाइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से जीवन विज्ञान की सैद्धान्तिक जानकारी देने के साथ-साथ कायोत्सर्ग, दीर्घश्वास प्रेक्षा, चैतन्य केन्द्र प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा, आसन, प्राणायाम आदि का प्रायोगिक अभ्यास करवाया गया। प्रायोगिक प्रशिक्षण में चेन्नई से समागत प्रशिक्षक हरीश भण्डारी का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

समापन समारोह में जीवन विज्ञान के राष्ट्रीय संयोजक रमेश पटावरी ने कहा कि जब तक सीखे हुए ज्ञान को आचरण में नहीं उतारा जाता, तब तक उसका पूरा लाभ नहीं प्राप्त किया जा सकता। आप शिक्षकों ने विगत तीन दिनों में जो ज्ञान अर्जित किया है, उसे

स्वयं के जीवन में उतारते हुए विद्यार्थियों तक पहुँचाना है। विद्यालय संचालक ज्ञानचंद आंचलिया ने जीवन विज्ञान टीम को शॉल, श्रीफल और स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। उन्होंने

बताया कि विद्यालय में जीवन विज्ञान को पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर अध्ययन-अध्यापन का अंग बनाया जाएगा। विद्यालय प्राचार्या के. विद्या ने आभार ज्ञापित किया।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के जीवन विज्ञान विभाग के तत्त्वावधान में **अणुव्रत समिति रायपुर** द्वारा सदर बाजार स्थित तेरापंथ अमोलक भवन में 6 से 8 जून तक जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का आयोजन जतनदेवी डागा हायर सैकण्डरी स्कूल, रायपुर के प्रबन्धक मनीष डागा के विशेष अनुरोध पर हुआ जिसमें शिक्षकों ने जीवन विज्ञान का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। विगत शैक्षणिक सत्र से विद्यालय में जीवन विज्ञान का अध्ययन-अध्यापन करवाया जा रहा है।

उद्घाटन सत्र में जीवन विज्ञान विभाग की उच्च शिक्षा प्रबंधन प्रभारी एवं कार्यशाला की मुख्य प्रशिक्षिका डॉ. हंसा संचेती ने कहा कि जीवन विज्ञान के आध्यात्मिक-वैज्ञानिक प्रयोग इतने सरल एवं प्रभावकारी हैं कि शिक्षक-शिक्षार्थी सहज ही सीखकर इनसे लाभान्वित हो सकते हैं। इससे पहले अणुव्रत समिति के अध्यक्ष कनक छाजेड़ ने प्रशिक्षकों एवं प्रशिक्षणार्थियों का स्वागत किया। तीन दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान पावर-प्वाइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से जीवन विज्ञान की सैद्धान्तिक जानकारी के साथ-साथ प्रायोगिक अभ्यास करवाया गया। सहयोगी प्रशिक्षक के रूप में सुरेन्द्र ओसवाल, ललिता धारीवाल, मीना गांधी एवं कमल बैंगाणी (राष्ट्रीय सह-संयोजक जीवन विज्ञान) का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

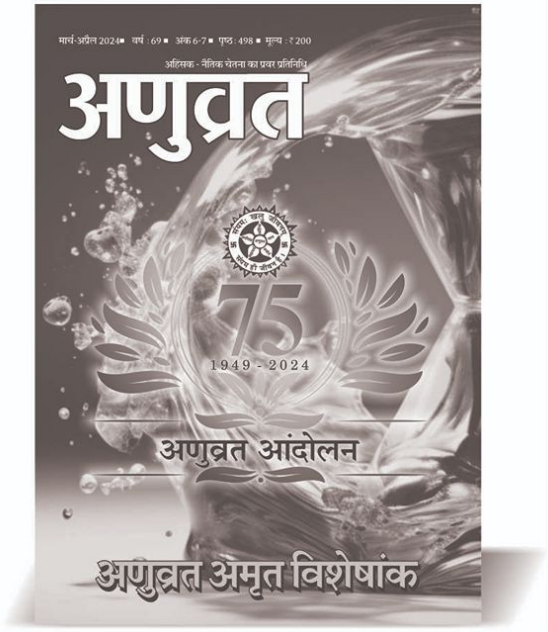


# अणुव्रत अमृत विशेषांक

# पाठक परख

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्षों की सफल सम्पूर्ति पर वर्ष पर्यन्त मनाये गये 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' के क्रम में वैविध्यपूर्ण प्रकल्पों की एक वृहद् शृंखला आयोजित हुई। इस शृंखला की अंतिम कड़ी के रूप में प्रस्तुत हुआ - 'अणुव्रत अमृत विशेषांक'। हमारा विनम्र प्रयास रहा कि इस विशेषांक को पठनीय, मननीय और संग्रहणीय बनाया जा सके।

'अणुव्रत अमृत विशेषांक' के संदर्भ में हमें निरंतर संवाद और सम्मतियाँ प्राप्त हो रही हैं। कुछ संवाद तो इतने विस्तृत हैं कि स्थानाभाव के कारण उन्हें जस का तस प्रकाशित करना संभव नहीं हो पा रहा है। आप सब के स्नेह व समर्थन के हम हृदय से आभारी हैं। 'पाठक परख' के अंतर्गत आगामी अंकों में आप कुछ और प्रबुद्ध पाठकों के मूल्यवान विचारों से परिचित हो सकेंगे।

## संग्रहणीय एवं अमूल्य कृति

हर काल में परिवर्तन हुआ है। क्रमबद्ध परिवर्तन का ही परिणाम है कि मनुष्य ने पाषाणकाल से वर्तमान वैज्ञानिक युग तक की यात्रा की और स्वस्थ सामाजिक ढांचे का धीरे-धीरे विकास हुआ। सामाजिक ताने-बाने का बदलना आसान नहीं, पर हर काल में कुछ व्यक्तित्व आगे आये तथा अपने भगीरथ प्रयासों से सामाजिक व्यवस्थाओं में बदलाव किया, जिसके परिणामस्वरूप समाज की गति-प्रगति का चक्र घूमा।

बीसवीं सदी के मध्य में जर्जर हुई सामाजिक व्यवस्थाओं पर आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से प्रहार किया और स्वतंत्र भारत के पुनर्निर्माण के साथ ही व्यक्ति निर्माण का क्रम प्रारंभ हुआ। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन के नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के साथ ही 'सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा' का सिंहनाद किया। इतिहास साक्षी है कि अणुव्रत के इस स्वर ने स्वतंत्र भारत के हजारों-हजारों व्यक्तियों को प्रभावित किया।

1 मार्च 1949 को अणुव्रत की यात्रा प्रारंभ हुई और आड़े-टेढ़े-मेढ़े रास्तों को पार करती हुई मार्च 2024 में 75वें वर्ष में पहुँची। विगत 75 वर्षों की व्यक्ति निर्माण की अणुव्रत यात्रा का दस्तावेज है 'अणुव्रत' मासिक का 'अणुव्रत अमृत विशेषांक'। 500 पृष्ठों, आर्ट पेपर एवं आकर्षक बहुरंगी मुद्रण कला में लिपटा यह विशेषांक अणुव्रत के अतीत, अणुव्रत के दर्शन और अणुव्रत की भावी संभावनाओं को टटोलता है तो भाई संचय जैन एवं मोहन मंगलम के संपादकीय कौशल का दिग्दर्शन भी कराता है।

अणुव्रत आंदोलन की अमृत यात्रा, अपने अनुभव, अपने विचार, अणुव्रत का अध्यात्म बल, अणुव्रत के पुरोधा विशेषांक के विशेष पठनीय भाग हैं जिन्हें बार-बार पढ़ने की इच्छा होती है। अणुव्रती कार्यकर्ताओं के अपने अनुभव और विचार अत्यंत प्रेरक हैं। विशेषांक में अणुव्रत के अतीत, वर्तमान और भविष्य के एक साथ दर्शन होते हैं। संपादक संचय जैन की परिकल्पना और सह संपादक मोहन मंगलम के श्रम की बूँदों से 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' अभिमंडित हुआ है। पाठक इस विशेषांक को पढ़ने का श्रम करेंगे तो संपादकद्वय के श्रम की बूँदें सार्थकता को प्राप्त होंगी।

'अणुव्रत अमृत विशेषांक' का एक-एक पृष्ठ पलटता हूँ तो अणुव्रत आंदोलन के इतिहास के 75 वर्षों का परिदृश्य मेरी आँखों के सामने उभर आता है और मैं अतीत में खो जाता हूँ। 'अणुव्रत' पत्रिका की लगभग सत्तर वर्षों की यात्रा में प्रकाशित वार्षिक विशेषांकों की ऐतिहासिक शृंखला में एक नाम और जुड़ा है 'अणुव्रत अमृत विशेषांक 2024'। इस संग्रहणीय एवं अमूल्य कृति के लिए मेरी बधाई स्वीकारें।

**-डॉ. महेन्द्र कर्णावट**, राजसमंद

## पठनीय और संग्रहणीय

'अणुव्रत' नयी दिल्ली से निकलने वाली एक वैचारिक पत्रिका है। अणुव्रत के महान चिंतन को समाज में प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से प्रकाशित की जा रही इस पत्रिका का 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' अणुव्रत आंदोलन की 75 वर्षों की यात्रा पर केंद्रित है। 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' में अणुव्रत की भावनाओं को स्वर देने वाले अनेक आलेख और गीत प्रकाशित

हुए हैं। इसकी अद्भुत नयनाभिराम सज्जा, आकर्षक कलेवर और समग्र सामग्री बेहद पठनीय अथ च संग्रहणीय भी है। सौभाग्य से मेरा भी एक लेख है इस विशेषांक में।

**-गिरीश पंकज,** रायपुर

## अणुव्रत की जय-यात्रा का इतिवृत्त

अहिंसक-नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि 'अणुव्रत' पत्रिका का 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' मिला। अणुव्रत दर्शन के उद्देश्यों की विशद् विवेचना सहित अणुव्रत आंदोलन के 75 वर्षों की सम्पूर्ति पर अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा प्रकाशित यह विशेषांक अपने आप में विरल और अनिर्वचनीय है। प्रस्तुत विशेषांक जिसमें इतनी महत्वपूर्ण सामग्री संयोजित है, 'अणुव्रतों' के प्रति जन-जन में आस्था को सुदृढ़ किये बिना नहीं रह सकेगा, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है। ...और फिर आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा, साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा तथा अन्य चारित्रात्माओं की आध्यात्मिक चेतना का सम्बल और आशीर्वाद साथ जो है।

विशेषांक के भाग 3 में शांतिप्रिय विश्व और अणुव्रत की अपरिहार्यता के संदर्भ में विद्वान लेखकों के विचार अणुव्रत के चिंतन को प्रासंगिक बना देते हैं जो निस्संदेह चरित्र निर्माण और जीवनशैली को संयमित करने में सहायक सिद्ध होंगे। 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' अपने आपमें एक ऐतिहासिक इतिवृत्त है जो पत्रकारिता जगत की थाती सिद्ध होगा।

आखिरी भाग में डॉ. महेन्द्र कर्णावट का 'अणुव्रत' पत्रिका की यात्रा संबंधी आलेख सिर्फ इतिहास ही नहीं, अणुव्रत आंदोलन की जय-यात्रा है। 'अणुव्रत आंदोलन की अमृत यात्रा : 75 वर्ष की 75 झलकियां' अणुव्रत आन्दोलन के उद्भव, संघर्ष और विस्तार की साक्षात बोलती तस्वीरें हैं, जो अमूल्य सामग्री को समेटे हुए थोड़े में बहुत कुछ कह रही हैं। प्रस्तुत विशेषांक के संयोजन में सुधी संपादक की गुणग्राहकता और श्रमनिष्ठा को सलाम और मंगलकामनाएं।

**-डॉ. कल्याण प्रसाद वर्मा,** जयपुर

## प्रखर सूर्य के समान

पत्रिकाओं की भीड़ में स्तरीय तथा ज्ञानवर्धक पत्रिकाओं को खोजना मुश्किल हो रहा है क्योंकि सस्ती मनोरंजक सामग्री और विज्ञापन के अतिरिक्त उन पत्रिकाओं का वर्ण्य विषय शून्य रहा करता है। 'अणुव्रत' पत्रिका मात्र पत्रिका नहीं बल्कि जीवन दर्शन है। इसमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को अनुप्राणित करने वाले आलेख सहज ही मिल जाते हैं। पर्यावरण, पारिस्थितिकी आदि की चिंता करके एक स्वस्थ मानव समाज के निर्माण में यह पत्रिका अपनी अनूठी भूमिका निभा रही है। 19वीं सदी के मध्य में हिंदी समालोचकों ने कहा था कि सभी पुरोधा मिलकर जितना जन जागरण नहीं कर पाये हैं, उतना अकेले प्रेमचंद की लेखनी ने किया।

आज मैं सगर्व कह सकता हूँ कि 'अणुव्रत' पत्रिका ने लोगों के आहार, विहार और व्यवहार में जितना परिष्कार किया है, उतना अन्य पत्रिकाओं ने नहीं। हमारे कई शिक्षक साथी हैं जो 'अणुव्रत' पत्रिका से बहुत प्रभावित हुए हैं। इसे पढ़ने के बाद उनकी जीवनशैली में बड़ा परिवर्तन आया है। इसके लिए वे 'अणुव्रत' पत्रिका को धन्यवाद देते हैं। पत्रिका के 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' का कलेवर, संयोजन, आलेखों का चयन, चित्रों का प्रस्तुतीकरण इतना सराहनीय है कि यह विशेषांक साहित्यिक धरोहर बन गया है।

आज के जीवन में राजनीति आवश्यक हो गयी है। इस महत्वपूर्ण विषय को भी यह विशेषांक आत्मसात किये हुए है। राजनेताओं के शुभ संदेश को भी स्थान देकर पत्रिका के कलेवर को सजाया गया है। राष्ट्रीय एकता, सद्भाव, नशामुक्ति पर संग्रहणीय आलेख विशेषांक में प्राण फूँकते हैं। विभिन्न विचारकों, चिन्तकों, शिक्षकों-शिक्षाविदों के आलेखों से विशेषांक समृद्ध है।

आचार्य तुलसी का प्रेरणा पाथेय तथा संस्थागत लेख बड़े सारगर्भित तथा उपनिषदीय वाङ्मय के समान हैं। डॉ. सोहनलाल गांधी, डॉ. कुसुम लुनिया, पंचशील जैन आदि के लेखों से पता चलता है कि अणुव्रत आंदोलन व्यक्ति की जीवन की दिशा तथा दशा बदल देने में सक्षम है। विशेषांक में कहानियों और कविताओं को भी स्थान दिया है जिनका संदेश प्रखर है। लघुकथाओं से पत्रिका की लोकप्रियता बढ़ती है। आज के व्यस्त जीवन में लघु कथाओं का बड़ा महत्व है। विशेषांक में इनकी सार्थक उपस्थिति नजर आती है। विविध अवसरों पर हुए आयोजनों के चित्रों में इतनी जीवन्तता है कि पाठक भी यह एहसास करता है कि वह उन अवसरों का साक्षी रहा है।

संपादन, प्रूफ रीडिंग इतना सटीक तथा पेपर की क्वालिटी इतनी अच्छी है कि यह विशेषांक विदेशी पत्रिकाओं से श्रेष्ठ बन पड़ा है। आधुनिक जीवनशैली जिस पर पाश्चात्य सभ्यता का रंग घना हो गया है, उस कुहासे को मिटाने के लिए यह विशेषांक प्रखर सूर्य के समान है।

**-सुशील तिवारी,** बहराइच

## एसडीएम ने कोटकपूरा अणुव्रत समिति के कार्यों को सराहा

**कोटकपूरा।** अणुव्रत समिति, कोटकपूरा द्वारा चलाये जा रहे चुनाव शुद्धि अभियान के तहत 27 मई को अणुव्रत समिति की टीम अणुविभा के राज्य प्रभारी और समिति अध्यक्ष राजन कुमार

जैन के नेतृत्व में कोटकपूरा स्वीप कार्यकर्ता उदय रणदेव के साथ एसडीएम कम ईआरओ वीरपाल कौर से मिली। समिति अध्यक्ष ने एसडीएम को बताया कि अभियान के तहत जगह-जगह पर पोस्टर एवं बैनर लगाये गये तथा अलग-अलग संस्थानों में स्वीप टीम के साथ वोटर जागरुकता कैंप का आयोजन किया गया। एसडीएम वीरपाल कौर ने समिति के कार्यकर्ताओं की सराहना की। उन्होंने अणुव्रत समिति के होर्डिंग को किसी भी सूरत में न उतरने देने का आदेश दिलवाया और अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान का बैनर भी लॉन्च किया।

अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान की संयोजिका गोपिका तिवाड़ी जैन ने एसडीएम को अणुव्रत पटका पहना कर चुनाव शुद्धि अभियान का ब्रोशर, अणुव्रत पत्रिका और अणुव्रत आचार संहिता की पुस्तिका भेंट की। टीम में अणुव्रत समिति से मंत्री बृजमोहन मित्तल, सदस्य प्रेम कुमार जोशी, प्रागराज आदि शामिल थे।

## चुनाव शुद्धि एवं मतदान जागरुकता अभियान

**दिल्ली।** अणुव्रत समिति ने एक माह से ज्यादा समय तक अलग -अलग पार्कों, प्रत्याशियों की जनसभाओं, मार्केट्स, मेट्रो स्टेशनों, सोसायटियों, संघीय संस्थाओं के कार्यक्रमों में चुनाव शुद्धि एवं मतदाता जागरुकता अभियान चलाया। इस दौरान समिति के कार्यकर्ताओं ने हजारों लोगों तक अणुव्रत का संदेश पहुँचाया तथा उनसे आवश्यक रूप से मताधिकार का प्रयोग करने की अपील की। इस अभियान में अणुविभा के प्रबंध न्यासी तेजकरण सुराणा, महामंत्री भीखम सुराणा, कार्यकारिणी सदस्य बाबूलाल दूगड़, संयोजक अणुव्रत पत्रिका प्रसार सुरेन्द्र नाहटा, दिल्ली अणुव्रत समिति के परामर्शक नत्थू राम जैन, निवर्तमान अध्यक्ष शान्तिलाल पटावरी, अध्यक्ष मनोज बरमेचा, मंत्री राजेश बैंगानी, सह मंत्री पवन गिड़िया, मनोज खटेड़, कोषाध्यक्ष विनोद

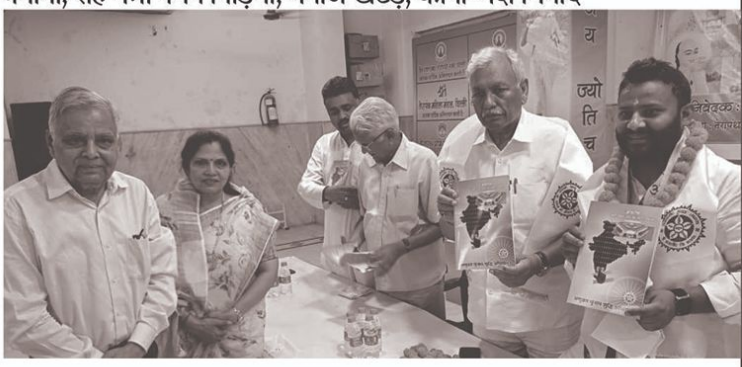

चोरड़िया, दिल्ली सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया, महामंत्री प्रमोद घोड़ावत समेत अनेक कार्यकर्ताओं तथा सामाजिक संस्थाओं का सहयोग रहा।

## विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर नुक्कड़ नाटक का मंचन

**गुवाहाटी।** अणुव्रत समिति ने विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर 31 मई को फटासिल हरिजन कॉलोनी स्थित महात्मा गांधी बुनियादी विद्यालय के डॉ. भीमराव अंबेडकर प्रतिमा स्थल पर नुक्कड़ नाटक का मंचन किया। मारवाड़ी युवा मंच गुवाहाटी

ग्रेटर शाखा के सहयोग से आयोजित नुक्कड़ नाटक 'नशामुक्त परिवेश, स्वस्थ होगा देश' में तंबाकू के सेवन से होने वाले भयंकर दुष्परिणामों को दर्शाया गया। साथ ही कॉलोनी के निवासियों को जागरुकतापूर्वक नशामुक्ति का संकल्प दिलाया गया। अवकाश जम्मड़ द्वारा निर्देशित व अभिनीत नुक्कड़ नाटक में मंजू देवी भंसाली, सरला बजाज, संगीता बैद, वृंदा व छवि बजाज ने भी प्रभावी भूमिका निभायी। इस नाटक में संदेश दिया गया कि नशे से मुक्त होना संभव है, बशर्ते व्यक्ति को सही मार्गदर्शन और समर्थन मिले। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बजरंग बैद, मंत्री संजय चौरड़िया, कार्यक्रम संयोजक संपत मिश्र, अणुविभा के असम एवं त्रिपुरा प्रभारी छत्तर सिंह चौरड़िया, मारवाड़ी युवा मंच

गुवाहाटी ग्रेटर शाखा के अध्यक्ष हितेश चोपड़ा, सचिव शेखर जाजोदिया, कार्यक्रम संयोजक विकास माहेश्वरी आदि उपस्थित थे। अणुव्रत समिति ने हरिजन पंचायती कमेटी फटासिल के अध्यक्ष माटा ईश्वा राव को अणुव्रत आचार संहिता पट्ट भेंट किया।

## अणुव्रत विद्यालय को वाटर फ्रीजर भेंट

**छापर।** अणुव्रत समिति के पूर्व अध्यक्ष प्रदीप सुराणा की प्रेरणा से बेंगलुरु प्रवासी प्रकाश स्नेह लता नाहटा द्वारा अणुव्रत विद्यालय को वाटर फ्रीजर मशीन प्रदान की गयी। छापर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष विनोद नाहटा की अध्यक्षता में आयोजित

कार्यक्रम में प्रदीप सुराणा ने वाटर फ्रीजर मशीन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त चैनरूप दायमा, शिक्षाविद् रेखाराम गोदारा, अणुव्रत विद्यालय के व्यवस्थापक शोपलाराम गोदारा ने भामाशाह परिवार एवं प्रेरक का आभार व्यक्त किया।

## रेलवे स्टेशनों पर अणुव्रत आचार संहिता पट्ट लगाने का अनुरोध

**मुम्बई।** अणुव्रत समिति के प्रतिनिधिमंडल ने मध्य रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी डॉ. स्वप्निल ध. नीला को अणुव्रत की जानकारी दी एवं दस स्टेशनों पर अणुव्रत आचार संहिता पट्ट लगाने के लिए अनुरोध किया। अणुव्रत दुपट्टा एवं साहित्य देकर

उनका सम्मान किया गया। प्रतिनिधिमंडल में अणुव्रत समिति मुंबई के अध्यक्ष रोशन मेहता, कोषाध्यक्ष ख्याली कोठारी, दक्षिण मुंबई संयोजक नरेंद्र मूणोत और देवेंद्र लोढ़ा शामिल थे।


अणुविभा

अणुव्रत

बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक

**सदस्यता फॉर्म**

मैं 'अणुव्रत'/'बच्चों का देश' पत्रिका का सदस्यता शुल्क नीचे दिए विवरण के अनुसार जमा करा रहा/रही हूँ -

| अवधि | 'अणुव्रत' | 'अणुव्रत' पत्रिका हेतु बैंक विवरण | 'बच्चों का देश' | 'बच्चों का देश' हेतु बैंक विवरण |
|---|---|---|---|---|
| 1 वर्ष | ₹ 750 | ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY<br>CANARA BANK<br>DDU MARG, NEW DELHI<br>A/c No. : 0158101120312<br>IFSC Code : CNRB0000158 | ₹ 350 | ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY<br>IDBI BANK<br>Branch Rajsamand<br>A/c No. : 104104000046914<br>IFSC Code : IBKL0000104 |
| 3 वर्ष | ₹ 1800 | | ₹ 900 | |
| 5 वर्ष | ₹ 3000 | | ₹ 1500 | |
| 10 वर्ष | ₹ 6000 | | ₹ 3000 | |
| 15 वर्ष ( योगक्षेमी ) | ₹ 15000 | | ₹ 7500 | |

नाम .....
पता .....
..... पिन
मोबाइल ..... ईमेल .....

यह फॉर्म मय सदस्यता शुल्क किसी एक पते पर भेजें -

'बच्चों का देश' पत्रिका
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी ( अणुविभा )
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, बॉक्स सं. 28, राजसमन्द - 313324 ( राजस्थान )
मोबाइल : 9414343100
bachchon _ka_desh@yahoo.co.in

'अणुव्रत' पत्रिका
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी ( अणुविभा )
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002
मोबाइल : 9116634512
anuvrat.patrika@anuvibha.org

**Services offered**

**Domestic Courier Cargo**
**Full Truck Movement**
**PTL**
**Intentional**

AGC International

Celebrating 33 YEARS 1989-2022

AGC

# AkashGanga®

*Integrity at work*

ISO 9001:2008 Certified Company

## AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom, Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur, New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

अणुविभा

# अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

द्वारा

अपने गौरवशाली प्रकाशन राष्ट्रीय बाल मासिक

## बच्चों का देश

की रजत जयंती के अवसर पर आयोजित

# बाल साहित्य समागम

बाल-साहित्य
सृजन विमर्श

स्कूली बच्चों
के साथ संवाद

बालोदय दीर्घा
अवलोकन

सम्मान
व स्मृति-चिन्ह

काव्य
गोष्ठी

16-18
अगस्त,
2024

आयोजन स्थल

## चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमंद

राजस्थान

**ANUVRAT**
**RNI No. 7013/57**
**July, 2024**

**Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2024-26**
**Licence No. U(C)-215/2024-26**
**Licenced to post without pre-payment**
**Date of Publication 25/06/2024**
**Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Advance Month**

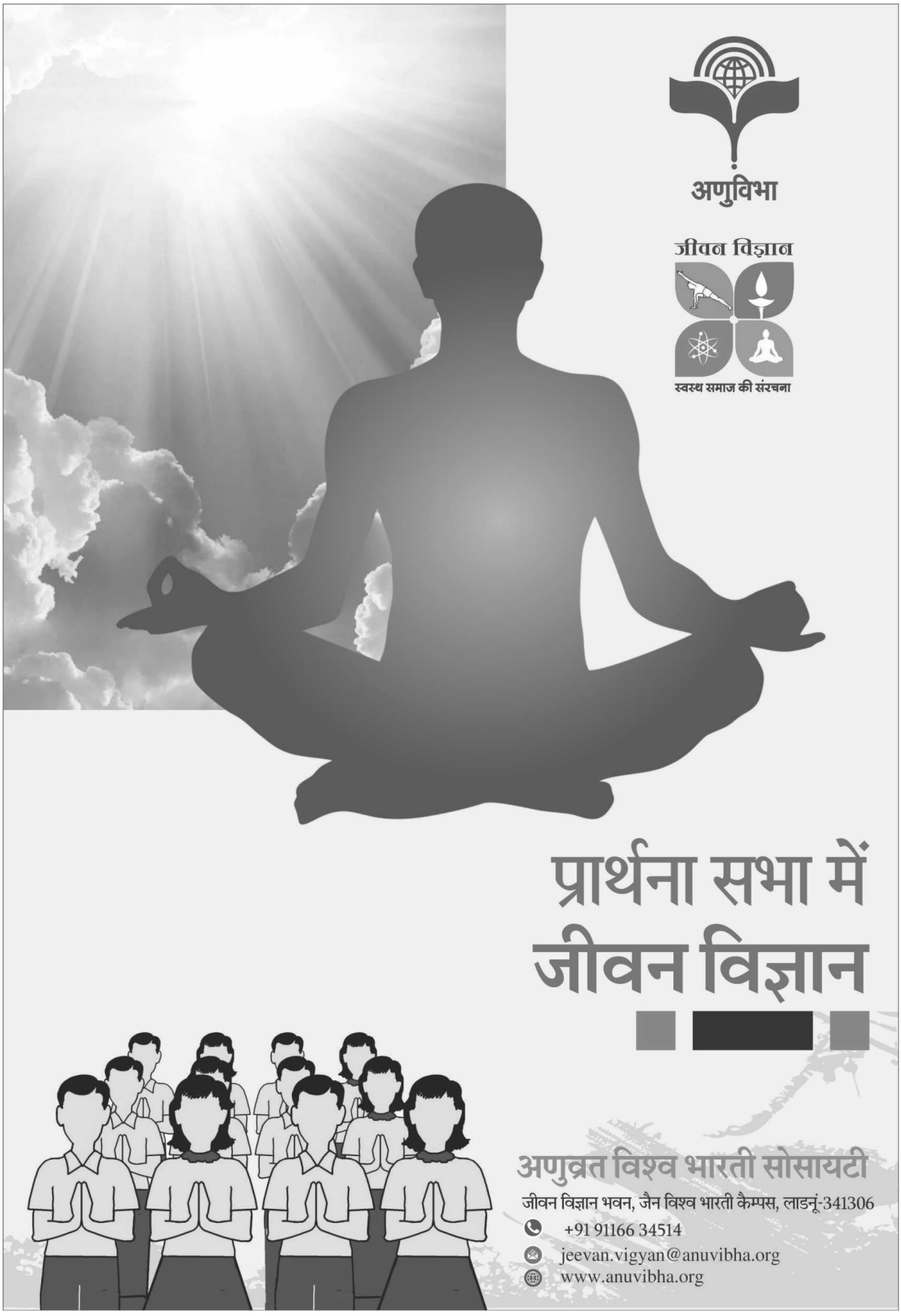


प्रकाशक एवं मुद्रक **संचय जैन** द्वारा स्वत्वाधिकारी **अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी** की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 के लिए एड किंग डी-55/बी, हर्ष नगर, हरि नगर, ओखला फेस-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - **संचय जैन**